ISSN-0971-8397

योजना

मई 2015 | विकास को समर्पित मासिक | ₹ 10

पर्यटन: उदीयमान उद्योग

अवसंरचना और पर्यटन विकास
मनोज दीक्षित

पर्यटक ई-वीजा: आसान हुई पर्यटकों की राह
नानू भसीन
नवनीत कौर

पर्यटन उद्यमिता: संभावित क्षेत्र
जी अंजनेय स्वामी

पर्यावरण, पारिस्थिकी और पर्यटन
धीप्रज्ञ द्विवेदी

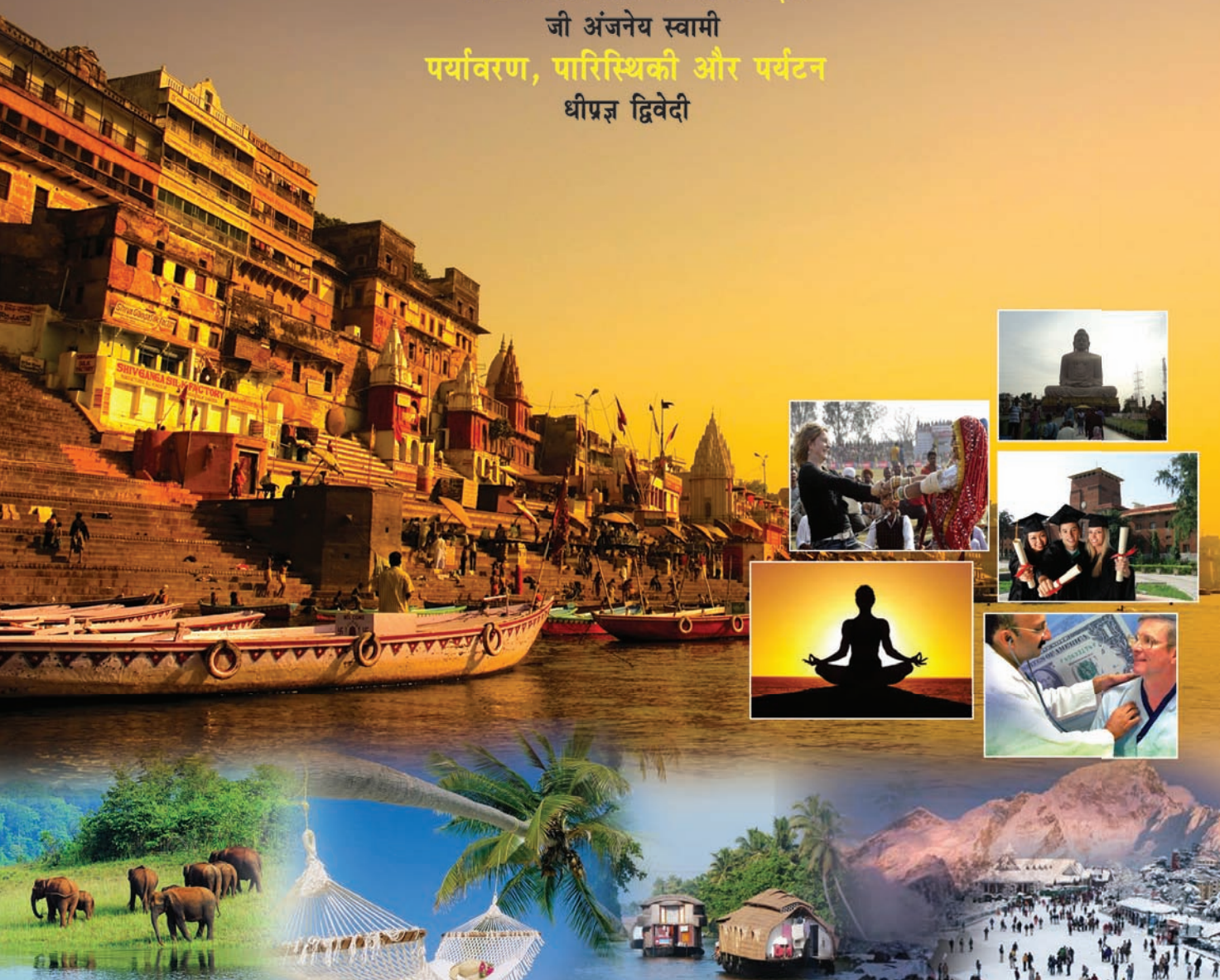

पर्यटनः नीतिगत पहल

उपलब्धियां

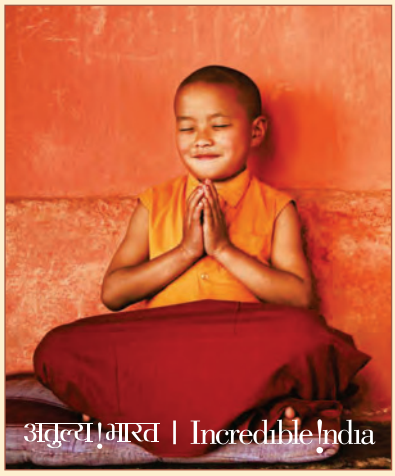

- 2014 में भारत में विदेशी पर्यटक आगमन (FTA) 10.6 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 77 लाख हो गया है।
- 2014 के दौरान पर्यटन से विदेशी मुद्रा आय 11.5 प्रतिशत वृद्धि के साथ रुपये 1,20,083 करोड़ रही।
- 44 देशों के लिए इलेक्ट्रॉनिक यात्रा स्वीकृति (ईटीए) स्कीम लागू की गई और इस सुविधा को 106 देशों में वित्तीय वर्ष 2015-16 में लागू किया जाएगा।
- अतुल्य भारत हेल्पलाइन- 1800-11-1363 का शुभारंभ।
- सभी धर्मों के तीर्थ स्थलों के सुधार और सौंदर्यीकरण के लिए दो नई योजनाएं–
  1. थीम आधारित पर्यटक परिपथों का एकीकृत अवसंरचना विकास–'स्वदेश दर्शन' और
  2. तीर्थ स्थल जीर्णोद्धार और आध्यात्मिक संवर्धन अभियान पर राष्ट्रीय मिशन (प्रसाद) लागू की गई।
  - स्वदेश दर्शन के अधीन प्रारंभ मं 5 परिपथों–पूर्वोत्तर परिपथ, बौद्ध परिपथ, तटीय परिपथ, हिमालय परिपथ और कृष्णा परिपथ की पहचान की गई। पूर्वोत्तर परिपथ, बौद्ध परिपथ और तटीय परिपथ, प्रत्येक में एक-एक परियोजना 2014-15 में मंजूर की गई।
  - प्रसाद योजना के तहत प्रारंभ में 12 शहरों वाराणसी, अमृतसर, अजमेर, मथुरा, गया, कांचीपुरम, वेलानकिनी, द्वाराका, पुरी, अमरावती, केदारनाथ और कामाख्या की पहचान की गई है। प्रसाद के अंतर्गत 2014-15 में 4 परियोजनाएं, गया और पुरी के लिए एक-एक और मथुरा के लिए दो परियोजनाएं मंजूर की गई। इसमें पुरी में आगामी नबकलेवर समारोह के लिए व पुरी में अवसंरचना (इंफ्रास्ट्रक्चर) विकास परियोजना के लिए 50 करोड़ रुपये की राशि की मंजूरी शामिल है।
- रेल मंत्रालय के साथ समान लागत साझेदारी (50:50) के आधार पर पर्यटक महत्व के 24 रेलवे स्टेशनों का उन्नयन कार्य कुल 240 करोड़ रुपये की लागत से शुरू किया गया।
- नेशनल एसोसिएशन ऑफ स्ट्रीट वेंडर्स ऑफ इंडिया (नासवी) के साथ भागीदारी में स्ट्रीट फूड वेंडर्स के उन्नयन और प्रमाणन के लिए 'हुनर जायका' योजना शुरू की गई।
- अनुमोदित टूर ऑपरेटरों, ट्रेवल एजेंटों और वर्गीकृत होटलों की सूची के लिए मोबाइल ऐप्स, होटल वर्गीकरण आवेदन पत्रों की ऑनलाइन ट्रैकिंग, यात्रा व्यवसाय सेवाप्रदाताओं का ऑनलाइन अनुमोदन, पर्यटन और आतिथ्य संस्थानों और हुनर से रोजगार तक सहित कार्यक्रम का ई-प्रबंधन, पर्यटन मंत्रालय की ई-बुक लॉन्च करना आदि ई-पहल भी किए गए हैं।

स्रोतः पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

योजना

वर्ष:59 • अंक 5 • मई 2015 • बैशाख-ज्येष्ठ, शक संवत 1937 • कुल पृष्ठ:60

प्रधान संपादक
दीपिका कच्छल

संपादक
जय सिंह
ऋतेश पाठक

संपादकीय कार्यालय
648, सूचना भवन, सीजीओ परिसर,
लोधी रोड, नयी दिल्ली-110 003
दूरभाष: 24365920
ई-मेल: yojanahindi@gmail.com
वेबसाइट: www.yojana.gov.in
www.publicationsdivision.nic.in
http://www.facebook.com/yojanahindi

संयुक्त निदेशक (उत्पादन)
वी. के. मीणा

व्यापार व्यवस्थापक (प्रसार एवं विज्ञापन)
सूर्यकांत शर्मा

दूरभाष: 26100207
फैक्स: 26175516
ई-मेल: pdjucir@gmail.com

आवरण: जी. पी. धोपे

इस अंक में

संपादकीय	–	7
अवसंरचना और पर्यटन विकास	मनोज दीक्षित	9
पर्यटक ई-वीजा: आसान हुई पर्यटकों की राह	नानू भसीन, नवनीत कौर	17
भारत में पर्यटन विकास: चुनौतियां व संभावनाएं	कंचन शर्मा	21
पर्यटन उद्यमिता: संभावित क्षेत्र	जी. अंजनेय स्वामी	25
पर्यावरण, पारिस्थितिकी और पर्यटन	धीप्रज्ञ द्विवेदी	29
क्या आप जानते हैं?	–	34
बौद्ध सर्किट बदल सकता है यूपी-बिहार की तस्वीर	उमेश चतुर्वेदी, सौम्या	35
पर्यटन क्षेत्र से जुड़े सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दे	विकास दिव्यकीर्ति	39
यात्राएं जिन्होंने भारत को बदला	संजय श्रीवास्तव	42
भारत में शैक्षिक पर्यटन: अतीत, वर्तमान और भविष्य	अर्चना कुमारी, दिव्यांशु कुमार	45
स्वास्थ पर्यटन-नया आयाम	शालिनी अवस्थी	49
ग्राम्य पर्यटन के खुलते दरवाजे	गिरीन्द्र नाथ झा	52
लगातार बढ़ता धार्मिक पर्यटन	रत्ना श्रीवास्तव	55
विकास पथ	–	58

योजना हिंदी के अतिरिक्त असमिया, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तेलुगु तथा उर्दू भाषाओं में भी प्रकाशित की जाती है। पत्रिका मंगवाने हेतु, नयी सदस्यता, नवीकरण, पुराने अंकों की प्राप्ति एवं एजेंसी आदि के लिए मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर 'अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग' के नाम से बनवा कर निम्न पते पर भेजें। व्यापार व्यवस्थापक (प्रसार एवं विज्ञापन), प्रकाशन विभाग, पूर्वी खंड IV, तल VII, आर. के. पुरम, नयी दिल्ली-66 दूरभाष: 26100207, 26105590

सदस्य बनने अथवा पत्रिका मंगाने के लिए आप हमारे निम्नलिखित बिक्री केंद्रों पर भी संपर्क कर सकते हैं: सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नयी दिल्ली-110003 (दूरभाष: 24367260, 5610), हाल सं. 196, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054 (दूरभाष: 23890205) *701, सी- विंग, सातवीं मंजिल, केंद्रीय सदन, बेलापुर, नवी मुंबई-400614 (दूरभाष: 27570686) *8, एसप्लानेड ईस्ट, कोलकाता-700069 (दूरभाष: 22488030) *'ए' विंग, राजाजी भवन, बंसल नगर, चेन्नई-600090 (दूरभाष: 24917673) *प्रेस रोड नयी गवर्नमेंट प्रेस के निकट, तिरुअनंतपुरम-695001 (दूरभाष: 2330650) *ब्लॉक सं-4, पहला तल, गृहकल्प, एमजी रोड, नामपल्ली, हैदराबाद-500001 (दूरभाष: 24605383) *फर्स्ट फ्लोर, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला, बंगलुरु-560034 (दूरभाष: 25537244) *बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ, पटना-800004 (दूरभाष: 2683407) *हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, सेक्टर-एच, अलीगंज, लखनऊ-226024 (दूरभाष: 2225455) *अंबिका कॉम्प्लेक्स, फर्स्ट फ्लोर, अहमदाबाद-380007 (दूरभाष: 26588669) के. के. बी. रोड, नयी कॉलोनी, कमान संख्या-7, चेनीकुटी, गुवाहाटी-781003 (दूरभाष: 2665090)

चंदे की दरें : वार्षिक: ₹ 100 द्विवार्षिक: ₹ 180, त्रैवार्षिक: ₹ 250, विदेशों में वार्षिक दरें: पड़ोसी देश: ₹ 530, यूरोपीय एवं अन्य देश: ₹ 730

योजना का लक्ष्य देश के आर्थिक विकास से संबंधित मुद्दों का सरकारी नीतियों के व्यापक संदर्भ में गहराई से विश्लेषण कर इन पर विमर्श के लिए एक जीवंत मंच उपलब्ध कराना है। योजना में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। जरूरी नहीं कि ये लेखक भारत सरकार के जिन मंत्रालयों, विभागों अथवा संगठनों से संबद्ध हैं, उनका भी यही दृष्टिकोण हो। पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापनों की विषयवस्तु के लिए योजना उत्तरदायी नहीं हैं।

आपकी राय

डिजिटल इंडिया की शानदार झलक

बजट पर केंद्रित योजना का मार्च का अंक पढ़ा। अंक के सभी लेख सारगर्भित, ज्ञानोपयोगी लगे। मैं विगत एक वर्ष से योजना की नियमित पाठक हूं और भारतीय सिविल सेवा की तैयारी कर रही हूं। इस पत्रिका के माध्यम से ही मैं अपनी विश्लेषण क्षमता, लेखन क्षमता को बढ़ा पाई हूं। यह पत्रिका प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए रामबाण है।

भारत सरकार ने 20 अगस्त, 2014 को एक लाख करोड़ रुपये मूल्य की विभिन्न परियोजनाओं वाले 'डिजिटल भारत' कार्यक्रम को शुरू किया है। इस कार्यक्रम के द्वारा सरकार लोगों को 'त्वरित सेवा' उपलब्ध कराना चाहती है। इस कार्यक्रम से भ्रष्टाचार में कमी आएगी क्योंकि सेवाओं के ऑनलाइन होने से व्यवस्था में पारदर्शिता आएगी। साथ ही प्रशासनिक क्षेत्र का स्वरूप भी निखरेगा। लोगों में सरकार के प्रति भरोसा बढ़ेगा। इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के अंतिम आदमी तक विकास की रोशनी को पहुंचाया जा सकेगा।

'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम राष्ट्रीय 'ई-गवर्नेंस' योजना का परिवर्तित रूप है। इसके द्वारा लोगों को आधुनिक तकनीकी व्यवस्था से जोड़ा जाएगा। इस कार्यक्रम के बेहतर क्रियान्वयन से अनेकों फायदे होंगे। प्रथम भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, अधिकारियों की अकर्मण्यता में कमी आएगी और जवाबदेही सुनिश्चित हो सकेगी, जिससे प्रशासनिक व्यवस्था के स्वरूप में निखार आएगा। दूसरा, सूचनाओं के संप्रेषण से लोगों में जागरूकता आएगी और लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग होंगे। तीसरा, पंचायतों को हाई-स्पीड इंटरनेट सेवा से जोड़ने से वे तकनीकी रूप से मजबूत होंगी और कार्यों का निष्पादन त्वरित रूप में कर सकेंगी।

साथ ही इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में चुनौतियां भी हैं। प्रथम, तकनीकी रूप से प्रशिक्षित कार्मिकों की कमी के कारण डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की रफ्तार बाधित हो सकती है। दूसरा, इस कार्यक्रम को लागू करने के लिए अधिक पैसों की जरूरत होगी। तीसरा, राष्ट्रीय सूचना केंद्र के पास इस कार्यक्रम की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता नहीं है। इसलिए उसकी क्षमता में वृद्धि करना आवश्यक है।

नेहा कुमारी
हाजीपुर, वैशाली, बिहार

दस्तावेजी अंक

इस बार योजना का मार्च अंक जो केंद्रीय बचत 2015-16 पर आधारित था, कुछ विशेष आलेखों के कारण वर्ष का यादगार अंक रहा। कठिन हालात में बेहतर बजट विश्लेषणात्मक लेख है। यद्यपि दूर से देखने पर यह बजट भी सामान्य बजट का ही रूप लगता है, लेकिन फिर भी इसमें लोक लुभावन बातों की अपेक्षा इसमें भविष्य के लिए कुछ कठोर कदम उठाए गए हैं जो निश्चय ही सरकार की दूरदृष्टि के परिचायक हैं।

इनके अलावा संपादकीय 'निवेश और विकास पर ध्यान' में भी बजट पर भी सरकार मंशा को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है। जो स्वागत योग्य है।

छैल बिहारी शर्मा 'इंद्र'
784/64, शिवसदन, छाता-281401, उ.प्र.

केंद्रीय बजट 2015-16

केंद्रीय बजट 2015-16 के अंक में संपादकीय में बजट का सारगर्भित विश्लेषण किया गया है। यह एक विडंबना ही है कि समाज का हर वर्ग बजट में लोकप्रिय घोषणाओं की ही अपेक्षा रखता हैं। किंतु यह नहीं सोचता कि विभिन्न खर्चों के लिए सरकार के पास पैसा कहां से आएगा।

नई पेंशन योजना में टैक्स कटौती सीमा को 1.5 लाख तक बढ़ाया जाना, स्वास्थ्य बीमा, प्रीमियम पर 25 हजार तक कर छूट काफी हद तक ठीक कही जा सकती है। जिनकी

आय ही वर्ष भर में 1.5 लाख रुपये नहीं है, उनके लिए विभिन्न सामाजिक सुरक्षा सरकार को करनी चाहिए ताकि वास्तविक अर्थों में समावेशी विकास किया जा सके।

विश्वनाथ सिंहारिया
10/829, मालवीय नगर,
जयपुर-302017

कौशल से ही होगा सबका विकास

पत्रिका 'योजना' का मार्च 2015 में लेखक स्वदेश सिंह के आलेख ''राष्ट्रीय कौशल विकास कार्यक्रम: भावी रूपरेखा'' ने मुझे विशेष प्रभावित किया। नई सरकार ने जब से घोषणा की कि कौशल विकास से रोजगार को सृजित किया जाएगा। तभी से बेरोजगारों में यह सवाल उठ रहा है कि कौशल विकास क्या है, इसका संचालन किस तरह से किया जाएगा तथा शिक्षित बेरोजगार को किस तरह से जोड़ा जाएगा। कौशल विकास तभी सफल होगा, जब जब कार्यक्रम मेक इन इंडिया कार्यक्रम के साथ तालमेल बैठाकर काम करेगा।

ग्रामीण युवाओं के रोजगार में बढ़ोतरी ही भारत के जनसांख्यिक लाभांश के ताला खोलने की कुंजी है। ग्रामीण कौशल योजना की शुरुआत की गई। वित्त मंत्री ने बजट भाषण से स्पष्ट किया कि भारत सरकार अब देश के विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कौशल विकास पर विचार कर रही है। कुशल भारत कार्यक्रम के साथ एक समन्वय बनाने की मांग की है, जिनमें डिजिटल भारत, स्मार्ट सिटी, स्वच्छ भारत और स्वच्छ गंगा में भी लाखों लोगों के कुशल हाथों की जरूरत है। प्रत्येक बच्चे की पांच किलोमीटर पहुंच के भीतर एक सीनियर माध्यमिक विद्यालय सुनिश्चित करने के लिए 80,000 से अधिक माध्यमिक विद्यालयों के उन्नयन की घोषणा की गई है और इसके अलावा सीनियर माध्यमिक स्तर तक 7,5000 से अधिक मध्य विद्यालय का उन्नयन किया जाएगा। देश में तैयार युवाओं के लिए ज्यादा से ज्यादा रोजगार सृजन करने के लिए एक राष्ट्रीय कौशल मिशन शुरू करने का सरकारी प्रस्ताव सही मायने में एक स्वागत योग्य कदम है।

अशोक कुमार ठाकुर
मालीटोल, अदलपुर, दरभंगा (बिहार)

शिक्षा बजट की उत्तम प्रस्तुति

योजना के मार्च 2015 अंक में प्रकाशित आलेख 'आम बजट में शिक्षा पर विशेष जोर' मुझे बहुत अच्छा तथा लाभदायक लगा। हालांकि, शिक्षा किसी भी लोक कल्याणकारी सरकार के सबसे बड़े दायित्वों में शामिल है। समाज के विकास में शिक्षा का सबसे महतवपूर्ण स्थान है। आज समय ऐसा आ गया है कि बगैर उच्च शिक्षा प्राप्त किए कहीं गुजारा नहीं हो पाता है। जैसे कि अभी हाल ही में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफंस कॉलेज में दीक्षांत समारोह में शिक्षा से जुड़ी बहुत बातें कहीं। सच में, ज्ञान, अच्छा आचरण और तकनीकी दक्षता के बिना शिक्षा अधूरी है।

यह बहुत अच्छी बात है कि आम बजट में शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया। इस बजट में सरकार ने शिक्षा में लैंगिक विषमता को खत्म करते हुए लड़कियों के लिए शिक्षा पर पूर्ण ध्यान केंद्रित किया। सबसे अच्छी बात यह है कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के लिए 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इस बजट मं यह भी बताया गया है कि गरीब और मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों को अपनी पसंद के क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से छात्र वित्तीय सहायता प्राधिकरण बनाया गया है जो पूरी तरह से सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित है।

14 वर्ष तक के बच्चों के लिए सर्वशिक्षा का प्रावधान पहले ही लागू है जिससे हर गरीब तथा मध्यम वर्ग के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर सके। मार्च माह का यह आलेख मुझे और ज्यादा अच्छा इसलिए लगा क्योंकि इसमें बताया गया कि सरकार ने इस बजट में अल्पसंख्यक युवकों को समर्थ बनाने के लिए 'नई मंजिल' नामक योजना शुरू की है तथा इस योजना में उन लोगों को शामिल किया जाएगा जिनके पास स्कूल प्रमाणपत्र नहीं हैं, जिससे उन्हें रोजगार मिल सके। सरकार ने इस बात का भी ध्यान रखा है कि निम्न और मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने को ध्यान में रखकर एक सूचना प्रौद्योगिकी आधारित विद्यार्थी सहायता प्राधिकरण बनाया गया जो शिक्षा ऋण योजना पर भी नजर रखेगा। जिससे कि कोई भी छात्र पैसे के अभाव में उच्च शिक्षा से वंचित नहीं रहे।

रिंपी कुमारी
कालिंदी कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

योजना
आगामी अंक

जून 2015
वैकल्पिक चिकित्सा

दृष्टि The Vision

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

सिविल सेवा परीक्षा के विगत कुछ वर्षों के परिणामों की प्रकृति को देखते हुए यह निष्कर्ष उभरकर सामने आया है कि सफल होने के लिए सामान्य अध्ययन, सीसैट, निबंध, वैकल्पिक विषय एवं साक्षात्कार सभी पर समान रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

सामान्य अध्ययन

(फाउंडेशन कोर्स– 2016)

- अकादमिक उत्कृष्टता के 15 वर्ष।
- बदलते पाठ्यक्रम एवं परीक्षा प्रवृत्ति के अनुरूप व्यापक शिक्षण पद्धति।
- सामान्य अध्ययन (प्रश्नपत्र- **I, II, III,** एवं **IV**), निबंध, सीसैट एवं साक्षात्कार के लिए प्रतिबद्ध फैकल्टी एवं अकादमिक स्टाफ।
- सामान्य अध्ययन के नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप सभी विषयों में समान अकादमिक गुणवत्ता प्रदान करने वाला एकमात्र संस्थान।
- सम्पूर्ण तैयारी के दौरान समुचित मूल्यांकन एवं फीडबैक **(Feedback)** के साथ उत्तर लेखन सुविधा।
- अद्यतन पाठ्य सामग्री और **Drishtiias.com** के जरिये बेहतर वेब सहयोग।

निःशुल्क कार्यशालाः 17 मई, 3:00 बजे

CSAT
120 days Programme

Test Series
(Mains/PT) For IAS-2015
General Studies & CSAT
Online Test Series also available

इतिहास
द्वारा- अखिल मूर्ति

भूगोल
द्वारा- कुमार गौरव

नोटः संपूर्ण पाठ्यक्रम (Complete syllabus) में एक साथ प्रवेश लेने वाले प्रथम 1000 विद्यार्थियों के लिए शुल्क में विशेष छूट।★

★ Conditions apply

दिल्ली के अतिरिक्त हमारी कहीं कोई शाखा नहीं है। कुछ विद्यार्थियों ने हमें बताया है कि इंदौर आदि शहरों में कुछ संस्थाएँ हमारे नाम का अवैध प्रयोग कर रही हैं। विद्यार्थियों से निवेदन है कि उनके झाँसे में न आएँ।

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-9 Ph.: 011-47532596, (+91)8130392354,56,57,58,59
E-mail:info@drishtiias.com, drishtiacademy@gmail.com * Website: www.drishtiias.com

YH-18/2015

संपादकीय

सैर कर दुनिया की गाफिल...

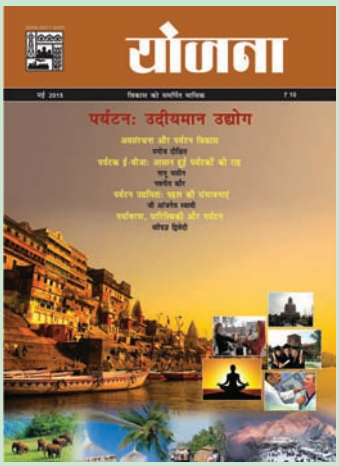

यह दुनिया एक किताब जैसी है और जो लोग जीवन में यात्रा नहीं करते वे इसका सिर्फ एक पन्ना पढ़ पाते हैं। संत ऑगस्टीन का यह कथन वाकई पर्यटन की आत्मा को दर्शाता है और एक गतिशील देश के रूप में भारत दुनिया भर के पर्यटकों के लिए ढेर सारे अवसर प्रदान करता है। प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक इमारतें, विरासत स्थल, ढेर सारी विविधता, देश का रंग-बिरंगा स्वरूप, सतरंगी संस्कृति, खान-पान और धार्मिक स्थलों में पर्यटन की असीम संभावना छुपी हुई है। हाल के दशक में यहां तक कि शिक्षा और चिकित्सा पर्यटन, एडवेंचर, ग्रामीण और इको-टूरिज्म ने भी भारतीय पर्यटन उद्योग में नए आयाम जोड़े हैं। सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि घरेलू पर्यटन में भी कई गुणा इजाफा हुआ है। हाल में जो आंकड़े सामने आए हैं उससे पता चलता है कि पिछले दशक में भारत में पर्यटन क्षेत्र ने अद्भुत विकास किया है और सकल घरेलू उत्पाद में 6.6 फीसदी का योगदान दिया है।

दुनिया भर में पर्यटन रोजगार पैदा करने वाले एक क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, साथ ही यह विदेशी मुद्रा लाने वाले और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए भी जाना जाता है। विशिष्ट संस्कृति से परिपूर्ण, प्राकृतिक विविधता, विरासत, जीवंत बाज़ार और पारंपरिक आतिथ्य-भाव वाले भारत में पर्यटन की प्रचुर संभावनाएं हैं। जरूरत इस बात की है कि इसे उपभोक्ताओं तक कायदे से प्रस्तुत किया जाए। किसी भी देश में पर्यटन उद्योग वहां की सुविधाएं मसलन बुनियादी ढांचे, रहने-ठहरने की व्यवस्था, परिवहन और मनोरंजन के साधनों की प्रतिस्पर्धात्मकता पर विकास करती है और यहीं पर कई सारे भागीदारों की भूमिका सामने आती हैं जिसमें केंद्र सरकार, राज्य सरकार, उद्यमी और समाज का भी योगदान होता है।

सरकार की नीतियां किसी क्षेत्र के विकास का नक्शा तैयार करती है और विकास को क्रियान्वित करती है। वे दिशा-निर्देशों और रणनीतियों को सामने लाती हैं ताकि पर्यटकों की आमद बढ़ सके। वे संसाधनों और रोजगार के साधनों तक पहुंच भी मुहैया करवाती हैं। वर्तमान में सरकार का लक्ष्य ये है कि सन् 2016-17 के आखिर तक दुनिया भर में जितने पर्यटक आवाजाही करते हैं-उनमें से एक फीसदी हिस्सेदारी हासिल कर ली जाए। हाल में सरकार ने 44 देशों के पर्यटकों को वीजा ऑन अराइवल/आगमन पर वीजा) देने का निर्णय किया है जिसे बढ़ाकर 106 देश तक करने का लक्ष्य है। साथ ही टूर ऑपरेटरों और वर्गीकृत होटलों की सूची के लिए मोबाइल एप्स शुरू करना, पर्यटन और आतिथ्य केंद्रों का ई-प्रबंधन कुछ ऐसे ही सही दिशा में उठाए गए कदम हैं। थीम आधारित पर्यटन सर्किटों के लिए स्वदेश दर्शन की योजना, तीर्थस्थलों के विकास और आध्यात्मिक संवर्धन के लिए राष्ट्रीय मिशन (संक्षिप्त नाम-प्रसाद) और सभी मतों के धार्मिक केंद्रों पर आधारित पर्यटन स्थलों के विकास और सौंदर्यीकरण की योजना कुछ ऐसी ही योजनाएं हैं जिनका लक्ष्य सन् 2016-17 तक 145 करोड़ घरेलू पर्यटकों को पर्यटन स्थल तक लाना है। इसके अलावा हुनर से रोजगार तक और हुनर जायका जैसे कार्यक्रम रोजगार पैदा करने के उद्देश्य से शुरू किए जा रहे हैं।

हालांकि ये किसी उद्यमी की दृष्टि और उसकी प्रतिभा होती है कि वो इन योजनाओं और संसाधनों में आर्थिक मूल्य जोड़ पाता है और उसे समाज व अपने बेहतरी के लिए इस्तेमाल कर लेता है। अपनी सहायक क्रियाओं के साथ पर्यटन उद्योग व्यवसायिक गतिविधियों का विशाल संसार प्रस्तुत करती है जैसे परिवहन, आतिथ्य, भोजन, टूर पैकेज, मनोरंजन आदि-आदि। अभिनव और अपारंपरिक पर्यटन स्थलों की तलाश जो अभी तक नहीं खंगाले जा सके हैं-वो एक कामयाब उद्यमी के लिए और भारत में पर्यटन को टिकाऊ बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

भारत में अतिथि देवो भव की पुरानी धारणा रही है और पर्यटक को 'अतिथि' का दर्जा हासिल है। समाज मेजबान की भूमिका निभाता है। लेकिन आखिर में समाज सेवा प्रदाता और लाभ-हासिल करने वाले की भूमिका में ही रहता है। समाज के समावेशी विकास के लिए भी पर्यटन शानदार माध्यम हो सकता है और गरीबी उन्मूलन में सकारात्मक भूमिका अदा कर सकता है। पर्यटन उद्योग में ये क्षमता है कि वो लोगों के जीवन और सोचने की दृष्टि में बदलाव ला सकता है। लेकिन इसके लिए उद्योग को सतर्कतापूर्वक विकसित करने की आवश्यकता है और एक टिकाऊ रूप में विकसित करने की जरूरत है ताकि समाज और पर्यावरण को कोई क्षति न पहुंचे। सुरक्षा, कानून-व्यवस्था और पर्यटकों और मेजवान समुदाय की सकारात्मक मनोवृति वे महत्वपूर्ण कारक हैं जो इस उद्योग को एक रचनात्मक दिशा प्रदान करते हैं।

भारत में पर्यटन का भविष्य निश्चय ही उज्जवल है लेकिन हमें एक लंबी दूरी तय करनी है। महान दार्शनिक लाओत्से ने कहा था कि हजार मील की यात्रा सबसे पहले, पहले कदम से शुरू की जाती है और हाल में जो इस क्षेत्र में नीतियां शुरू की गई है, उससे वो सही कदम उठा लिया गया है। ❑

SPACE
SPACE IAS
Creating space for every one
उपेन्द्र अनमोल
(सुप्रसिद्ध प्रशासनिक मार्गदर्शक)

10 वर्षों में 519, UPSC में और 2000 से अधिक State PCS में चयनित अभ्यर्थियों का मार्गदर्शन

10 वर्षों से पूरे देश में GENERAL STUDIES में सबसे चर्चित रहे शिक्षक
उपेन्द्र अनमोल सर के नेतृत्व में

Batch Start - 20th April & 13th May

Course Offered :

- GS - Foundation
- GS - Crash Course
- GS - Module
- GS - Weekend Batch
- CSAT - Regular
- CSAT - Crash Course
- CSAT- Weekend Batch
- Test Series (Offline/Online)
- Essay Writing
- Drafting
- Interview

Optional Subjects
History ❖ Geography ❖ संस्कृत साहित्य

Distance Learning Course
GS / CSAT / Optional / Essay / Test Series

उपेन्द्र अनमोल सर
Economic Progress | Innovation Today
Science Focus | Female Today
जैसी भारत की Leading Magazines के संपादक हैं और सर के द्वारा लिखी गयी बुक
Inner Voice of Science and Technology
को Science & Technology and Earth Science Ministry के द्वारा Science की Reference Book माना गया है।

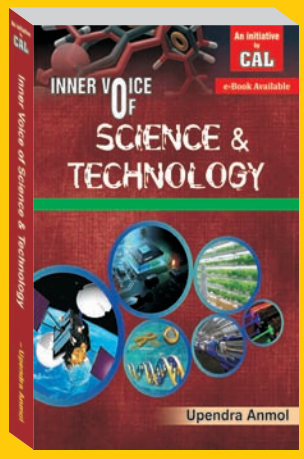

Office : 102, 1st Floor, Plot No A-25-26-27, Jyoti Bhawan, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Mob. : 011-27650611, 9136360007, 8802678660, 9871875230

YH-23/2015

अवसंरचना और पर्यटन विकास

मनोज दीक्षित

हमारे विशाल देश में पर्यटन के विकास व विस्तार की अपार संभावनाएं हैं। इस दिशा में सबसे बड़ी जरूरत है पर्यटन सेवाओं को उत्पाद के तौर पर मान्यता देने की और बेहतर पैकेजिंग के साथ उसे पेश करने की। परिवहन, आवासन, खान-पान और तमाम उद्योगों को पर्यटन उद्योग के विकास के साथ ही 'बाई-प्रोडक्ट' के तौर पर सफलता मिल जाएगा। भारत का पर्यटन क्षेत्र एक ऊंची छलांग लगाने के मुहाने पर खड़ा है। उपरोक्त तमाम सहउत्पाद अवसंरचना क्षेत्र से जुड़े हैं और अवसंरचना विकास पर मौजूदा सरकार का जोर भी है। ऐसे में बेहतर कल की उम्मीद तो की ही जा सकती है

पर्यटन एक जटिल उपभोक्ता अनुभव है जो उन प्रक्रियाओं से निर्धारित होता है जिसे पर्यटक बहुत सारी सेवाओं के दौरान अनुभव करता है (इसमें सूचना, संबंधित मूल्य, परिवहन, रहने की सुविधा) और आकर्षक सेवाएं शामिल हैं। (गुन, 1988). पर्यटन के अनुभव उन आर्थिक और राजनीतिक परिस्थियों और ढांचागत विशेषताओं से भी तय होते हैं जो पर्यटन स्थलों के चरित्र को प्रभावित करते हैं। मर्फी (2000) ने इस तरह के उत्पाद को आपूर्ति और मांग व्याख्या के रूप में विश्लेषित किया और बताया कि कैसे बहुत सारे कारक किसी पर्यटन स्थल के प्रति पर्यटकों के रवैयों को प्रभावित करते हैं।

किसी पर्यटन स्थल के अनुभवों को खुशनुमा बनाने में बुनियादी ढांचा का क्या महत्व है, इसे सबसे पहले स्मिथ (1994) ने रेखांकित किया। उसने कहा कि सेवाओं का बुनियादी ढांचा और पर्यटन स्थल के व्यापक आर्थिक वातावरण उसकी वास्तविक दशा के केंद्र में है। उसने इस बात पर भी जोर दिया कि किसी पर्यटन स्थल में स्तर, इस्तेमाल और बुनियादी ढ़ांचे और तकनीक की कमी साफ तौर पर दृष्टिगत होती है और वो किसी पर्यटक के पर्यटन अनुभव के लिए एक निर्णयकारी तत्व है। अन्य जिन लोगों ने उसके विचारों को समर्थन किया उनमें से थे-चॉय (1992), बुहारी (2000) और क्राउच और चिची (2000)। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि कुल मिलाकर किसी पर्यटक का किसी पर्यटन स्थल के बारे में दृष्टिकोण इस बात से बनता है कि स्थल की यात्रा करने के बाद उसके मन में वहां के बुनियादी ढांचे की कैसी छवि बनती है। और ऐसे में बुनियादी ढांचा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

एक आर्थिक उत्पाद के रूप में पर्यटन स्थल को तुलनात्मक और प्रतिस्पर्धात्मक संदर्भ में बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। आकृति-1 में, जो कि क्रॉउच और रिचे (1999) के पूर्वलेखन से लिया गया है, वह किसी पर्यटक स्थल की प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित करनेवाली वैश्विक तस्वीर को प्रस्तुत करता है। उस संदर्भ में लेखकों का कहना है कि कारक परिस्थितियां किसी पर्यटन स्थल के आकर्षण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

आकृति 1: पर्यटक स्थल अनुभव

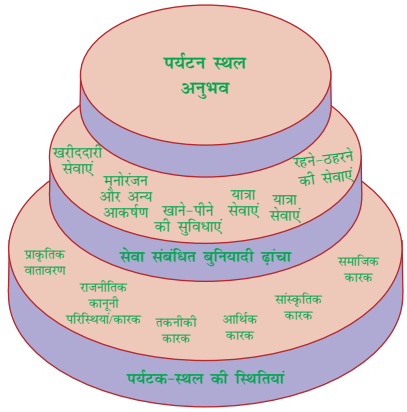

मुख्य आकर्षण और सहायक तत्वों के अधीन हरेक तत्व को वर्गीकृत किया गया है। दरअसल, पर्यटन स्थल की सामान्य बुनियादी ढांचा सेवा वर्ग में सबसे महत्वपूर्ण कारक है। पर्यटन सार्वजनिक सुविधाएं और बुनियादी ढ़ांचे पर अत्यधिक निर्भर करता है। बिना सड़क, एयरपोर्ट, बंदरगाह, बिजली, सीवेज और पेयजल सुविधा के पर्यटन की योजना कभी संभव नहीं हो सकती। इसलिए बुनियादी

लेखक लखनऊ विश्वविद्यालय के पर्यटन अध्ययन संस्थान में निदेशक हैं। वह पर्यटन विषय पर 10 से अधिक किताबें लिख चुके हैं और पर्यटन तथा स्वागत के क्षेत्र में अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित कर चुके हैं। वह पर्यटन अध्ययन से संबंधित कई संस्थानों के परामर्शदाता मंडल में शामिल हैं तथा चीन के चेंग्दुम स्थित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय से भी अनुबद्ध प्रोफेसर के तौर पर संबद्ध हैं। ईमेल: majojdixit23@gmail.com

ढांचा पर्यटन के लिए एक आवश्यक तत्व है और ऊपर के जो कारक हैं वो मूल तत्व हैं जो किसी पर्यटन केंद्र तक पर्यटकों को खींच लाते हैं। सामान्यत: बुनियादी ढ़ांचे को किसी महत्वपूर्ण पुस्तक में स्थान नहीं मिला है क्योंकि यह उम्मीद की जाती है कि वहां पर इसका होना अनिर्वाय है और इसे एक आकर्षण के रूप में प्रचारित नहीं किया जाता। स्मिथ (1904) और क्राउच और रिचे (1999) अपने लेखन में बुनियादी ढ़ांचे के महत्व को काफी जगह देते हैं और सैद्धांतिक तौर पर अच्छे तरीके से व्याख्यायित करते हैं।

भारत का बुनियादी ढ़ांचा और पर्यटन

पर्यटन का बुनियादी ढांचा परिवहन, समाजिक और पर्यावरण बुनियादी ढ़ांचे का आपूर्तिकर्ता है जो क्षेत्रीय स्तर पर एकाकार हो जाती है और किसी पर्यटन स्थल को एक ठोस रूप देती है। उसमें शामिल है-

- *परिवहन ढ़ांचा*–जो अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू पर्यटकों को पर्यटन स्थल तक पहुंचाते हैं और जिसमें एयरपोर्ट, प्रमुख सड़कें और रेल परिवहन शामिल है।
- *समाजिक बुनियादी ढ़ांचा*–इसमें होटल या विश्राम-गृह में कमरों की संख्या और अन्य ढ़ांचे शामिल हैं जैसे प्रदर्शनी, समारोह और अन्य सेवाएं जो पर्यटकों को लुभा सकती हैं। इसमें होटल, सभागार, स्टेडियम, गैलरी और अन्य पर्यटक दर्शनीय स्थल शामिल हैं।
- पर्यावरण बुनियादी ढांचा-जिसमें नेशनल पार्क, समुद्री पार्क, अभयारण्य और यात्रियों के लिए सुविधाएं शामिल हैं।
- समन्वयकारी ढांचा-जिसमें क्षेत्रीय, राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय पर्यटन संस्थाओं का एकत्रित जाल शामिल हैं जो इन पर्यटक स्थलों और केंद्रों को सही तरीके से दुनिया भर में प्रचारित करने का काम करते हैं।

पर्यटन बुनियादी ढ़ांचे और उसके उत्पाद की आपूर्ति श्रृंखला को आकृति एक में दर्शाया गया है। यह पर्यटन ढांचा प्राथमिक रूप से निजी पूंजी द्वारा तैयार किया जाता है जिसमें निजी क्षेत्र सकल पर्यटन निवेश का 78 फीसदी निवेश करता है। अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट और रहने-ठहरने की व्यवस्था निजी बुनियादी ढांचा है। रेल, सड़क और बंदरगाह आमतौर पर सार्वजनिक बुनियादी ढांचा होता है। सम्मेलन कक्ष या नेशनल पार्क जैसे बुनियादी ढ़ांचे सार्वजनिक ढ़ांचे होते हैं जो बाज़ार की असफलता या समाजिक-पर्यावरण संबंधी आपत्तियों की वजह से दिए जाते हैं। नीचे की तस्वीर में पर्यटन से संबंधित ढ़ांचे और पर्यटन उत्पाद और बुनियादी ढ़ांचे से हुई निर्यात आय के बारे में जानकारी दी गई है।

आकृति 2: पर्यटन आपूर्ति श्रृंखला

कोंडे नास्ट ने भारत को शीर्ष 10 पर्यटन के महत्व वाले देशों में शुमार किया है।

भारत शायद दुनिया का एकमात्र देश है जो अलग-अलग तरह की पर्यटन की संभावनाओं को प्रस्तुत करता है। इसमें पहाड़ी, जंगल, इतिहास, एडवेंचर, चिकित्सा पर्यटन (जिसमें आयुर्वेद और भारतीय चिकित्सा के अन्य रूप भी शामिल हैं), आध्यात्मिक पर्यटन, समुद्र तटीय पर्यटन (पूरव के देशों में भारत के पास सबसे लंबा समुद्र तट है) आदि-आदि।

ऐसा कहा जाता है कि भारत में जो पर्यटन स्थल हैं वो किसी भी अन्य देश के पर्यटन स्थल से ज्यादा विविध हैं। भारत के हरेक क्षेत्र में अपनी एक खास संस्कृति है, उत्सव हैं, वेशभूषा है और ऐतिहासिक धरोहर हैं।

सन् नब्बे के दशक की शुरुआत से भारतीय पर्यटन उद्योग इतना अच्छा नहीं था। हालांकि भारतीय अर्थव्यवस्था मंद होती रही है लेकिन यह अभी भी शेष दुनिया से ज्यादा तरक्की कर रही है। विकास दर 5 फीसदी से ज्यादा और आम जनता की आमदनी बढ़ने के साथ, बहुत सारे लोग देश के भीतर और बाहर भी यात्राओं पर जा रहे हैं। इससे पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिल रहा है। भारत में पर्यटन व्यवसाय में असीम संभावना है और आनेवाले वर्षों में पर्यटन हमारी अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

फिर भी कई बाधाओं के बावजूद, पर्यटन व्यवसाय हमारे देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने के मामले में दूसरा सबसे बड़ा स्रोत रहा है। सन् 2012 में पर्यटन ने सकल घरेलू उत्पाद में 6.6 फीसदी का योगदान दिया और 3 करोड़ 95 लाख रोजगार के अवसर पैदा किए। पिछले पांच वर्षों में घरेलू पर्यटकों की संख्या में 16 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है जबकि अगले दशक में इसमें 12 फीसदी के दर से वृद्धि की संभावना है। सन् 2013 के दौरान पर्यटन उद्योग ने अर्थव्यवस्था में 63,160 करोड़ रुपये का योगदान किया। हमारे देश में आनेवाले पयटकों में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या करीब 50 लाख है जबकि घरेलू पर्यटकों की संख्या 50 करोड़ से ऊपर है।

तालिका 1: भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन: 2001-13

वर्ष	भारत में विदेशी पर्यटक	वार्षिक वृद्धि (%)
2001	2537282	-4.2
2002	2384364	-6.0
2003	2726214	14.3
2004	3457477	26.8
2005	3918610	13.3
2006	4447167	13.5
2007	5081504	14.3
2008	5282603	4.0
2009	5167699	-2.2
2010	5775692	11.8
2011	6309222	9.2
2012	6577745	4.3
2013	6967601	5,9

स्रोत: आव्रजन ब्यूरो, भारत सरकार

विकास की प्रवृत्ति बताती है कि भारतीय पर्यटन व्यवसाय सिर्फ विदेशी पर्यटकों के आगमन पर आधारित नहीं है जैसा कि अक्सर देखा जाता है कि वैश्विक हलचलों या विचलनों से इस उद्योग में बाधाएं आती रहती हैं। हालांकि घरेलू पर्यटन एक खास तरीके से अपनी रफ्तार में बढ़ता जा रहा है। भारत में मेले और उत्सव एक सतत चलनेवाली घटना है। उत्तर भारत में होने वाले कुंभ और दक्षिण में होने वाले ओणम और महामस्तकाभिषेक हरेक साल ढ़ेर सारे पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं।

तालिका 2: भारत में घरेलू और विदेशी पर्यटक (2012-13)

क्रम संख्या	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	2012 (संख्या)		2013 (संख्या)		विकास दर (%)	
		घरेलू	विदेशी	घरेलू	विदेशी	घरेलू	विदेशी
1	अंडमान-निकोबार द्वीप समूह	238669	17538	243703	14742	2.10	-15.94
2	आंध्र प्रदेश	207217952	292822	152102150	223518	-26.60	-23.67
3	अरुणाचल प्रदेश	132243	5135	125461	10846	-5.13	111.22
4	असम	4511407	17543	4684527	17638	3.84	0.54
5	बिहार	21447099	1096933	21588306	765835	0.66	-30.18
6	चंडीगढ़	924589	34130	22801031	936922	1.33	17.56
7	छत्तीसगढ़	15036530	4172	22801031	3886	51.64	-6.86
8	दादर और नगर-हवेली	469213	1234	481618	1582	2.64	28.20
9	दमन और दीव	803963	4607	819947	4814	1.99	4.49
10	दिल्ली	18495139	2345980	20215187	2301395	9.30	-1.90
11	गोआ	2337499	450530	2629151	492322	12.48	9.28
12	गुजरात	24379023	174150	27412517	198773	12.44	14.14
13	हरयाणा	6799242	233002	7128027	228200	4.84	-2.06
14	हिमाचल प्रदेश	15646048	500284	14715586	414249	-5.95	-17.20
15	जम्मू-कश्मीर	12427122	78802	13642402	60845	9.78	-22.79
16	झारखंड	20421016	31909	20511160	45995	0.44	44.14
17	कर्नाटक	94052729	595359	98010140	636378	4.21	6.89
18	केरल	10076854	793696	10857811	858143	7.75	8.12
19	लक्षद्वीप	4417	580	4784	371	8.31	-36.03
20	मध्यप्रदेश	53197209	275930	63110709	280333	18.64	1.60
21	महाराष्ट्र	74816051	2651889	82700556	4156343	10.54	56.73
22	मणिपुर	134541	749	140673	1908	4.56	154.74
23	मेघालय	680254	5313	691269	6773	1.62	27.48
24	मिजोरम	64249	744	63377	800	-1.36	7.53
25	नगालैंड	35915	2489	35638	3304	-0.77	32.74
26	ओड़िशा	9052871	64719	9800135	66675	8.25	3.02
27	पुडुचेरी	981714	52931	1000277	42624	1.89	-19.47
28	पंजाब	19056143	143805	21340888	204074	11.99	41.91
29	राजस्थान	28611831	1451370	30298150	1437162	5.89	-0.98
30	सिक्किम	558538	26489	576749	31698	3.26	19.66
31	तमिलनाडु	184136840	3561740	244232487	3990490	32.64	12.04
32	त्रिपुरा	361786	7840	359586	11853	-0.61	51.19
33	उत्तर प्रदेश	168381276	1994495	226531091	2054420	34.53	3.00
34	उत्तराखंड	26827329	124555	19941128	97683	-25.67	-21.57
35	पश्चिम बंगाल	22730205	1219610	25547300	1245230	12.39	2.10
	कुल योग	**1045047536**	**18263074**	**1145280443**	**19951026**	**9.59**	**9.24**

स्रोत: *पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, पर्यटन आंकड़े 2013*

ऊपर की तालिका से यह स्पष्ट है कि संभावनाओं और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर होने के बावजूद बहुत सारे राज्य पर्यटकों को पर्याप्त संख्या में आकर्षित करने में नाकाम रहे हैं। इसके उदाहरण उत्तर-पूर्व के राज्य, लक्षद्वीप और छत्तीसगढ़ हैं। इसका कोई अन्य कारण नहीं- बल्कि पर्यटन ढांचों के विकास में कमी है।

वर्ल्ड ट्रेवेल और टूरिज्म कांउसिल की एक रिपोर्ट कहती है कि पर्यटन से देश की अर्थव्यवस्था में होने वाला योगदान सन् 2014 में 7.3 फीसदी की दर से बढ़ेगा जो सामान्य अर्थव्यवस्था को 2.5 फीसदी की दर से पीछे छोड़ रहा होगा।

डेलॉइट टॉचे की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय पर्यटन क्षेत्र सन् 2017 तक 42.8 अरब अमरीकी डॉलर की आय अर्जित करेगा। धीमी होती अर्थव्यवस्था, कमजोर मांग और सुरक्षा चिंताओं के बावजूद यह क्षेत्र इससे उबरने की जद्दोजहज कर रहा था और पर्यटन का विकास फिर भी हो ही रहा था। गहराती वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था का हाल ठीक-ठाक है और डेलॉइट की रिपोर्ट के मुताबिक अभी भी दुनिया की तेज अर्थव्यवस्थाओं में भारत का स्थान प्रमुख है।

कुल मिलाकर इसका पैमाना बढ़ता जा रहा है। पर्यटकों की बढ़ती संख्या इस क्षेत्र में काम कर रहे अंशधारकों के राजस्व को बढ़ा रही है (होटल, टूर ऑपरेटर, एयरलाइन्स, शिपिंग लाईन्स आदि को)। इसका असर ज्यादा से ज्यादा होटल कमरों की बुकिंग पर पड़ेगा और उनका राजस्व बढ़ेगा। होटलों में औसत कमरों का किराया बढ़ा है और उनकी बुकिंग भी बढ़ी है।

इस तरह से भविष्य में इस क्षेत्र के तरक्की की संभावना है और यह उद्योग लंबे समय तक निवेश करने वालों के लिए बढ़िया निवेश का मौका प्रस्तुत कर रहा है। भारत में इस उद्योग की संभावनाओं को देखते हुए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय होटल श्रृंखलाएं तेजी से यहां का रुख कर रही हैं। भारत में भविष्य में मेडिकल टूरिज्म का काफी विकास होगा-ऐसी संभावना है और भारत इस अरबों के कारोबार में अपनी हिस्सेदारी जताने के लिए सुविधाओं में तेजी से बढ़ोतरी कर रहा है।

तालिका 3: शीर्ष 15 देशों से विदेशी पर्यटकों का आगमन (2013)

(संख्या 10 लाख में और प्रतिशत हिस्सेदारी)

क्रम	मूल देश	संख्या और हिस्सेदारी
1	अमरीका	1.085 (15.58 प्रतिशत)
2	इंग्लैंड	0.809 (11.62 प्रतिशत)
3	बंग्लादेश	0.525 (7.53 प्रतिशत)
4	श्रीलंका	0.262 (3.77 प्रतिशत)
5	रूसी संघ	0.259 (3.72 प्रतिशत)
6	कनाडा	0.255 (3.66 प्रतिशत)
7	जर्मनी	0.252 (3.62 प्रतिशत)
8	फ्रांस	0.248 (3.56 प्रतिशत)
9	मलेशिया	0.243 (3.48 प्रतिशत)
10	जापान	0.220 (3.16 प्रतिशत)
11	ऑस्ट्रेलिया	0.219 (3.14 प्रतिशत)
12	चीन	0.175 (2.51 प्रतिशत)
13	सिंगापुर	0.143 (2.05 प्रतिशत)
14	थाईलैंड	0.117 (1.68 प्रतिशत)
15	नेपाल	0.114 (1.63 प्रतिशत)
16	शीर्ष 10 देश	4.160 (59.70 प्रतिशत)
17	शीर्ष 15 देश	4.927 (70.72 प्रतिशत)

स्रोत: *पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, पर्यटन आंकड़े, 2013*

किसी भी प्रमुख पर्यटन स्थल पर रहने-ठहरने, परिवहन और मनोरंजन के साधन वहां के मुख्य कारक होते हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इन सुविधाओं की प्रतिस्पर्धात्मकता तय करती है कि वे पर्यटकों को आकर्षित करने में मूल्यवान संपत्ति साबित होती है या नहीं। इस तरह की सुविधाओं को बढ़ावा देने की कोई भी योजना ब्योरेवार सूचना पर ही बनानी चाहिए और उसमें भी वर्तमान ढ़ांचे पर प्रमुखता से विचार करने के साथ ही होना चाहिए।

तालिका 4: पर्यटन प्राप्तियां, ₹10 लाख में (1972-2005)

	रुपये में शुल्क		अमरीकी डॉलर में शुल्क	
वर्ष	₹ करोड़	बदलाव*	$ 10 लाख	बदलाव*
2009	63700	4.5%	11136	-3.7%
2010	64889	20.8%	14193	27.6%
2011	77591	19.6%	16564	16.7%
2012	94487	21.8%	17737	7.1%
2013	107671	14.0%	18445	4.0%

स्रोत: *पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, मार्केट रिसर्च डिविजन, पर्यटन आंकड़े, 2013 * गत वर्ष की तुलना में*

तालिका 5: भारत में होटल और कमरों की संख्या (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)

सन् 2013 में मान्यता प्राप्त होटलों और कमरों की उपलब्धता		
होटलों के प्रकार	होटलों की संख्या	कमरों की संख्या
वन स्टार	82	2086
टू स्टार	121	3154
थ्री स्टार	637	26617
फोर स्टार	111	7738
फाइव स्टार	85	10128
फाइव स्टार डीलक्स	106	21820
अपार्टमेंट होटल	3	249
टाइम शेयर रिजॉर्ट	1	31
हेरिटेज होटल	46	1322
बी एंड बी इस्टेब्लिशमेंट	31	158
विश्रामगृह	4	61
अवर्गीकृत	30	1989

स्रोत: *पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, विपणन शोध विभाग, पर्यटन के आंकड़े, 2013*

हाल के समय में पर्यटन उद्योग में अचानक उछाल देखने को मिला। हर कोई सोच रहा था कि इस इस उछाल को कैसे टिकाऊ बनाया जाए। दरअसल, पर्यटन में राजस्व प्राप्तियां इतनी विशाल हैं (दरअसल यह एक हजार अरब डॉलर का उद्योग है) कि यह भारत को एक सबसे बड़े विदेशी मुद्रा अर्जित करनेवाले देशों में से एक का दर्जा दे देता है और काफी रोजगार पैदा करता है।

इसके अलावा नेशनल हाईवे को भी चौडाई के हिसाब से परिभाषित किया गया है। आमतौर पर एक लेन की चौड़ाई (अगर सिंगल लेन की सड़क है तो) 3.75 मीटर होती है और अगर कई लेन की सड़क है तो एक एक लेन की चौड़ाई 3.5 मीटर होती है। यह नेशनल हाईवे का हिसाब है। चौड़ाई के हिसाब से नेशलन हाईवे की लंबाई तालिका 7 में बजाई जा रही है-

तालिका 6: भारतीय सड़कें

नेशनल हाईवे/ एक्सप्रेसवे	65,590 किमी
स्टेट हाईवे	1,28,000 किमी
प्रमुख और अन्य जिला सड़कें	4,70,000 किमी
ग्रामीण सड़कें	26,50,000 किमी

स्रोत: *http://www.ibef.org/industry/roads-india.aspx*

तालिका 7: सड़कों का अनुपात

सिंगल लेन	32 प्रतिशत
डबल लेन/मध्यवर्ती लेन	56 प्रतिशत
चार/छह/आठ लेन	•

स्रोत: *http://www.ibef.org/industry/ roads-india.aspx*

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत में अच्छी सड़के नहीं हैं। कुल सड़कों में मात्र 12 फीसदी ही विश्वस्तरीय हैं। यह अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने के हिसाब से बहुत कम है। पर्यटन उद्येश्यों के लिए पूरा यूरोप सड़क से यात्रा करना पसंद करता है, लेकिन सड़क से सफर करने के लिए भारतीयों को कई बार सोचना पड़ता है। इसके अलावा गलत तरीके से गाड़ी चलाना इस यात्रा को और भी खतरनाक बना देता है। दुनिया में होने वाले सड़क हादसों में भारत का स्थान काफी ऊंचा है।

तालिका 8: भारत में रेल यातायात

गेज	लंबाई*	रनिंग ट्रैक*	कुल पटरी*
ब्रॉड गेज (1.676 मी)	49,820	71,015	93,386
मीटर गेज (1.000 मी)	10,621	11,487	13,412
नैरो गेज (762/610 मिमी)	2,886	2,888	3,198

स्रोत: *http://www.ibef.org/industry/roads-india.a*
** किलोमीटर में*

वहीं रेलमार्ग की बात करें तो सकल पथ किमी का 28 फीसदी, रनिंग ट्रैक किमी का 39 फीसदी और सकल ट्रैक किमी का 41 फीसदी करीब विद्युतीकृत है।

भारतीय जल परिवहन

भारत में करीब 14, 500 किमी नौकागम्य जलमार्ग है जिसमें नदियां, नहर, ताल-तलैये, झील आदि शामिल हैं। सन् 2006-07 में इन अंतर्देशीय जल मार्गों द्वारा 5 करोड़ टन माल ढ़ोया गया जो 2.82 अरब टन/किमी के बराबर था। इसका परिचालन अभी देश के कुछ ही हिस्सों में गंगा-भागीरथी-हुगली नदियों, ब्रह्मपुत्र, बराक और गोवा की नदियों, केरल के बैकवाटर, मुंबई और गोदावरी-कृष्णा के डेल्टाई क्षेत्रों में सीमित है।मोटर चालित नौकाओं के अलावा देश के कई हिस्सों में देसी नौकाओं से भी परिचालन और माल की ढुलाई की जाती है। असंगठित क्षेत्र में माल की ढुलाई और मुसाफिरों की यात्रा के आंकड़े संकलित नहीं किए गए हैं, लेकिन यह एक तथ्य है कि अच्छी खासी मात्रा में माल की ढुलाई और मुसाफिरों का परिवहन होता ही है।

भारत में एयरपोर्ट

आगे दी गई सूची के अनुसार भारत में 46 हवाई अड्डे हैं लेकिन ये सभी पूरे देश से जुड़े हुए नहीं हैं। इसलिए कई बार हवाई जहाज से यात्रा करने में ट्रेन से भी ज्यादा वक्त लग जाता है। उदाहरण के लिए अगर किसी आगरा से बनारस जाना हो या हवाई जहाज से जयपुर जाना हो, तो उसे पहले दिल्ली जाना होगा फिर दूसरा विमान लेकर अपने गंतव्य तक जाना होगा।

अगर भारत इस पर्यटन क्रांति का लाभ नहीं उठा पाता है तो इसका जिम्मेदार वह खुद होगा। थोड़े से मेहनत की जरूरत है, भारत छलांग लगा सकता है। ये बात सही है कि पर्यटन से जुड़े हर क्षेत्र में बुनियादी ढ़ांचे की कमी दिख रही है चाहे वो एयरपोर्ट हो, रेलवे हो, सड़क हो, होटल में कमरों की संख्या हो, प्रशिक्षित मानव संसाधन हो, खरीददारी हो, आरामदायक सफर हो, मेडिकल टूरिज्म हो, पर्यटन शिक्षा हो या टिकाऊ विकास हो-हर जगह ढ़ांचे की कमी है।

पर्यटन उद्योग आंशिक रूप से अपने ढ़ांचे को समुन्नत कर सकता है और ऐसा करने के लिए उसे पर्यटन, कर, निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन, विदेशी निवेश के एकल खिड़की की विशेष व्यवस्था, जमीन की व्यवस्था,वित्तीय सहायता खासकर लंबे समय के कर्ज को कम ब्याज पर देने का इंतजाम, देश में विदेशी मुद्रा की

तालिका 9: भारत के प्रमुख हवाई अड्डे

क्रम	क्षेत्र या राज्य	हवाई अड्डे का नाम	शहर	वर्ग
1	अंडमान-निकोबार	वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	पोर्ट ब्लेयर	चुंगी
2	आंध्र प्रदेश	विशाखापतनम् हवाई अड्डा	विशाखापट्टनम	चुंगी
3	असम	लोकप्रिय गोपीनाथ बारदोलाई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	गुआहाटी	चुंगी
4	बिहार	जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	पटना	चुंगी
5	बिहार	गया हवाई अड्डा	गया	चुंगी
6	छत्तीसगढ़	स्वामी विवेकानंद हवाई अड्डा	रायपुर	घरेलू
7	दमन-दीव	दीव हवाई अड्डा	दीव	घरेलू
8	दिल्ली	इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	नई दिल्ली	अंतर्राष्ट्रीय
9	गोआ	दाबोलिम हवाई अड्डा	पूरा राज्य	अंतर्राष्ट्रीय
10	गुजरात	सरदार वल्लभभाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	अहमदाबाद	अंतर्राष्ट्रीय
11	जम्मू-कश्मीर	श्रीनगर हवाई अड्डा	श्रीनगर	चुंगी
12	जम्मू-कश्मीर	जम्मू हवाई अड्डा	जम्मू	घरेलू
13	झारखंड	बिरसा मुंडा हवाई अड्डा	रांची	घरेलू
14	कर्नाटक	मेंगलोर हवाई अड्डा	मंगलोर	चुंगी
15	कर्नाटक	बेंगलुरु अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट्स (कैम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा)	बेंगलुरु	अंतर्राष्ट्रीय
16	केरल	त्रिवेंद्रम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	त्रिवेंदरम	अंतर्राष्ट्रीय
17	केरल	कोचीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	कोचीन	अंतर्राष्ट्रीय
18	केरल	कालीकट अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	कालीकट	अंतर्राष्ट्रीय
19	लक्ष्यद्वीप	अगाती एयरोड्रोम	अगाटी	घरेलू
20	मध्य प्रदेश	राजा भोज हवाई अड्डा	भोपाल	चुंगी
21	मध्य प्रदेश	देवी अहिल्यावाई होल्कर हवाई अड्डा	इंदौर	घरेलू
22	महाराष्ट्र	छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	मुंबई	अंतर्राष्ट्रीय
23	महाराष्ट्र	पुणे हवाई अड्डा	पुणे	चुंगी
24	महाराष्ट्र	न्यू पुणे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	पुणे	भावी
25	महाराष्ट्र	शिरडी हवाई अड्डा	शिरडी	भावी
26	महाराष्ट्र	डॉ बाबा साहब अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	नागपुर	चुंगी
27	मणिपुर	तुलीहल हवाई अड्डा	इंफाल	घरेलू
28	मेघालय	शिलांग हवाई अड्डा	शिलांग	घरेलू
29	मिजोरम	लेंगपुइ हवाई अड्डा	आइजॉल	घरेलू
30	नगालैंड	दीमापुर हवाई अड्डा	दीमापुर	घरेलू
31	ओड़िशा	पटनायक हवाई अड्डा	भुवनेश्वर	घरेलू
32	पुडुचेरी	पुडुचेरी हवाई अड्डा	पुडुचेरी	घरेलू
33	पंजाब	श्री गुरु रामदास जी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	अमृतसर	अंतर्राष्ट्रीय
34	राजस्थान	जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	जयपुर	चुंगी
35	सिक्कम	पाक्योंग हवाई अड्डा	गंगटोक	भावी
36	तमिलनाडु	चेन्नई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	चेन्नई	अंतर्राष्ट्रीय
37	तमिलनाडु	त्रिचुरापल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	त्रिचरापल्ली	चुंगी
38	तेलंगाना	राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	हैदराबाद	अंतर्राष्ट्रीय
39	त्रिपुरा	अगरतल्ला हवाई अड्डा	अगरतल्ला	घरेलू
40	उत्तराखंड	जॉलीग्रांट हवाई अड्डा	देहरादून	घरेलू
41	उत्तर प्रदेश	ताज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	ग्रेटर नोएडा	भावी
42	उत्तर प्रदेश	वाराणसी हवाई अड्डा	वाराणासी	चुंगी
43	उत्तर प्रदेश	अमौसी हवाई अड्डा	लखनऊ	चुंगी
44	उत्तर प्रदेश	आगरा एयरफोर्श स्टेशन	आगरा	घरेलू
45	पश्चिम बंगाल	नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	कोलकाता	अंतर्राष्ट्रीय
46	पश्चिम बंगाल	बागडोगरा एयरपोर्ट	सिलीगुड़ी	चुंगी

स्रोतः *http://www.ibef.org/industry/roads-india.aspx*

अबाध व्यवस्था, नौकरशाहों के हस्तक्षेप को कम कर पेशेवर लोगों को शामिल करना और लालफीताशाही से मुक्ति जैसी व्यवस्थाओं पर जोर देना होगा। यहीं सही तरीका है और एक मात्र उपाय है जिससे हम पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं।

असली चुनौती है ऐसे सर्किटों और चुनिंदा केंद्रों की पहचान करना जहां पर समेकित विकास किया जा सके जो लोकप्रिय भी हों क्योंकि ढांचागत विकास में वित्तीय कमी एक बड़ी बाधा होती है। इसिलए एक बहुत ही चुनिंदा तरीका कारगर साबित होता है। भारत में ढांचागत सुविधा के विकास में सिर्फ सुविधाओं का निर्माण करना ही समस्या नहीं है जैसा कि राष्ट्रीय उच्चपथ विकास कार्यक्रम, रेलवे या एयरपोर्ट जैसी महंगी सुविधाओं के विकास में देखा गया गया है। उतनी ही समस्या ये है कि आखिरी घड़ी में कोई समस्या आन खड़ी होती है, उसे सुलझाना जरूरी है उससे पहले कि वो अत्यधिक मुश्किल हो जाए।

बड़े स्तर की ''इंक्रेडिबल इंडिया'' (अतुल्य भारत)अभियान के बाद भी देश में पर्यटकों का उतना आगमन नहीं हो पाया है जितना कि एक महाद्वीपीय स्तर के देश में होना चाहिए था। इसका एक ही समाधान है कि हम अपने बुनियादी ढ़ांचे को ठीक करें-जब तक हम वैसा नहीं करते हमारे यहां 50-60 लाख से ज्यादा विदेशी पर्यटक नहीं आ पाएंगे। यह खुशी की बात है कि केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने सारे राज्यों को विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा बनाने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। उस दिशा-निर्देश में कुछ बातें संकेत देती हैं कि सही दिशा में सही कदम उठा लिया गया है।

दिशा-निर्देश की मुख्य बातें

- राज्य और केंद्रशासित प्रदेशों को वास्तुविदों और संरक्षण और भूआकृति वास्तुविदों की नियुक्ति करनी चाहिए जिसमें नियमों का पालन किया गया हो और इसे अपने ही संसाधनों द्वारा वित्तपोषित किया जाना चाहिए।
- पर्यटन संबंधित परियोजनाओं के लिए राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को एकल खिड़की मंजूरी की सुविधा देनी चाहिए।
- मेगा डेस्टिनेशन प्रोजेक्ट या सर्किट की योजना को लागू करते समय राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को कोशिश करनी चाहिए कि इसे जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीनीकरण मिशन से तालमेल किया जाए।

नगरीय सार्वजनिक सुविधाएं

- राज्य को बारहमासी यातायात संजाल का निर्माण करना चाहिए जिसमें पर्यटक स्थल और उसके आसपास सभी उपयोगकर्ताओं के लिए मुक्त वातावरण का निर्माण हो।
- इन बातों पर खास ध्यान देना जरूरी है–
  * डिजाईन, कोड, सौंदर्यबोध और मानव-मितीय (मानव-शरीर के माप से संबंधित), सामग्री का चयन, फैब्रिकेशन, समयवद्धता, मौसम और देखभाल
  * दिशासूचक चिह्न- पर्याप्तता और उसकी जगह
  * शौचालय, कचरे की रीसाइकलिंग
  * सूचना, सूचना तक पहुंच
  * सूचना और पर्यटन सेवा केंद्र/सुविधा केंद्र
  * सार्वजनिक शौचालय
  * पार्किंग जिसमें दुपहिया वाहनों की पार्किंग और विशेष रूप से सक्षम व्यक्तियों के लिए पार्किंग की भी व्यवस्था हो।
- राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को उच्च-गुणवत्ता वाले पर्यटक मानचित्रों, गाइड, सीडी, पोस्टर, पर्यटक कैलेंडर, साथ ले सकने योग्य मानचित्र और भारत की विविधता से भरी गतिशील संस्कृति को दर्शाने वाले ग्राफिक प्रदर्शनियों का इंतजाम करना चाहिए।
- विस्तृत परियोजना रिपोर्ट में स्पष्ट करना चाहिए कि क्रियान्वयनकारी एजेंसी के पास पर्याप्त जमीन उपलब्ध है। अगर मंत्रालय द्वारा पारित परियोजना जमीन की कमी के कारण साल भर बाद तक शुरू नहीं हो पाई है, तो परियोजना वापस ले ली जाएगी और धनराशि या तो सरकार वापस ले लेगी या उसे दूसरे मद में नियोजित कर देगी।
- पर्यटक स्थलों पर जानेवाली सड़कों पर सड़क किनारे सार्वजनिक सुविधाएं हरेक 50 किमी पर होनी चाहिए।
- सड़क किनारे दिशा-निर्देश अंतर्राष्ट्रीय मानकों के हिसाब से हों (साइनेज के लिए वर्ल्ड टूरिज्म वेबसाइट)
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को अपने संसाधनों से ही मौजूदा पर्यटन सुविधाओं को विस्तार और मजबूत करने चाहिए।
- नियम संबंधी औपचारिकता पूरी करने के बाद राज्यों को यथासंभव संस्थानिक व्यवस्था करनी चाहिए ताकि उपयुक्त एजेंसी से इसका प्रबंधन किया जा सके।

निर्मित विरासत स्थल और संकेतक

- जहां तक संभव हो राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को विरासत पर्यटन स्थल के संरक्षण के लिए एक व्यापक संरक्षण मास्टर प्लान बनाना चाहिए जिसमें शोध, दस्तावेजीकरण, महत्व, क्षति आकलन, संरक्षण, प्रबंधन, पर्यटन बुनियादी ढांचा, जोखिम का आकलन, पर्यटन स्थल की व्याख्या, जीवन-सुरक्षा/प्राथमिक चिकित्सा और सामान्य सुरक्षा, सार्वभौम पहुंच, कचरा प्रबंधन, सामुदायिक विमर्श, लोगों से जुड़कर क्रियान्वयन की रणनीति और व्यवसायिक योजना आदि पर पूरा ध्यान दिया जाए।
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को खासतौर पर वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स के लिए और अन्य विरासत स्थल या पुरातात्विक महत्व के जगहों के लिए भी यूनेस्को चार्टर फॉर वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स के अंतर्राष्ट्रीय दिशानिर्देश और तौर-तरीकों का पालन करना चाहिए। (http://whc.unesco.org/en/guidelines).
- सड़क के किनारे या अन्यथा संकेतकों के लिए विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए।
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के संरक्षण और पर्यटन विकास योजनाओं हेतु ठोस वित्तीय और रखरखाव योजना हो।
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को उचित संस्थानिक व्यवस्था करनी चाहिए ताकि परियोजनाओं को सही समय पर पूरा किया जा सके और पूरा होने के बाद उसका रखरखाव हो सके।
- परिचालन और रखरखाव के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

वातावरण के अनुकूल और स्वदेशी वास्तु

- प्रयास यह हो कि स्थानीय वातावरण के हिसाब से उपयुक्त और स्थान-विशेष के प्रति संवेदनशील पर्यावरण मित्रवत् वास्तु को बढ़ावा दिया जाए।
- स्थानीय सामग्रियों, तकनीक और स्थानीय डिजाइन के सिद्धांतों पर जोर दिया जाए।
- कोशिश ये हो कि सभी पर्यटन कर्मचारियों के लिए क्षमता निर्माण की सुविधा हो-जिसमें स्थान, पर्यावरण और खास पर्यटन स्थल से संदर्भित विशेषताओं का ध्यान रखा जाए। इसे पर्यटन मंत्रालय से सीबीएसपी (यानी सेवा प्रदाताओं के लिए क्षमता निर्माण) योजना के तहत वित्तपोषित किया जा सकता है।

नगरीय भूदृश्य

- स्थानीय भूदृश्य में वहां की स्थानीयता झलकनी चाहिए, साथ ही स्थानीय सामग्रियों का इस्तेमाल हो।
- पौधों या वृक्षारोपण में स्थानीय और देसी पेड़-पौधों को प्रोत्साहन मिले।
- उचित पाया जाए तो विनिर्माण तकनीक में पारंपरिक तौर तरीकों का इस्तेमाल हो, उसका शोध हो और बढ़ावा मिले।
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि:
  - जहां तक संभव हो मौजूदा जमीन की संरचना को बरकरार रखते हुए न्यूनतम मिट्टीकरण का काम पुनर्स्थापित हो।
  - बारिश के पानी का संरक्षण, भूजल संरक्षण, भूजल पुर्नजीवन और पानी की शून्य बर्बादी सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
  - सीमांकन के काम में उचित डिजायन का सहारा लिया जाना चाहिए जिसमें सौंदर्यबोध, सुरक्षा और लागत का ध्यान रखा जाना चाहिए। किसी खास योजना के लिए आबंटित राशि से 20 फीसदी से ज्यादा लागत नहीं आनी चाहिए।
  - सौर-ऊर्जा से प्रकाश और नवीनीकृत ऊर्जा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
  - ठोस सामग्रियों का न्यूनतम इस्तेमाल हो।
  - पानी की कमी वाले इलाके में कृत्रिम झरने/ आदि का प्रयोग हतोत्साहित करना चाहिए
- जहां बिजली की कमी हो वहां विशाल प्रकाश व्यवस्था से बचाना चाहिए, हां सुरक्षा से कोई समझौता न हो।
- सुनिश्चित हो कि परियोजना के शुरू होने से पहले वहां पर जल स्रोत उपलब्ध हों ताकि सिंचाई और पेयजल की व्यवस्था उचित तरीके से हो सके।
- पहुंच योग्य बुनियादी ढ़ांचे को प्रोत्साहित किया जाए।
- अगले पांच साल के लिए रखरखाव की योजना और बजट तैयार किया जाए ताकि परियोजना को सतत रखा जा सके। इसे राज्य सरकार और केंद्रशासित प्रदेशों के द्वारा या पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के द्वारा वित्तपोषित किया जाना चाहिए।

विकसित किए गए जमीन पर बनें फूड क्राफ्ट संस्थान और होटल प्रबंधन संस्थान

- भविष्य के विस्तार के लिए इलाकों को चिह्नित किया जाए और अधिग्रहित किया जाए लेकिन किसी तरह के सभागार का निर्माण न हो।
- पूरे परिसर के मास्टर प्लान की योजना बने।
- सिर्फ जरूरी निर्माण के लिए ही परियोजना के लिए भूदृश्य अधिग्रहित किया जाए।

भारत का पर्यटन क्षेत्र एक ऊंची छलांग लगाने के मुहाने पर खड़ा है लेकिन भारत को समझना होगा कि कोई भी देश इसके लिए भारत का इंतजार नहीं करेगा। दुनिया के सारे देशों में इसके लिए गलाकाट होड़ मची है क्योंकि यह उनकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। चीन, मलेशिया, थाईलैंड और इंडोनेशिया जैसे देश पर्टयन ढ़ांचे पर भारी रकम खर्च कर रहे हैं और अपने प्रयास में सफल भी हो रहे हैं लेकिन दूसरी तरफ भारत अभी तक अपनी प्राथमिकता ही तय कर रहा है और कहीं न कहीं पर्यटन उसकी योजना में अभी तक पूरी तरह फिट नहीं हो पाया है। ज्यादा से ज्यादा लोकलुभावनकारी योजनाएं सामने आ रही हैं। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने गुजरात में बुनियादी ढ़ांचे में काफी निवेश करवाया था जिसका नतीजा सबके सामने है।

अंत में कहने का लब्बोलुआव यहीं है कि सारे आकर्षण अर्थहीन हैं जबतक कि किसी पर्यटन स्थल तक पहुंच सुगम न हो। भारतीय योजनाकारों को आज न कल ये बात समझनी ही होगी। सड़क या रेलवे सिर्फ पर्यटकों को ही आकर्षित नहीं करते-भारत की अर्थव्यवस्था को भी इससे बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा। ❑

संदर्भ

1. **कोहेन ई, 1979:** फेनोमेनोलॉजी ऑफ टूरिस्ट एक्सपेरियंस
2. **क्राउच जी आई और रिची, जे आर बी, 1999:** टूरिज्म कम्पेटीटिवनेश एंड सोशल प्रोस्पेरिटी, जर्नल ऑफ बिजनेस रिसर्च, 44 (3): 137-152
3. **क्राउच जी आई और रिची, जे आर बी, 2000:** द कम्पेटेटिव **डेस्टिनेशन-ए** सस्टेनेबिलिटी पर्स्पेक्टिव। टूरिज्म मनेजमेंट: 21
4. **गीयरिंग, सी. ई. 1974:** इस्टेब्लिशिंग ए मेजर ऑफ टूरिस्टिक एट्रैक्टिवनेश। जर्नल ऑफ ट्रेवेल रिसर्च 12: 1-8
5. **गुन, सी.ए, ईडीएस, 1988:** टूरिज्म प्लानिंग (दूसरा संस्करण), न्यूयॉर्क: टेलर एंड फ्रेंसिस
6. **कौल, आर.एन. ईडीएस. 1985:** डायनामिक्स ऑफ टूरिज्म: ए ट्रियोलॉजी (वॉल्यूम-111) ट्रांसपोर्टेशन एंड मार्केटिंग, नई दिल्ली
7. **किम एल, क्राम्पटन जे, एल, बोथा, पी. 2000:** रिस्पांडिंग टु कॉम्पेटिशन: ए स्ट्रेटेजी फॉर सन/लॉस्ट सिटी, साउथ अफ्रीका टूरिज्म मनेजमेंट. 21 (41)
8. **एलआईएम, सी, 1997:** रिव्यू ऑफ इनटरनेशनल टूरिज्म डिमांड मॉडेल्स. एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 24 (4): 835-849
9. **मेकेलरॉय जे, एल. 2003:** स्मॉल आइलैंड टूरिस्ट इकनॉमीज अक्रॉस द लाइफ साइकिल, अंतर्राष्ट्रीय कंफ्रेंस के लिए तैयार पर्चा, बियोंड मिराब: द पॉलिटिकल इकनॉमी ऑफ स्मॉल आइलैंड इन द 21LV सेंचुरी, स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स एंड फिनांस, विक्टोरिया यूनिवर्सिटी, वेलिंगटन, न्यूजीलैंड, 23-25 फरवरी 2004
10. **एमओ, हॉवर्ड एंड हैविज 1993:** टेस्टिंग ए टूरिस्ट रोल टाइपोलॉजी, एन्नल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 20: 319-335
11. **प्रीडिऔक्स बी. 2000:** द रोल ऑफ द ट्रांसपोर्ट सिस्टम इन द डेस्टिनेशन डवलपमेंट। टूरिज्म मनेजमेंट 21
12. **स्मिथ, एस एल. जे. 1994:** द टूरिज्म प्रोडक्ट। एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च.21 (3): 582-595
13. **टैंग एंड रोचोनेनोंड 1990:** एट्रेक्टिवनेश एज टूरिस्ट डेस्टिनेशन, ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ थाईलैंड एंड सलेक्टेड कंट्रीज। सोशियो-इकनॉमिक प्लानिंग 24 (3)
14. **विट एंड विट सी, 1995:** फॉरकास्टिंग टूरिज्म **डिमांड-ए रिव्यू** ऑफ एम्पाइरिकल रिसर्च, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फोरकास्टिंग: 11:447-475
15. http://www.safariplus.co.in/KanjilalArticle.aspx?GId=22
16. http://www.ibef.org/industry/roads-india.aspx
17. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की वेबसाइट

Career Launcher

सिविल सेवा अभ्यर्थी

प्रारंभिक परीक्षा में 5% से अधिक परीक्षार्थी उत्तीर्ण नहीं होते : शीघ्र शुरूआत करें!

सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2014 में उपस्थित लगभग 4,50,000 परीक्षार्थियों में से मात्र 3.7% ही प्रधान परीक्षा 2014 के लिए योग्य पाये गये।

प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए आवश्यक अंकों का 75% अंक आप केवल सामान्य अध्ययन-II (सीसैट) में ही प्राप्त कर सकते हैं। अभिरूचि परीक्षण वाले प्रश्न-पत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु अनवरत् अभ्यास अनिवार्य है। यह रातों-रात नहीं होता।

सिर्फ CL ही आपको IAS तक पहुँचाएगा !

CL पंजीकरण संख्या	विद्यार्थी का नाम	यूपीएससी अनुक्रमांक	CSAT प्राप्तांक (200 में से)	CSAT प्रतिशत	सिविल सेवा (प्रा.) 2013 के कट ऑफ (241) में CSAT के प्राप्तांक का प्रतिशत
1988094	अभिषेक आनंद	225650	194.18	97.1	80.6
2699229	राज कमल रंजन	220538	190.83	95.4	79.2
5619304	श्रुजीत वेलुमुला	044017	190	95.0	78.8
5619556	शेख रहमान	181495	190	95.0	78.8
5619239	प्रशांत जैन	322447	190	95.0	78.8
5619441	रविंदर जैन	327293	190	95.0	78.8
494563	शरत थोटा	083223	190	95.0	78.8
5293707	आशीष सांगवान	011764	188.33	94.2	78.1
5597674	रानाधीर अल्लू	136150	187.5	93.8	77.8
2387378	श्रीकांत रेड्डी	188130	187.5	93.8	77.8
5619612	गरूण सुमित सुनील	361061	187.5	93.8	77.8
2387056	प्रतीक वमसी गुर्रम	164567	187.5	93.8	77.8
5597676	मुरलीधर कोमीरेड्डी	033471	187.5	93.8	77.8
5597844	अर्पित शर्मा	103316	187.5	93.8	77.8
3013398	विनीत कुमार	241717	187.5	93.8	77.8

और भी बहुत से...

प्रारंभिक परीक्षा के लिए अखिल भारतीय टेस्ट सीरीज 100 से भी अधिक शहरों में उपलब्ध

सिविल सेवा परीक्षा '13 के टॉप **10** में से **6** CL विद्यार्थी हैं

1069 CL अभ्यर्थी सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा '14 के लिए योग्य पाये गये

CL | Civil Services Test Prep

www.careerlauncher.com/civils

/CLRocks

GS और CSAT के नये बैच उपलब्ध, जानकारी के लिए अपने निकटतम् CL केंद्र पर संपर्क करें!

दिल्ली / एनसीआर में CL सिविल सेवा के अध्ययन केंद्र

मुखर्जी नगरः 204/216, द्वितीय तल, विराट भवन/एमटीएनएल बिल्डिंग, पोस्ट ऑफिस के सामने, फोन – 41415241/46

ओल्ड राजेन्द्र नगरः 18/1, प्रथम तल, अग्रवाल स्वीट्स के सामने, फोन – 42375128/29

बेर सरायः 61बी, ओल्ड जे. एन. यू. कैम्पस के सामने, जवाहर बुक डिपो के पीछे, फोन – 26566616/17

ग़ाज़ियाबादः सी-27, द्वितीय तल, आरडीसी मार्केट, राज नगर, (बीकानेर स्वीट्स के सामने) फोन – 0120-4380996

इलाहाबादः 19 बी/49, भूतल, कमला नेहरू मार्ग, यूनिवर्सिटी स्टेडियम गेट के सामने, मनमोहन पार्क चौराहा, फोन – (0)9956130010

"CL Educate Limited is proposing, subject to receipt of requisite approvals, market conditions and other considerations, an initial public offering of its equity shares and has filed a Draft Red Herring Prospectus with the Securities and Exchange Board of India ("SEBI"). The Draft Red Herring Prospectus is available on the website of the SEBI at www.sebi.gov.in and the website of Kotak Mahindra Capital Company Limited at www.investmentbank.kotak.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details refer to the Draft Red Herring Prospectus, including the section titled "Risk Factors".

YH-17/2015

पर्यटक ई-वीजा: आसान हुई पर्यटकों की राह

नानू भसीन
नवनीत कौर

अब 40 से अधिक देशों के लिए ई-पर्यटक वीजा उपलब्ध है, लेकिन चीन, ब्रिटेन, स्पेन, इटली और मलेशिया जैसे कई देशों के लिए अभी इसे चालू किया जाना है, जो देश भारत में पर्यटन की दृष्टि से प्रमुख हैं। इसी प्रकार यह सुविधा वाराणसी, गया, अहमदाबाद, जयपुर, तिरुचिरापल्ली जैसे कई अन्य हवाई अड्डों पर भी उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता है, जो भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन के प्रमुख केंद्र हैं। इससे उन 9 हवाई अड्डों से पर्यटकों का बोझ कम करने में भी मदद मिलेगी, जहां अभी यह सुविधा उपलब्ध है

मनोरंजन के लिए, छुट्टी बिताने के लिए, धार्मिक, पारिवारिक अथवा कामकाजी उद्देश्य से कम समय के लिए यात्रा करना ही पर्यटन है। पर्यटन को सामान्य तौर पर विदेश की यात्रा से जोड़ दिया जाता है, किंतु देश के भीतर ही किसी स्थान की यात्रा को भी पर्यटन कहा जा सकता है। विश्व पर्यटन संगठन की परिभाषा के अनुसार पर्यटक वे लोग होते हैं, जो 'छुट्टी बिताने, कामकाज अथवा अन्य उद्देश्यों के लिए अपने सामान्य माहौल से दूर स्थानों की यात्रा करते हैं और ठहरते हैं किंतु वे लगातार एक से अधिक वर्ष तक ऐसा नहीं करते।'

छुट्टी बिताने के लिए पर्यटन लोकप्रिय वैश्विक गतिविधि बन चुका है। पर्यटन देश में भी हो सकता है और अंतरराष्ट्रीय भी तथा अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को देश में आने वाले पर्यटकों तथा देश से बाहर जाने वाले पर्यटकों में बांटा जा सकता है। आज बाहर से आने वाले पर्यटक कई देशों के लिए आय का प्रमुख स्रोत हैं, विशेषकर किसी देश द्वारा अर्जित की जा रही विदेशी मुद्रा के मामले में। पर्यटकों की अधिक आवक वाले स्थान की अर्थव्यवस्था तथा रोजगार पर भी इसका बहुत प्रभाव होता है।

भारत समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर वाला देश है, जो यात्रियों को सदैव अचंभित करता रहा है। यह विविधता से भरी अनूठी धरती है, जहां एक ही देश की भौगोलिक सीमा में मरुस्थल, समुद्र, वन, पर्वतों, फूलों, वन्यजीव समेत सभी प्रकार का प्राकृतिक सौंदर्य मौजूद है। भारत आने वाले किसी भी व्यक्ति को विभिन्न राज्यों में विभिन्न संस्कृतियों, पोशाकों, व्यंजनों, वनस्पति तथा जंतुओं का अनुभव होगा। इस प्रकार भारत सदैव उन यात्रियों का ठिकाना रहा है, जो संस्कृति, परंपरा तथा समृद्ध धरोहर के इस मेल का आनंद उठाना चाहते हैं। इतना ही नहीं विदेशी पर्यटक 'भारतीय संस्कृति के दूतों' की तरह कार्य करते हैं और इस संदेश को दुनिया भर में ले जाते हैं।

भारत सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु इन अनूठे तत्वों का लाभ उठाने के लिए विभिन्न प्रयास किए हैं। ऐसी ही एक बड़ी पहल है **पर्यटक ई-वीजा** की योजना। यह योजना विदेशी पर्यटकों के लिए भारत की यात्रा को सरल एवं आसान बनाने के लिए आरंभ की गई है।

पर्यटक ई-वीजा: पृष्ठभूमि

इस योजना का सूत्रपात देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विदेशी पर्यटकों हेतु वीजा प्रणाली को उदार बनाने की पर्यटन उद्योग की मांग के साथ हुआ। सरकार ने 2010 में बहुत सीमित स्तर पर 'आगमन पर वीजा' आरंभ किया। 'आगमन पर वीजा' का अर्थ है कि आपको प्रवेश करने के लिए वीजा की आवश्यकता है किंतु जिस देश की यात्रा करनी है, वहां के वीजा के लिए आवेदन करना और उसे प्राप्त करना तभी संभव है, जब आप उस देश में पहुंच जाएं। भारत सरकार ने पांच देशों फिनलैंड, जापान, लक्जमबर्ग, न्यूजीलैंड तथा सिंगापुर से पर्यटन के उद्देश्य से आने वाले नागरिकों के लिए जनवरी 2010 में *आगमन पर वीजा* की सुविधा आरंभ की। उस समय *आगमन पर वीजा* हाथ से तैयार किया जाता था।

आगमन पर वीजा की सुविधा को जनवरी 2011 में छह अन्य देशों कंबोडिया, इंडोनेशिया,

लेखिकाद्वय पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार में क्रमशः निदेशक एवं उप निदेशक हैं तथा संप्रति नई दिल्ली में पदस्थापित हैं।
ईमेलः bhasinnanu@hotmail.com, pibcultour@gmail.com

तालिका 1: आगमन पर पर्यटक वीजा/ पर्यटक ई-वीजा योजना की प्रगति

वर्ष	2010 (जन-नवं)	2011 (जन-दिसं)	2012 (जन-दिसं)	2013 (जन-दिसं)	2014 (जन-दिसं)
पर्यटक ई-वीजा	5,644	12,761	16,084	20,294	39,046

स्रोत- विपणन शोध विभाग, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

पर्यटक ई-वीजा 27 नवंबर, 2014 को आरंभ किया गया

वियतनाम, फिलीपींस, लाओस तथा म्यांमार के नागरिकों के लिए और अप्रैल 2014 में दक्षिण कोरिया के नागरिकों के लिए बढ़ा दिया। तब तक आगमन पर वीजा की योजना बहुत सीमित स्तर पर ही संचालित होती रही।

किंतु इस योजना को वर्तमान सरकार ने तेजी से बढ़ाया, जब उसने 27 नवंबर 2014 से इसे 43 देशों तक बढ़ा दिया तथा जनवरी 2015 में गुयाना को मिलाकर इस योजना में कुल 44 देशों को सम्मिलित कर लिया। इलेक्ट्रॉनिक ट्रैवल ऑथराइजेशन (ईटीए) का विचार भी उसी समय प्रस्तुत किया गया।

इलेक्ट्रॉनिक यात्रा स्वीकृति: पर्यटक ई-वीजा

अधिकाधिक विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक ऑथराइजेशन (ईटीए) की सहायता से आगमन पर पर्यटन वीजा की व्यवस्था आरंभ करना नई सरकार का बहुत महत्वपूर्ण कदम था, जिसे अब **पर्यटक ई-वीजा** का नाम दे दिया गया है, लेकिन योजना के दिशानिर्देशों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। देश को वैश्विक पर्यटन के लाभ तब तक नहीं मिल सकते, जब तक सरकार उनके लिए बेहतर सुविधा उपलब्ध न कराए, जो देश में आना चाहते हैं।

इसीलिए इलेक्ट्रॉनिक ट्रैवल ऑथराइजेशन (ईटीए) की सहायता से आगमन पर पर्यटक वीजा की योजना 27 नवंबर 2014 को आरंभ की गई, जिसे अब **पर्यटक ई-वीजा** का नाम दे दिया गया है और धीरे-धीरे यह सुविधा 150 देशों को देने का प्रस्ताव है। यह संख्या 2015-16 में ही 106 देशों तक पहुंचाने का सरकार का प्रस्ताव है।

पर्यटक ई-वीजा की नई योजना ने कम अवधि के लिए आने वाले संभावित यात्रियों को भारतीय दूतावास गए बगैर ही अपने देश से वीजा के लिए ऑनलाइन आवेदन करने तथा वीजा शुल्क भी ऑनलाइन अदा करने में सहायता की है। मंजूरी मिलने के बाद आवेदक को ई-मेल मिलता है, जो उसे भारत की यात्रा के लिए अधिकृत करता है और इस मेल के प्रिंट आउट के साथ वह यात्रा कर सकता है। यहां आने पर यात्री को ऑथराइजेशन का प्रिंट आउट आव्रजन अधिकारियों को दिखाना होता है, जो देश में प्रवेश की अनुमति का ठप्पा उस पर लगाते हैं। फिलहाल आगमन पर वीजा एक महीने के लिए वैध है, जिसे बढ़ाया नहीं जा सकता और जिस पर देश में एक ही बार प्रवेश किया जा सकता है।

पर्यटक ई-वीजा की नई योजना ने कम अवधि के लिए आने वाले संभावित यात्रियों को भारतीय दूतावास गए बगैर ही अपने देश से वीजा के लिए ऑनलाइन आवेदन करने तथा वीजा शुल्क भी ऑनलाइन अदा करने में सहायता की है। मंजूरी मिलने के बाद आवेदक को ई-मेल मिलता है, जो उसे भारत की यात्रा के लिए अधिकृत करता है और इस मेल के प्रिंट आउट के साथ वह यात्रा कर सकता है।

केवल मनोरंजन, सैर-सपाटे, दोस्तों अथवा रिश्तेदारों से मिलने, इलाज के लिए अथवा कारोबारी यात्रा पर आने वाले विदेशी यात्री **पर्यटक ई-वीजा** प्राप्त कर सकते हैं। कूटनीतिक अथवा आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए यह सुविधा नहीं है।

पर्यटक ई-वीजा के पीछे मंशा पूरी तरह सूचना प्रौद्योगिकी से संचालित होने वाली व्यवस्था के जरिए सुरक्षा ढांचे को मजबूत करते हुए वैध यात्रियों की सहायता करना है। 2010 में आरंभ आगमन पर वीजा की व्यवस्था से यात्रियों को दिक्कत हुई थी क्योंकि उसमें सूचना प्रौद्योगिकी का कम समावेश था। नई व्यवस्था पूरी तरह डिजिटल, सरल एवं उपयोग करने में सुविधाजनक है, जिससे सभी दिक्कतें खत्म हो जाती हैं।

पर्यटक ई-वीजा का दायरा

आव्रजन विभाग ने ई-पर्यटक वीजा पर आने वाले यात्रियों की सहायता के लिए नौ हवाई अड्डों- दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, हैदराबाद, बेंगलूरु, कोच्चि, तिरुवनंतपुरम और गोवा में 72 समर्पित काउंटर स्थापित किए हैं। पर्यटक ई-वीजा की सुविधा अभी केवल नौ हवाई अड्डों पर उपलब्ध है लेकिन विदेशी भारत में किसी भी अधिकृत आव्रजन जांच चौकी से बाहर जा सकते हैं।

जनवरी 2015 तक इन 44 देशों के लिए ई-पर्यटक वीजा उपलब्ध था: ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कंबोडिया, कुक आईलैंड्स, जिबूती, फिजी, फिनलैंड, जर्मनी, गुयाना, इंडोनेशिया, इजरायल, जापान, जॉर्डन, केन्या, किरिबाती, लाओस, लक्जमबर्ग, मार्शल आईलैंड्स, मॉरीशस, मैक्सिको, माइक्रोनेशिया, म्यांमार, नौरू, न्यूजीलैंड, न्यू आईलैंड, नॉर्वे, ओमान, पलाऊ, फलस्तीन, पापुआ न्यू गिनी, फिलीपींस, कोरिया गणराज्य, रूस, सामोआ, सिंगापुर, सोलोमन आईलैंड्स, थाईलैंड, टोंगा, तुवालू, संयुक्त अरब अमीरात, यूक्रेन, अमरीका, वनुआतू, वियतनाम।

12 देशों (जापान, सिंगापुर, फिलीपींस, फिनलैंड, लक्जमबर्ग, न्यूजीलैंड, कंबोडिया, लाओस, वियतनाम, म्यांमार, इंडोनेशिया और

तालिका 2: पर्यटक ई-वीजा बनाम हाथ से तैयार आगमन पर वीजा के आंकड़े*

वर्ष	जनवरी	फरवरी	मार्च	जनवरी-मार्च
2014 (हाथ से तैयार वीजा)	1,903	1,980	1,958	5,841
2015 (पर्यटक ई-वीजा)	25,023 (1215)*	24,985 (1162)*	25,851 (1220)*	75,859 (1199)*

स्रोत- विपणन शोध विभाग, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

* गत वर्ष के समान माह की अपेक्षा प्रतिशत में वृद्धि

* आगमन पर हाथ से वीजा की प्रणाली में पूर्व-ऑथराइजेशन की आवश्यकता नहीं थी

दक्षिण कोरिया) के लिए **यात्री के लिए पूर्व ऑथराइजेशन की आवश्यकता के बगैर** आगमन पर वीजा हाथ से तैयार करने की व्यवस्था ई-पर्यटक वीजा आरंभ होने के बाद 27.01.2015 से बंद कर दी गई है।

ई-पर्यटक वीजा की सफलता

योजना लागू किए जाने से स्पष्ट संदेश जाएगा कि भारत अपने यहां यात्रा को आसान बनाने के लिए गंभीर है और अंतरराष्ट्रीय यात्रियों की आमद में भारत की हिस्सेदारी को वर्तमान के 0.64 प्रतिशत से बढ़ाकर 12वीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक 1 प्रतिशत करने में इस योजना का योगदान होगा।

जैसा कि ऊपर की तालिकाओं से स्पष्ट है, ईटीए आरंभ होने के बाद ई-पर्यटक वीजा लेने वाले पर्यटकों की संख्या में खासी वृद्धि हुई है। मार्च 2015 में कुल 25,851 पर्यटक ई-पर्यटक वीजा पर आए, जो आगमन पर वीजा की पिछली योजना के तहत मार्च 2014 में आए 1,958 पर्यटकों की अपेक्षा 1220.3 प्रतिशत अधिक थे। इसी प्रकार फरवरी 2015 में पर्यटक ई-वीजा पर 24,985 पर्यटक आए, जो पिछली योजना के अंतर्गत फरवरी 2014 में आए 1,980 पर्यटकों से 1161.9 प्रतिशत अधिक थे।

ईटीए आरंभ होने के बाद ई-पर्यटक वीजा लेने वाले पर्यटकों की संख्या में खासी वृद्धि हुई है। मार्च 2015 में कुल 25,851 पर्यटक ई-पर्यटक वीजा पर आए, जो आगमन पर वीजा की पिछली योजना के तहत मार्च 2014 में आए 1,958 पर्यटकों की अपेक्षा 1220.3 प्रतिशत अधिक थे।

जनवरी-मार्च 2015 के दौरान पर्यटक ई-वीजा पर कुल 75,859 पर्यटक आए, जो जनवरी-मार्च 2014 में आगमन पर वीजा के जरिए आए 5,841 पर्यटकों से 1198.7 प्रतिशत अधिक थे। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार 14 अप्रैल 2015 तक इस योजना के तहत सरकार लगभग 1.10 लाख वीजा जारी कर चुकी थी। इस वृद्धि का श्रेय ई-पर्यटक वीजा योजना को दिया जा सकता है, जो 40 से अधिक देशों के लिए चल रही है, जबकि आगमन पर पर्यटक वीजा की पिछली योजना केवल 12 देशों के लिए थी।

मार्च 2015 के दौरान भारत में ई-पर्यटक वीजा का उपयोग करने वाले 10 शीर्ष देशों का प्रतिशत में योगदान इस प्रकार है: अमरीका (33.25 प्रतिशत), जर्मनी (14.64 प्रतिशत), रूस (13.13 प्रतिशत), ऑस्ट्रेलिया (8.37 प्रतिशत), कोरिया गणराज्य (6.39 प्रतिशत), यूक्रेन (4.21 प्रतिशत), मैक्सिको (2.93 प्रतिशत), जापान (1.99 प्रतिशत), न्यूजीलैंड (1.91 प्रतिशत) और इजरायल (1.68 प्रतिशत)।

भारत में मार्च 2015 में ई-पर्यटक वीजा में विभिन्न हवाई अड्डों का योगदान इस प्रकार रहा: नई दिल्ली (47.32 प्रतिशत), मुंबई (18. 55 प्रतिशत), गोवा (12.03 प्रतिशत), बेंगलूरु (6.27 प्रतिशत), चेन्नई (5.60 प्रतिशत), हैदराबाद (2.93 प्रतिशत), कोलकाता (2. 87 प्रतिशत), कोच्चि (2.68 प्रतिशत) और त्रिवेंद्रम (1.84 प्रतिशत)।

ई-पर्यटक वीजा से संबंधित समस्याएं

हालांकि अब 40 से अधिक देशों के लिए ई-पर्यटक वीजा उपलब्ध है, लेकिन चीन, ब्रिटेन, स्पेन, इटली और मलेशिया जैसे कई देशों के लिए अभी इसे चालू किया जाना है, जो देश भारत में पर्यटन की दृष्टि से प्रमुख हैं।

इसी प्रकार यह सुविधा वाराणसी, गया, अहमदाबाद, जयपुर, तिरुचिरापल्ली जैसे कई अन्य हवाई अड्डों पर भी उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता है, जो भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन के प्रमुख केंद्र हैं। इससे उन 9 हवाई अड्डों से पर्यटकों का बोझ कम करने में भी मदद मिलेगी, जहां अभी यह सुविधा उपलब्ध है।

विभिन्न पक्षों और पर्यटकों की ओर से यह मांग भी आ रही है कि आगमन पर वीजा सुविधा के अंतर्गत कई बार प्रवेश की अनुमति होनी चाहिए ताकि भारत आने वाला पर्यटक पड़ोसी देशों की यात्रा भी कर सके। अनेक बार प्रवेश की अनुमति से विदेशी पर्यटकों के आगमन में वृद्धि होगी। इसी प्रकार पर्यटकों की सुविधा के लिए वीजा की अवधि को बढ़ाकर 2 महीने किए जाने की भी मांग है।

विदेशी पर्यटकों को बायोमीट्रिक्स से भी परेशानी हो रही है, जिसके लिए उन्हें अपने देश में किसी सुदूर स्थान तक जाना होता है और जिससे ऑनलाइन आवेदन का उद्देश्य ही खत्म हो जाता है। आगमन पर हाथ से वीजा बनाए जाने की व्यवस्था खत्म होने के बाद पर्यटक इस पर असंतोष जता रहे हैं। उनका कहना है कि नई योजना केवल ई-वीजा है, आगमन पर वीजा नहीं क्योंकि आगमन पर वीजा के लिए पहले से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होती।

निष्कर्ष: कुल मिलाकर ई-पर्यटक वीजा ने वीजा व्यवस्था उदार बनाने की पर्यटन उद्योग की 20 वर्ष पुरानी मांग पूरी करने में मदद की है। ईटीए की सूची में अमरीका, जर्मनी और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश हैं, जिनका हमारे यहां आने वाले विदेशी पर्यटकों में करीब 40 प्रतिशत योगदान है। हालांकि ई-पर्यटक वीजा विदेशी पर्यटकों के आगमन में वृद्धि का इकलौता स्रोत नहीं हो सकता, लेकिन विदेशी पर्यटकों के आगमन में तेजी लाने में इसका महत्वपूर्ण योगदान अवश्य रहेगा। ई-पर्यटक वीजा निश्चित रूप से भारत को पर्यटकों के लिए अधिक आकर्षक ठिकाना बनाता है।

विभिन्न पक्षों और पर्यटकों की ओर से यह मांग भी आ रही है कि आगमन पर वीजा सुविधा के अंतर्गत कई बार प्रवेश की अनुमति होनी चाहिए ताकि भारत आने वाला पर्यटक पड़ोसी देशों की यात्रा भी कर सके। अनेक बार प्रवेश की अनुमति से विदेशी पर्यटकों के आगमन में वृद्धि होगी। इसी प्रकार पर्यटकों की सुविधा के लिए वीजा की अवधि को बढ़ाकर 2 महीने किए जाने की भी मांग है।

संदर्भ:

1. भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय का विपणन शोध एवं सांख्यिकी विभाग
2. पाथ ब्रेकिंग इनीशिएटिव्स ऑफ गवर्नमेंट ऑफ इंडिया: पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार (पुस्तिका, फरवरी, 2015)
3. भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट: www.tourism.gov.in/
4. भारत सरकार की ऑनलाइन वीजा आवेदन वेबसाइट: https://indianvisaonline.gov.in
5. भारत सरकार के आव्रजन ब्यूरो की आधिकारिक वेबसाइट: www.immigrationindia.nic.in/
6. पत्र सूचना कार्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रेस विज्ञप्ति: www.pib.nic.in

IAS PCS

GS World

Committed to Excellence

सामान्य अध्ययन

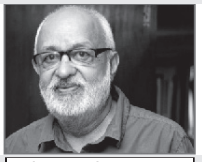

अशोक सिंह (Meridian Classes)	मणिकांत सिंह (The Study)	प्रो. पुष्पेश पंत (Retd. Prof. JNU)	प्रो. माजिद हुसैन (Pragati IAS)

आर. कुमार (Aastha IAS)	अभय कुमार (Synergy)	दीपक कुमार (GS World)	राजेश मिश्रा (Saraswati IAS)	वी. के. त्रिवेदी (GS World)	पंकज मिश्रा (Aastha IAS)	सुबोध मिश्रा (Aastha IAS)

Under the organised management of...

Niraj Singh *Divyasen Singh*
Managing Director *Co-ordinator*

IAS 2016
फाउंडेशन बैच
19 May 6:30 PM

प्रारम्भिक परीक्षा 2015 विशेष बैच

Geog.	- 30 घंटे + कक्षा टेस्ट
Ecology	- 12 घंटे + कक्षा टेस्ट
History	- 40 घंटे + कक्षा टेस्ट
Polity	- 22 घंटे + कक्षा टेस्ट
Economy	- 26 घंटे + कक्षा टेस्ट
Science	- 30 घंटे + कक्षा टेस्ट

समसामयिकी प्रत्येक रविवार।
अंतिम 2 टेस्ट पूर्ण रूप से UPSC पैटर्न पर।
शुल्कः 14500/-

छात्रावास सुविधा उपलब्ध, जीवंत पत्राचार पाठ्यक्रम
शुल्कः 12000/-

Venue: Vardhman Plaza, Nehru Vihar. **नामांकन जारी...**

Ph:. 011-27658013, 7042772062/63, 9868365322

Head Office:- 705, 2nd Floor, Mukherjee Nagar, Main Road, Delhi-9

YH-25/2015

भारत में पर्यटन विकास: चुनौतियां व संभावनाएं

कंचन शर्मा

भारत जैसे सांस्कृतिक, भौगोलिक विविधता वाले देश में पर्यटन के क्षेत्र में असीम संभावनाएं हैं। हालांकि इस रास्ते में समस्याएं भी कम नहीं हैं लेकिन ईमानदार प्रयास किए जाएं तो उन पर पार पाना कोई मुश्किल नहीं। हाल में राष्ट्रीय पर्यटन नीति ने जहां इस क्षेत्र में विकास के विविध फलकों को छुआ है वहीं विभिन्न सामाजिक संगठनों से लेकर कॉरपोरेट जगत तक की उत्साही भागीदारी ने उम्मीदों की नयी रोशनी फैलाई है। फिलहाल, वक्त आ गया है कि देश में पर्यटन की असीम संभावनाओं को भुनाने के लिए इसके विभिन्न अंशधारक एकजुट होकर समेकित प्रयास करें

भारत अपनी रंग-बिरंगी विविधताओं के कारण हमेशा से ही पर्यटकों का पसंदीदा स्थान रहा है। झरनों व नदियों से भरपूर प्राकृतिक खूबसूरती, अनेक तरह के पारंपरिक मेलों, खूबसूरत सामानों से सजे बाज़ार, विभिन्न मसालों से महकते भोजन, सदियों का इतिहास बताती ऐतिहासिक इमारतें, कहीं नदी का किनारा तो कहीं समुद्र की लहरें आदि अनेक ऐसे खूबसूरत पहलू हैं जो सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पर्यटन की दृष्टि से भारत के पास विशाल प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति है। भारत के मनोरम दृश्यों की प्रशंसा करते हुए मैक्स मुलर ने कहा कि यदि हमें संपूर्ण विश्व में किसी ऐसे देश कि खोज करनी हो जिसमें प्रकृति की सर्वाधिक संपदा, शक्ति और सौंदर्य निहित हो और जिसके कुछ भाग तो वस्तुत: धरती पर स्वर्ग हों तो मैं भारत का नाम लूंगा। मैक्स मुलर के शब्द यह प्रदर्शित करते हैं कि भारत के पास वह अद्भुत खजाना है जो शायद किसी अन्य देश के पास होना मुश्किल है। इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि हम इस अद्भुत विशेषता को अपनी शक्ति संवर्धन के रूप में बढ़ावा दें।

भारत के आर्थिक विकास के साथ पर्यटन के संबंधों पर दृष्टि डालें तो यह उभरकर आता है कि पर्यटन क्षेत्र का प्रत्यक्ष योगदान देश के सकल घरेलू उत्पाद में 3.7 प्रतिशत है, जबकि कुल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान 6.8 प्रतिशत है। देश के रोजगार में पर्यटन क्षेत्र का प्रत्यक्ष योगदान 4.4 प्रतिशत है, जबकि कुल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान 10.2 प्रतिशत है। पिछले तीन दशकों में देश में पर्यटन में भारी वृद्धि हुई है। वर्ष 2002 के मुकाबले वर्ष 2003-04 में भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में 13.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। विश्व-पर्यटन में भारत का हिस्सा वर्ष 2004 में 0.44 प्रतिशत था, जबकि 2005 में यह 0.49 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2005 में 25,172 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा इससे अर्जित की गई जबकि वर्ष 2004 में 21,828 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित की गई थी। पर्यटन देश के आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण कारक है। पर्यटन क्षेत्र के महत्व को इसी बात से समझा जा सकता है कि दुनिया के करीब डेढ़ सौ देशों में विदेशी मुद्रा की कमाई करने वाले पांच प्रमुख क्षेत्रों में पर्यटन भी एक है।

60 देशों में सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा की कमाई पर्यटन से ही होती है। योजना आयोग के एक आकलन के अनुसार प्रत्येक 10 लाख रुपये के निवेश पर पर्यटन क्षेत्र में 78 लोगों को रोजगार मिल सकता है। आयोग ने देश में कम दक्षता और अर्धदक्षता वाले श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने वाला दूसरा बड़ा क्षेत्र पर्यटन को माना है। वर्ष 2009 में पर्यटन से होने वाली विदेशी मुद्रा की आय 11.39 अरब अमरीकी डॉलर थी जो वर्ष 2010 में 24.6 प्रतिशत बढ़कर 14.19 अरब डॉलर और वर्ष 2011 में 16.7 प्रतिशत बढ़कर 16.56 अरब डॉलर हो गई। इसी प्रकार देश में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। वर्ष 2009 में जहां यह संख्या 51 लाख 70 हजार थी वहीं यह वर्ष 2010 में बढ़कर 57 लाख 80 हजार और वर्ष 2011 में 62 लाख 90 हजार हो गई।

लेखिका हेमवती नंदना बहुगुणा विश्वाविद्यालय, गढ़वाल, उत्तराखंड में सहायक प्रोफेसर हैं। विभिन्न शैक्षणिक शोध पत्रिकाओं में उनके शोध आलेख प्रकाशित होते रहे हैं। ईमेल: kannu.kanchansharma@gmail.com

राष्ट्रीय पर्यटन नीति

पर्यटन में विभिन्न तरह के व्यापक रोजगार सृजित करने की अपार क्षमता है। पर्यटन क्षेत्र को अधिक विकसित करने व देश के आर्थिक विकास में इसके योगदान को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 निर्मित की गई। इस नीति के अंतर्गत पर्यटन क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं मे वृद्धि तथा अन्य क्षेत्रों के साथ विकासात्मक संपर्क के माध्यम से आर्थिक एकीकरण मे तेजी लाने जैसे मुद्दों का समावेशन किया गया। इस नीति में पर्यटन क्षेत्र के विकास हेतु अनेक महत्वपूर्ण सुझाव व उपायों का उल्लेख किया गया जैसे–

- पर्यटन को आर्थिक विकास के एक माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित करना,
- रोजगार सृजन, आर्थिक विकास तथा ग्राम्य पर्यटन को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए पर्यटन के प्रत्यक्ष तथा बहुआयामी प्रभाव का दोहन,
- पर्यटन विकास के प्रमुख संचालक के रूप मे घरेलू पर्यटन पर ध्यान देना
- विश्व के फलते-फूलते व्यवसाय तथा भारत की अपार पर्यटन संभावना का लाभ उठाने के लिए भारत को वैश्विक ब्रांड के रूप में प्रतिष्ठित करना,
- निजी क्षेत्र को सरकार के साथ मिलकर कार्य करने के लिए उत्प्रेरक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल,
- यह सुनिश्चित करना कि भारत आने वाले पर्यटक भौतिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक रूप से संतुष्ट हो तथा 'भारत को भली भांति समझ परख सकें'।

इस नीति मे पर्यटन विकास हेतु प्रमुख सात क्षेत्रों पर भी बल दिया गया ये हैं– स्वागत, सूचना, सुविधा, सुरक्षा, सहयोग, संरचना और सफाई।

पर्यटन नीति 2002 के अतिरिक्त 12वीं पंचवर्षीय योजना में इस बात पर विशेष बल दिया गया पर्यटन क्षेत्र में कम-से-कम 12 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त की जाए। इसके अतिरिक्त पर्यटन क्षेत्र के समक्ष आने वाली चुनौतियों जैसे कौशल विकास, आधारभूत-ढांचागत विकास, विपणन तथा ब्रांड प्रोत्साहन, उत्पादों की व्यापक श्रेणी, उत्तरदायी पर्यटन, साफ-सफाई एवं स्वच्छता तथा विभिन्न गतिविधियों के बीच सुसंगतता आदि पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। इन चुनौतियों से निपटने व पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए 12वीं पंचवर्षीय योजना में 2.49 करोड़ नए रोजगारों के सृजन का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही पर्यटन मंत्रालय ने वर्ष 2010 में *हुनर से रोजगार* कार्यक्रम शुरू किया।

12वीं पंचवर्षीय योजना में इस बात पर विशेष बल दिया गया पर्यटन क्षेत्र में कम-से-कम 12 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त की जाए। इस योजना में 2.49 करोड़ नए रोजगारों के सृजन का लक्ष्य रखा गया है।

इस कार्यक्रम के तहत हाउस कीपिंग, बेकरी, ड्राइविंग, खाद्य उत्पादन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में दो महीने के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं जिनका पूरा खर्चा केंद्र सरकार उठाती है। इस कार्यक्रम के तहत अब तक लगभग नौ हजार लोगों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। पर्यटन मंत्रालय द्वारा किए गए अनेक प्रयासों के बावजूद आज भी विश्व पर्यटन में भारत की भागीदारी बहुत कम है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या में भारत की हिस्सेदारी मात्र 64 प्रतिशत है। दुनिया भर में पर्यटन से होने वाली आय में इस समय भारत की हिस्सेदारी मात्र 5.72 प्रतिशत है। इतनी कम भागीदारी व हिस्सेदारी के अनेक कारण हैं जो चुनौती के रूप में पर्यटन क्षेत्र के विकास में बाधा पहुंचाते हैं जिनका उल्लेख आगे किया जा रहा है।

अवसंरचना की जरूरत

निम्न स्तर की सड़क सेवा ना केवल पर्यटकों के लिए समस्या उत्पन्न करती है बल्कि देश की विश्व स्तरीय छवि को भी प्रभावित करती है। सड़क मार्ग अन्य सेवा अन्य सेवाओं से जैसे वायु सेवा व रेल सेवा की तुलना मे ज्यादा विस्तृत भूमिका निभाती है। भारत के कई स्थान ऐसे हैं जहां ना तो रेल जा सकती है व वायु सेवा का भी भरपूर प्रयोग नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में सड़क सेवा को और अधिक मजबूत किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए आवश्यक है कि सड़क परिवहन व राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्रालय इस प्रयास में पर्यटन मंत्रालय की मदद करें। इन तीनों के संगठित प्रयास से ही एक बेहतरीन सड़क सेवा को विकसित किया जा सकता है। उच्च स्तर की बसें, पर्यटकों के लिए

तालिका 1: पर्यटन क्षेत्र में सरकार द्वारा प्रमुख प्रयास

सरकार द्वारा किए प्रयास	वर्ष	परिणाम
संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक संगठन में सदस्यता	1946	शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति की वृद्धि के लिए सरकार व संबंधित संस्थाओं के कार्यों के बीच संपर्क अभिकरण।
पर्यटन नीति	2002	पर्यटन विकास हेतु प्रमुख सात क्षेत्रों स्वागत, सूचना, सुविधा, सुरक्षा, सहयोग, संरचना, सफाई के विस्तार व विकास पर बल, रोजगार सृजन व पर्यटन मे निजी क्षेत्र के सहयोग को बढ़ावा देना।
अतुल्य भारत अभियान	2002	इसमें हिमालय, वन्य, जीव, योग व आयुर्वेद की ओर पर्यटकों का ध्यान आकर्षित किया गया।
नवीन युवा नीति (मध्य प्रदेश)	2008	राज्य की पर्यावरण नीति के अनुसार पर्यावरण को हो रहे नुकसान और उसे रोकने के संबंध मे युवकों को प्रशिक्षित करना व पर्यटन में खेल की संभावनाओं को बढ़ावा देना।
हुनर से रोजगार कार्यक्रम	2010	हाउस किपिंग, बेकरी, ड्राइविंग, खाद्य उत्पादन आदि क्षेत्रों मे लगभग नौ हजार लोग प्रशिक्षित
'अतुल्य भारत' ब्रॉड लाइन	2010	देश में विदेश पर्यटन आगमन 2.35 मिलियन से बढ़कर 5.58 मिलियन हो गया।
बौद्ध सर्किट विकास योजना	2012	बौद्ध इतिहास, कला, संस्कृति, वास्तुशिल्प, खान-पान की पहचान व विस्तृत स्तर तक बढ़ावा
उदार वीजा प्रक्रिया	2014	43 देशों के लिए आगमन पर वीजा योजना का विस्तार व ऑनलाइन व्यवस्था का प्रबंध
दीपस्तंभों को पर्यटन के लिए खोला जाना	विचाराधीन	इस योजना के अंतर्गत 13 दीपस्तंभों जैसे–चेन्नई दीपस्तंभ, कन्याकुमारी दीपस्तंभ, फाल्स पाइंट, वेरावल आदि दीपस्तंभों द्वारा विश्वभर के पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकेगा।

विशेष सुविधाओं से लैस बसें, उच्च दर्जे के सड़क मार्गों का निर्माण, महिलाओं के बसों मे विशेष सुविधाएं, महिला पर्यटकों के लिए सुरक्षित बसें व टैक्सी आदि ऐसे पहलू है जिन पर सरकार द्वारा विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

सुरक्षा का प्रश्न

दूसरी महत्वपूर्ण समस्या पर्यटकों की सुरक्षा की है। आए दिन महिला सैलानियों के साथ बढ़ते यौन हिंसा के मामले पर्यटन क्षेत्र के लिए एक गंभीर समस्या है। साथ ही यह समस्या देश की प्रसिद्ध छवि को भी खराब करता है। इस समस्या से निपटने के लिए आवश्यक है कि सेना व पुलिस का एक विशेष दल बनाया जाए, उनके विशेष प्रशिक्षण दिया जाए। साथ ही एक हैल्पलाइन जो सरलता व सुगमता के साथ पर्यटकों मदद करने के लिए सदैव तत्पर

आवश्यक है कि सेना व पुलिस का एक विशेष दल बनाया जाए, उनके विशेष प्रशिक्षण दिया जाए। साथ ही एक हैल्पलाइन जो सरलता व सुगमता के साथ पर्यटकों मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहें। इस हैल्प लाइन सेंटर के संबंध स्थानीय पुलिस थानों व विशेष पुलिस दल के साथ घनिष्ठ होने चाहिए।

रहें। इस हैल्प लाइन सेंटर के संबंध स्थानीय पुलिस थानों व विशेष पुलिस दल के साथ घनिष्ठ होने चाहिए। हाल में कई ऐसी खबरें आई जिनमें पाया गया कि स्वयं पुलिस का रवैया पर्यटकों के प्रति अमानवीय रहा। आज इन परिस्थितियों के लिए आवश्यक है कि सेना व पुलिस के प्रशिक्षण में संवेदनशीलता को स्थान दिया जाए ताकि ऐसे पुलिस सेना का निर्माण किया जाए जो बल व संवेदना दोनों से युक्त हो।

स्वच्छता संबंधी समस्याएं

तीसरी समस्या जो व्यापक व स्थानीय स्तर से लेकर उच्च स्तर तक फैली हुई है वह है पर्यटक स्थलों के आसपास व्यापक गंदगी। पर्यटन क्षेत्र के विकास में यह समस्या ऐसी है जिसका निवारण किसी नीति का निर्माण कर देने या व्यापक स्तर पर आर्थिक मदद कर देने से नहीं हो सकता। यह समस्या ऐसी है जिसके लिए प्रत्येक नागरिक को साफ-सफाई के प्रति जागरूक होना होगा। इसके लिए स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर रेडियो, टेलीविजन व पोस्टर आदि के माध्यम से लोगों में सफाई के प्रति जागरूकता फैलाई जानी चाहिए। हाल में प्रधानमंत्री द्वारा चलाया गया स्वच्छ भारत अभियान इस ओर एक सराहनीय कदम है, आवश्यकता है इस प्रयास को व्यापक बनाया जाए। **अथिति देवो भव** का भाव प्रत्येक बालक में बचपन से ही डाला जाना होगा जिसमें विद्यालय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस अभियान में बड़ी संख्या में विद्यालय और महाविद्यालय के छात्रों को जोड़ने की कोशिश की जा रही है, ताकि नई पीढ़ी को इस समस्या के प्रति जागरूक किया जा सके।

पारंपरिकता पर जोर देने की आवश्यकता

आज के आधुनिक भारत में आज भी ऐसे प्रशिक्षण संस्थाओं की कमी है जो भारत की परंपरा, खान-पान, संस्कृति, नृत्य, शिल्प, पाक कला आदि संबंधित ज्ञान व प्रशिक्षण प्रदान करते हैं जबकि आज के समय की मांग है कि ऐसे युवक युवतियां तैयार की जाएं जो भारतीय परंपरा व संस्कृति से ओतप्रोत हों, और विदेशों से आने वाले पर्यटकों को संपूर्ण भारत के बारे मे बता सकें। इसके अतिरिक्त माउंटेनियरिंग, रटिंग, ट्रैकिंग, कुकिंग (भारतीय परंपरागत भोजन) वॉटर स्पोर्ट आदि संबंधी सर्टिफिकेट कोर्स भी चलाए जाने चाहिए। ये कोर्स एक सप्ताह से लेकर साल भर के भी हो सकते हैं। इस प्रकार के कोर्स ना केवल भारतीय शिल्प, पाक कला, संस्कृति, नृत्य आदि को बनाए रखने मे मदद करेंगे बल्कि कई सैलानियों को भी अपनी ओर आकर्षित करेंगे व साथ ही आर्थिक रूप से पर्यटन मंत्रालय को मदद करेंगे। जैसे मनाली मे माउंटनियरिंग इंस्टीट्यूट माउंटेनियरिंग, रटिंग, ट्रेकिंग से संबंधित बेसिक व एडवांस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करता है।

अभी 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान बौद्ध देशों से विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बौद्ध सर्किट के विकास की योजना बनाई है। इस योजना के तहत ऐसे स्थानों की पहचान और उनके महत्व को रेखांकित करने के लिए स्थानीय विशेषज्ञों और इतिहासकारों की मदद लेकर इन क्षेत्रों के बौद्ध इतिहास, कला, संस्कृति, वास्तुशिल्प और खान-पान की पहचान करके उन्हें विस्तृत स्तर पर प्रचारित प्रसारित करने का प्रयास किया जा रहा है। इन प्रयासों को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है।

सहज हो मेहमाननवाजी

सैलानियों के सम्मुख एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या यह भी आती है कि उनके पास ठहरने के लिए सुरक्षित व किफायती स्थानों के चयन को लेकर अधिक विकल्प नहीं होते। पर्यटन क्षेत्र को प्रभावित करने में यह समस्या भी प्रमुख भूमिका निभाती है। इस समस्या के निदान के लिए यह आवश्यक है कि सरकार पर्यटन क्षेत्र के विकास को प्रमुखता दे व ऐसे सुरक्षित होटलों, रैस्तरां, क्लब हाउस आदि के निर्माण में पर्यटन मंत्रालय की बढ़ चढ़कर आर्थिक मदद

आज के आधुनिक भारत में भी ऐसे प्रशिक्षण संस्थाओं की कमी है जो भारत की परंपरा, खान-पान, संस्कृति, नृत्य, शिल्प, पाक कला आदि संबंधित ज्ञान व प्रशिक्षण प्रदान करते हैं जबकि आज के समय की मांग है कि ऐसे युवक युवतियां तैयार की जाएं जो भारतीय परंपरा व संस्कृति से ओतप्रोत हों, और विदेशों से आने वाले पर्यटकों को संपूर्ण भारत के बारे मे बता सकें।

करें। यदि सरकार इस ओर प्रभावशाली कदम उठाती है तो ना केवल पर्यटकों के सफर को सुविधापूर्ण बनाया सकता है बल्कि पर्यटन से होने वाली आय को भी बढ़ाने की संभावना को मजबूत किया जा सकता है। इस समय भारत पर्यटन विकास निगम के नेटवर्क में अशोक होटल समूह के आठ होटल, पांच संयुक्त उद्यम होटल, एक रैस्तरां, 11 परिवहन इकाई, एक पर्यटक सेवा केंद्र, विमानपत्तनों एवं समुद्रपत्तनों पर नौ शुल्क-मुक्त दुकानें और दो ध्वनि एवं प्रकाश प्रदर्शन शामिल हैं। इसके अलावा निगम की ओर से भरतपुर में एक होटल और कोसी में एक रैस्तरां का प्रबंध भी किया जा रहा है। निगम इसके अतिरिक्त वैस्टर्न कोर्ट, विज्ञान भवन, हैदराबाद हाऊस और शास्त्री भवन, नई दिल्ली में नेशनल मीडिया प्रेस सेंटर में खान-पान सेवाओं का प्रबंध भी कर रहा है। इन प्रयासों

को विस्तृत किया जाना आवश्यक है ताकि भारतीय पर्यटन को विश्व में पहली पसंद के तौर पर स्थापित पर्यटन स्थल बनाया जा सके।

वीजा-प्रक्रिया में उदारता

विदेश से आने वाले पर्यटकों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक हो जाता है कि वीजा प्रक्रिया को उदार बनाया जाए। पर्यटन विकास को प्रभावित करने में यह समस्या ना केवल पर्यटन क्षेत्र को नुकसान देती है बल्कि विदेशी पर्यटकों के सफर को भी बाधाओं से भर देती है। विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद द्वारा जारी किए गए एक शोध अध्ययन के अनुसार वीजा सुधार प्रक्रिया के कारण भारत में यात्रा और पर्यटन उद्योग में 2015 मे 7.5 प्रतिशत कि वृद्धि होगी। इस परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि सरकार द्वारा वीजा प्रक्रिया को सरल उदार बनाया जाए ताकि विदेशी सैलानियों को भारत में आने के लिए आकर्षित किया जा सके। हालांकि वीजा प्रक्रिया पहले की अपेक्षा अधिक उदार बनाई जा चुकी है जैसे नवंबर 2014 मे वीजा संबंधी कई सुधार किए गए। इन सुधारों के तहत 43 देशों के लिए आगमन-सह-वीजा योजना का विस्तार किया गया है। अब वीजा के लिए लाइन लगाने की जरूरत नहीं है बल्कि ऑनलाइन आवेदन दे सकते हैं। वीजा प्रक्रिया को हालांकि उदार बनाने के लिए कई प्रयास किए जा चुके हैं परंतु अभी भी कुछ ओर प्रयास बाकी हैं जैसे *अतुल्य भारत*! को पुन: प्रचारित किया जाना आवश्यक है।

पर्यटन मंत्रालय प्रोत्साहन कार्यक्रम चलाए व ऐसे मंच प्रदान करे जहां स्थानीय स्तर की संस्कृति व भोजन को सम्मान प्रदान किया जाए। भारत में कई ऐतिहासिक स्थल ऐसे हैं जो खराब स्थिति में है उनकी मरम्मत व देखरेख हेतु आज यह आवश्यक है कि निजी व सरकारी क्षेत्र मिलकर प्रयास करें। एक मिसाल कायम करते हुए, भारतीय पर्यटन विकास निगम ने आगे बढ़कर कुतुब मीनार की देख-रेख करने की जिम्मेदारी ली है।

स्थानीय पहचान को विस्तार

पर्यटन की दृष्टि से भरपूर भारत की एक अन्य समस्या यह भी है कि भारत में अभी भी कई स्थान ऐसे हैं जो पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक व प्राकृतिक दृष्टि से मनोरम हैं परंतु इन स्थानों को प्राथमिकता की सूची में कोई स्थान नहीं दिया गया। उदाहरण के तौर पर उत्तराखंड में कई तीर्थ स्थान भूमिया मंदिर, मनु मंदिर व मेले जैसे सोमनाथ मेला आदि ऐसे हैं जो स्थानीय स्तर पर प्रसिद्ध परंतु इन क्षेत्रों को राज्य सरकार का समर्थन नहीं मिल पाने के कारण से राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी मजबूत स्थिति नहीं बना पाए हैं। इसी प्रकार उत्तराखंड का स्थानीय फल हिसयालु, भोजन -झुंगरे की खीर, मंडुए की रोटी आदि को विस्तृत स्तर पर फैलाया नहीं जा सका है। इसी प्रकार भारत के कई प्रदेश ऐसे हैं जिनके स्थानीय भोजन को राष्ट्रीय स्तर तक भी सम्मान नहीं मिल पाया है।

आवश्यकता है इस ओर पर्यटन मंत्रालय प्रोत्साहन कार्यक्रम चलाए व ऐसे मंच प्रदान करें जहां स्थानीय स्तर की संस्कृति व भोजन को सम्मान प्रदान किया जाएं। भारत में कई ऐतिहासिक स्थल ऐसे हैं जो खराब स्थिति में है उनकी मरम्मत व देखरेख हेतु आज यह आवश्यक है कि निजी व सरकारी क्षेत्र मिलकर प्रयास करें। एक मिसाल कायम करते हुए, भारतीय पर्यटन विकास निगम ने आगे बढ़कर कुतुब मीनार की देख-रेख करने की जिम्मेदारी ली है। अब तेल और प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी) ने भी आगे कदम बढ़ाते हुए 6 स्मारकों-ताजमहल, लाल किला, एलीफेंटा की गुफाओं, एलोरा की गुफाओं, महाबलीपुरम और गोलकुंडा के किले की देखभाल करने का जिम्मा लिया है। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में करीब 120 स्मारकों की पहचान इस रूप में की गई है, जिनकी देख-रेख की जिम्मेदारी कॉरपोरेट सेक्टर को दी जा सकती है।

उपसंहार

उपरोक्त समस्याओं का समाधान करने के पश्चात निश्चित तौर पर पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी होने की संभावना है। एसोचैम और यस बैंक द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2011 से वर्ष 2019 के दौरान देश के पर्यटन क्षेत्र की विकास दर 8.8 प्रतिशत रहेंगी। सर्वेक्षण का मानना है कि इस दर से विकास की बदौलत एक दशक में भारत पर्यटन के क्षेत्र में दूसरी बड़ी ताकत बन जाएगा। 12वीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक दुनियाभर में पर्यटकों की आवाजाही में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाने की योजना है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए पर्यटन के क्षेत्र में लगभग 12.4 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धिदर हासिल करनी होगी।

12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान पर्यटन के क्षेत्र में लगभग ढ़ाई करोड़ रोजगार के अवसर सृजित करने का लक्ष्य रखा गया है। यदि इस लक्ष्य को पा लिया जाता है तो निश्चित तौर पर रोजगार व आर्थिक विकास की बुलंदियों को प्राप्त किया जा सकता है।

पर्यटन को भारत के विकास की बढ़ी ताकत बनाने के लिए आवश्यक है कि पर्यटन विकास में सहयोग देने वाले केंद्रीय संगठन जैसे– पर्यटन मंत्रालय, भारतीय पर्यटन तथा यात्रा प्रबंध संस्थान, राष्ट्रीय होटल प्रबंध तथा खान-पान टेक्नोलॉजी परिषद्, भारतीय पर्यटन विकास निगम लिमिटेड, भारतीय स्कीइंग तथा पर्वतारोहण संस्थान और राष्ट्रीय जल-क्रीड़ा संस्थान आदि का संयुक्त सहयोग हो। इन प्रयासों के अतिरिक्त पर्यटन विश्व विद्यालय खोले जाने की संभावना को शक्ति प्रदान की जानी चाहिए। परंतु यहां इन समस्त संभावनाओं व प्रयासों के दौरान यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि पर्यटन विकास पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

पर्यटन को भारत के विकास की बढ़ी ताकत बनाने के लिए आवश्यक है कि पर्यटन विकास में सहयोग देने वाले केंद्रीय संगठन जैसे– पर्यटन मंत्रालय, भारतीय पर्यटन तथा यात्रा प्रबंध संस्थान, राष्ट्रीय होटल प्रबंध तथा खान-पान टेक्नोलॉजी परिषद्, भारतीय पर्यटन विकास निगम लिमिटेड, भारतीय स्कीइंग तथा पर्वतारोहण संस्थान और राष्ट्रीय जल-क्रीड़ा संस्थान आदि का संयुक्त सहयोग हो।

पर्यावरण व पर्यटन के मध्य जिस प्रकार का द्वंद है उसे भी समझा जाना आवश्यक है व पर्यटन विकास संबंधी प्रत्येक निर्णय व प्रयास द्वारा इको पर्यटन को प्राप्त किए जाने का लक्ष्य रखा जाना चाहिए। इन प्रयासों के द्वारा ही पर्यावरण के प्रति संवेदशील, रोजगार व आर्थिक विकास करने वाले तथा भारतीय संस्कृति व परंपरा को उत्कृष्ट करते भारतीय पर्यटन क्षेत्र को विश्व का सबसे पसंदीदा पर्यटन क्षेत्र बनाया जा सकता है। ❑

पर्यटन उद्यमिता: संभावित क्षेत्र

जी. अंजनेय स्वामी

पर्यटन अपने आप में एक अप्रतिम उत्पाद है। इसलिए इसमें पैकेजिंग और विपणन की तमाम संभावनाएं मौजूद हैं। चूंकि यह क्षेत्र अभी भारत में व्यवस्थित रूप से विकसित हुआ नहीं है इसलिए उद्यमियों के लिए एक खुला आकाश मौजूद है। एक तरफ तो इस क्षेत्र में अभिनव प्रयोग कर पर्यटकों को लुभाया जा सकता है तो दूसरी तरफ उनके लिए जरूरी सहायताओं को भी कारोबार का रूप दिया जा सकता है। कुछ पर्यटन पोर्टलों ने इस दिशा में आधी-अधूरी शुरुआत की है। ऊर्जावान उद्यमी इस रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए आगे आ सकते हैं

आर्थिक विकास के लिए समाधान की खोज हेतु अपने शोधों में अर्थशास्त्रियों और नीति निर्माताओं ने आम लोगों की आतंरिक शक्ति और उद्यमिता कौशल को संकुचित कर देखा है। संसाधनों की जो भी आपूर्ति और संभावना हो, उनमें तब तक किसी भी तरह का परिवर्तन संभव नहीं है, जब तक कि इन सभी संसाधनों को किसी उद्यमी द्वारा प्रयोग में नहीं लाया जाता है। इस लिहाज से एक उद्यमी को एक परिवर्तन कारक एवं उत्प्रेरक के रूप में वर्णित किया जाना ही उचित होगा। उद्यमियों को उनकी दूरदृष्टि, प्रेरणा और प्रतिभा के कारण जाना जाता है, जो कि अवसरों को पहचानने और समाज के कल्याण के लिए उनका दोहन करने में दक्ष होते हैं। उद्यमी संसाधनों के लिए आर्थिक मूल्य प्रदान करते हैं। पीटर ड्रकर (2009) के अनुसार हर खनिज तब तक एक चट्टान और हर पौधा तब तक एक खरपतवार ही है जब तक कि कोई उसका प्रयोग नहीं खोज लेता है। वे अपने अथक उद्यम से देश के भौतिक कल्याण में वृद्धि करते हैं। *जोर्ज गिल्डर के अनुसार* हम सभी अपने जीवन यापन और प्रगति के लिए उन विशेष पुरुषों/महिलाओं के साहस और रचनात्मकता पर निर्भर हैं जो जोखिम उठाकर हमारी समृद्धि में वृद्धि करते हैं।

पर्यटन एवं आर्थिक विकास में उद्यमिता

जैसा कि **मेयर और बाल्डविन** कहते हैं जब आर्थिक स्थितियां अनुकूल होती हैं तो विकास एक प्राकृतिक परिणाम के स्वरूप स्वत: ही नहीं होता है, बल्कि उसके लिए एक उत्प्रेरक एवं कारक की आवश्यकता होती है और इसके लिए एक उद्यमिता की गतिविधि की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में यह ध्यान दिया जा सकता है कि एक उद्योग के रूप में पर्यटन आरंभ हो चुका है और पूरे ही विश्व में एक प्रभावी दर के साथ बढ़ रहा है। सर्विस सेक्टर में, पर्यटन एक बेहतर विकल्प साबित हुआ है, और इसके लिए कम पूंजी और व्यापार स्थापित करने की सुगमता जैसे गुणों को आभार व्यक्त किया जा सकता है।

अगर हम पर्यटकों को प्रदान की जाने वाली विविध सेवाओं को देखते हैं तो पर्यटन क्षेत्र में उद्यमिता की संभावनाएं पर्यटन क्षेत्र में अपेक्षाकृत रूप से अधिक नजर आती हैं। पर्यटन उद्यमिता में इस प्रकार वे सभी व्यावसायिक गतिविधियां सम्मिलित हैं जो पूरे पर्यटन क्षेत्र एवं उससे संबंधित क्षेत्रों का अंग है। इनमें परिवहन, होटल एवं कैटरिंग, ट्रेवल एजेंसी (यात्रा संस्थाएं), टूर संचालक, मनोरंजन, कला और हस्तशिल्प के कार्यों का उत्पादन और विपणन, सम्मलेन/समारोह, उद्यानों एवं अन्य मनोरंजन स्थानों का प्रबंधन आदि सम्मिलित होते हैं।

पर्यटन उद्यमिता पर वर्तमान साहित्य की त्वरित समीक्षा में कई शोधकर्ताओं के अवधारणात्मक एवं प्रयोग सिद्ध कार्य सम्मिलित हैं, जैसे मेयर एवं बाल्डविन (1957), डेविड सी माइककलेंड (1961), जोर्ज गिल्डर (1984), टेड सिल्बरबर्ग (1995), एलिसन मोरिसन

लेखक पुदुचेरी केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रबंधन अनुभाग में पर्यटन के वरिष्ठ प्राध्यापक हैं। उन्होंने आंध्र विश्वविद्यालय से परास्नातक एवं डॉक्टरल की उपाधि हासिल की है। उनके पास 35 वर्षों का शिक्षण एवं शोध का अनुभव है। डॉ. स्वामी पर्यटन अध्ययन विभाग के यूजीसी-एसपी: डीआरसी लेवल के समन्वयक हैं। उन्हें पर्यटन अध्ययन में एक शिक्षक, शोधार्थी एवं प्रशिक्षक के रूप में जाना जाता है। वह उद्यमिता एवं संबद्ध विषयों पर विख्यात लेखक हैं और कई भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में उनके शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। ईमेल: anjaneya.dts@pondiuni.edu.in, anjaneyag@yahoo.com

(1999), बेजबरुआ (1999), हीदी देहलस एवं कैरीन ब्रास (1999), एंड्रयू टर्नबुल (2002), रसेल एंड बिल फोकनर (2004), स्टीफेन बॉल (2005), मेलोडी बोथा एटएल (2006), नाथन के ऑस्टिन (2007), पीटर ड्रकर (2009), रोसिलिन स्टीफेन जे पेज एंड जोवो एटेलजेविक (2009), अनजान भुइयां (2010), क्लॉस वीयरमीर व अन्य (2010) राजेंद्र पाल (2010), ब्रांदन कोने (2012) अमाटा म्वालो मथाइस (2013) एवं अन्य, जिन्होंने पर्यटन और संबंधित क्षेत्रों में उद्यमिता के विविध आयामों की जांच की। इनमें से अधिकतर अध्ययन क्षेत्र आधारित हैं और अपने संबंधित क्षेत्रों/देशों में पर्यटन में उद्यमिता गतिविधियों पर केंद्रित हैं।

अभिनव पर्यटन उत्पाद: भारतीय पर्यटन की भावी प्रगति का प्रमुख आधार

यह तथ्य कि अभिनव पर्यटन उत्पाद ही भारतीय पर्यटन की सफलता और स्थिरता में मुख्य भूमिका रखते हैं, को किसी भी प्रकार से विस्तृत रूप से बताए जाने की आवश्यकता नहीं है। पर्यटन के वृहद रूप से स्वीकृत किए गए लाभों के बावजूद भारतीय पर्यटन को अगले स्तर तक ले जाने के लिए सरकार और विकास संस्थाओं के द्वारा उठाए गए कदम पर्याप्त नहीं हैं। पिछले कई दशकों में बहुत अधिक प्रख्यात पर्यटन गंतव्यों को विकसित नहीं किया गया है। जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान पर्यटन गंतव्यों पर सड़क नेटवर्क, परिवहन विकल्प, दूरसंचार सुविधाओं में सुधार के साथ दिन-ब-दिन दबाव बढ़ता जा रहा है और पर्यटन उपभोक्ताओं की आय में भी जीवनशैली व प्राथमिकताओं से इतर अत्यधिक वृद्धि देखी गई है। इसलिए, इस समय नए पर्यटन गंतव्यों व उत्पादों के विकास के द्वारा पर्यटन के प्रति आकर्षित करने हेतु उचित समय है। निम्न कुछ नए कदमों को उठाकर भारतीय पर्यटन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है।

विशिष्ट/रहस्यमयी स्थानों का प्रचार

जहां एक ओर पश्चिम में उन विशिष्ट स्थानों का बहुत ही उत्साह से एवं तेजी से प्रचार किया जाता है, भारत में अभी भी ऐसे रहस्यमयी गंतव्यों का पता लगाना है और उन्हें बेचना है। उदाहरण के लिए आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले में **महानंदी** पर में एक तालाब है, जहां पर पूरे वर्ष में जल का स्तर एक समान होता है। यहां पर तालाब 1.5 मीटर (5 फीट) गहरा है। इस तालाब के बारे में रहस्य यह है कि आखिर इस तालाब में जल कैसे प्रवेश करता है और हमेशा एक समान स्तर का कैसे बना रहता और एकदम स्वच्छ कैसे बना रहता है। जल का इतना स्वच्छ रहना कि यदि उसमें एक भी सिक्का पड़ा हो तो वह भी शीर्ष से दिखाई दे, इस रहस्य को और गहरा बनाता है।

ऐसे रोचक और रहस्यमयी गंतव्य पर्यटन परिप्रेक्ष्य से असीम संभावनाएं प्रदान करते हैं। उद्यमिता के लिए इन संसाधनों का दोहन आवश्यक है। उत्पाद संकल्पना, सुदृढ़ अभिगम्यता, आवास व अन्य पर्यटन अनुकूल सुविधाओं को भी व्यवस्थित किया जाना है। उन संबंधित स्थानों में लोकप्रिय इन गंतव्यों को एक वृहद कैनवास में रखा जा सकता है जैसे उस गंतव्य के आस पास का रहस्य और उत्सुकता आदि तथा साथ ही उस स्थान की लोक-कथाएं उन स्थानों को विशिष्ट विक्रय अनुपात (USP) प्रदान करती हैं। इस प्रकार यह सही समय है जब इन जैसे अपरंपरागत पर्यटन उत्पादों पर जोर डाला जाए और इन्हें राष्ट्रीय/राज्य पर्यटन नीतियों में सम्मिलित किया जाए।

कुछ कम लोकप्रिय स्थानों का प्रचार

देश के आकर और विविधताओं को देखते हुए असीम संभावनाओं के साथ कई ऐसे आकर्षण हैं जिनका दोहन किए जाने की और उन्हें देश के पर्यटन मानचित्र पर लाए जाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले में पक्षी अभयारण्य और पुलिकत झील (चेन्नई से 150 किलोमीटर की दूरी पर), बढ़िया शिविर सुविधाओं के साथ कर्नाटक में मुप्पेन की प्राकृतिक खूबसूरती, पराम्बिकुलम, प्रसिद्ध चोटियों के लिए जैव-पर्यटन, तमिलनाडु में थेनी जिले में मेघामलाई-पर्वतारोहियों के लिए एक स्वर्ग है, पर इन्हें पर्यटन क्षेत्र में बहुत अधिक लोग नहीं जानते हैं और यहां पर केवल *विशेष रुचि वाले पर्यटक* ही आते हैं। इसी प्रकार आंध्र प्रदेश में विशाखापत्तनम के पास लम्भासिंग्नी नामक विशेष स्थान को बताया जाना चाहिए जहां पर हर वर्ष हिमपात होता है। यह जाहिर है कि कई ऐसे स्थान हैं जो ध्यान दिए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अभिगम्य/सुगम पर्यटन

यह विडंबना ही है कि विनिर्माण क्षेत्र, सेवा क्षेत्र के उत्पादों की तुलना मेंरू विशेष तौर पर पर्यटन क्षेत्र में अभी भी विकलांग व्यक्तियों की विशेष आवश्यकताओं को पहचाना जाना और उन्हें समझना बाकी है। जहां एक ओर देश और कई अन्य उत्पादक क्षेत्र 'समेकित प्रगति' पर अथक रूप से जोर दे रहे हैं, तो वहीं पर्यटन क्षेत्र इस संबंध में कहीं विभिन्न आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों की चिंताओं के प्रति कहीं पीछे पिछड़ता हुआ नजर आ रहा है। यह ध्यान दिया जा सकता है कि अपने पसंद के कई नए स्थानों पर जाना, उनके बारे में और जानना और अनुभव करना, मानव की मूल प्रवृत्ति है। यह देखना बहुत ही दुखद है कि समाज के एक बड़े वर्ग, विकलांग व्यक्तियों जिनकी संख्या लगभग 60 करोड़ है, की विशिष्ट आवश्यकताओं को एक सुनियोजित तरीके से संज्ञान में लिया ही नहीं जाता है। समानता और सामाजिक न्याय जैसे सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ती करने के अतिरिक्त, बाज़ार का आकार भी उत्पाद संकल्पना और विकास के मामले में नए निवेश के लिए तमाम नई संभावनाओं को जन्म देता है! यूरोपियन नेटवर्क फॉर एक्सेसिबल टूरिज्म (ईएनएटी) के अनुसार, सुगम पर्यटन में कई प्रकार की आधारभूत सुविधाओं का निर्माण या संशोधन सम्मिलित होता है जैसे: *अवरोध मुक्त गंतव्य, परेशानी मुक्त परिवहन, उच्च गुणवत्ता सेवाएं, गतिविधियों और प्रदर्शनियों में प्रतिभागिता, बुकिंग प्रणालियों और अन्य सेवा संकलन कार्यों के संबंध में लेनदेन प्रबंधन व अभिगम्यता में सुविधा।* आज इंटरनेट के कारण, ऑनलाइन पर्यटन नियोजन और बुकिंग समाज के हर वर्ग के लिए अत्यधिक सुगम हो गई है। हालांकि यात्रा टर्मिनल एवं गंतव्यों के बीच में सुविधाएं अपेक्षा अनुरूप नहीं है।

गरीबोन्मुख पर्यटन

कई स्थानों पर जाना, लोगों से मिलना, प्राकृतिक द्रश्यों का आनंद उठाना और तमाम तरह के व्यंजनों का लुत्फ उठाना मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है और इसमें आर्थिक स्थिति, मूल निवास, लिंग या आयु से कोई अंतर नहीं

आता है। हालांकि जाने या अनजाने, भारतीय पर्यटन में समय के साथ शहरी रईसों और कुलीन वर्ग की प्रतिभागिता में ही वृद्धि हुई है। अगर यही रुझान जारी रहते हैं तो, कोई अचरज नहीं कि इसे 'कुलीनों का पर्यटन, कुलीनों के द्वारा और कुलीनों के लिए' कहा जाने लगेगा'!

पर्यटन, आवास एवं अन्य सुविधाओं के संबंध में पर्यटन आधारभूत संरचना में काफी विकास के बाद भी, यह दुर्भाग्य ही है कि ग्रामीण और अर्ध शहरी स्थानों से भारतीय समाज का एक विशाल वर्ग पर्यटन अनुभवों से वंचित है। यह विडंबना ही है कि जहां निर्माण क्षेत्र के परिणाम/उत्पाद बहुत ही प्रभावी रूप से सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के हर वर्ग तक बहुत ही सुगमता से पहुंच रहे हैं, तो वहीं एक उत्पाद के रूप में पर्यटन को *समेकित रूप/आकार* के रूप में प्रचारित किया जाना शेष है!

पर्यटन के लिए ग्रामीण एवं अनदेखे बाज़ार की संभावना को प्रहलाद कक्कड़ के लोकप्रिय विषय वस्तु 'पिरामिड की तली में भविष्य' से बेहतर और कोई वर्णित नहीं कर सकता है! इसलिए अब समय आ गया है कि ग्रामीण बाज़ारों का भी रुख किया जाए। दृष्टिकोण में परिवर्तन, एक वहनीय लागत में पर्यटन उत्पाद विकास, ग्रामीण जनता के प्रतिभागिता और संलग्नता के लिए एक स्वागत आग्रह कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जिनका समाधान होना चाहिए। पूरे देश में कुछ लोकप्रिय तीर्थयात्रा केंद्र की अपेक्षा है, अन्य सभी पर्यटन उत्पाद अपेक्षाकृत रूप से इस विशाल पर्यटन बाज़ार से गायब हैं।

विद्यार्थियों के लिए साहसिक पर्यटन पैकेज

यह भी बहुत ही आश्चर्यनजक है कि किसी भी प्रमुख यात्रा परिचालक/यात्रा पोर्टल स्कूल/कॉलेज के विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप मिश्रित रूप से अपने उत्पाद नहीं हैं। यह प्रत्येक व्यक्ति के संज्ञान में है कि आजकल लगभग हर शिक्षण संस्थान छोटी साहसिक यात्रा/अध्ययन यात्राएं/उद्योग दौरों का आयोजन करता है। देश, संस्थानों की संख्या और विद्यार्थियों के बढ़ने नामांकन को देखते हुए, बाज़ार का आकार बहुत ही बड़ा है और यह एक सुनियोजित तरीके से विकसित होने की प्रतीक्षा में है। इस बाज़ार में कुछ ही व्यक्तियों के द्वारा सेवाएं प्रदान की जा रही हैं, और वह भी एक गैर-पेशेवर तरीके से जो अक्सर दौरों के दौरान विद्यार्थियों की सुरक्षा की कीमत पर होती हैं। इनका सबसे दुखद मामला था जब हैदराबाद से आए हुए इंजीनियरिंग के 24 विद्यार्थियों को लारजी हाइड्रो इलेक्ट्रिक परियोजना से आने वाली बीस नदी की तीव्र धारा के प्रवाह में आकर अपनी असमय काल कलवित होना पड़ा था। इसी बीच उनके साथ धोखाधडी और शोषण के मामले भी नए नहीं हैं। विद्यार्थियों के प्रतिनिधियों की सहायता से यात्रा की योजना बनाने वाले शिक्षकों के पास भी विश्वसनीय और आसान यात्राक्रम, लागत प्रभावोत्पादकता और किसी भी अप्रिय स्थिति में बचाव योजना के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई पेशेवर दक्षता नहीं होती है। जिसके परिणामस्वरूप कई बार विद्यार्थियों के समूह बीच में छूटे हुए बस अड्डों और रेलवे स्टेशन पर फंस जाते हैं और फिर तनाव से भरे चेहरे आम दृश्य होता है।

मानवनिर्मित पर्यटन संसाधनों का प्रचार

पूर्वी और पश्चिमी तटीय रेखाओं के बीच में हजारों किलोमीटर की लंबी तटीय रेखा होने के बावजूद यह देखना बहुत ही दुखद है कि समुद्रतट पर्यटन के बारे में बहुत अधिक सुना नहीं गया है। केवल पश्चिमी तट पर गोवा और देश में पूर्वी तट पर पुरी समुद्रतट के अतिरिक्त, हम ऐसे किसी भी समुद्र तट का नाम नहीं बता सकते हैं, जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हो। वास्तविकता में, तटीय रेखा के साथ कई प्रकार के समुद्रतट हैं, जो स्थानीय/क्षेत्रीय बाज़ारों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। कम निवेश के साथ कम से कम आधे दर्जन विश्वस्तरीय समुद्रतट गंतव्यों के प्रचार के लिए अत्यधिक संभावनाएं हैं। जल क्रीडा भी एक अन्य पर्यटन उत्पाद है जिसे पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

थीम पार्क/मनोरंजन पार्क

थीम पार्क एवं मनोरंजन पार्क मानव निर्मित पर्यटन आकर्षण हैं, हालांकि हर आयु एवं प्रकार के पर्यटकों का मनोरंजन करने के लिए बहुत ही अधिक पूंजी लागत की आवश्यकता होती है। वर्तमान स्थिति में, यह कोई अनुमान ही लगा सकता है कि अगर डिज्नीलैंड के समान नहीं पर उसके जैसा ही कोई थीम पार्क बनाना हो तो देश में कितने वर्ष इसके निर्माण में लग जाएंगे! जब अमरीका का यूनिवर्सल स्टूडियो अपने हॉलीवुड बंधन का लाभ उठा रहा है, और लगभग इतिहास और विस्तार में समान रूप से विख्यात मुंबई में बॉलीवुड स्टूडियो और चेन्नई और हैदराबाद में स्टूडियो को अभी महत्वपूर्ण कदम उठाने हैं। इस संबंध में कोई भी अभियान फिल्मों के प्रति जुनूनी जनता के बीच तुरंत ही लोकप्रिय हो जाएगा। इस संबंध में हैदराबाद में रामोजी फिल्म सिटी द्वारा निभाई गई भूमिका की हर संभव सराहना करनी चाहिए। मुंबई एवं चेन्नई भी अपने फिल्म स्टूडियो और समृद्ध फिल्म विरासत का लाभ उठा सकते हैं।

कार्य करने का समय

ये सभी अभिनव व्यापारिक अवसर पर्यटन के परिप्रेक्ष्य से शानदार संभावनाएं प्रदान करते हैं। इस संसाधनों का दोहन एक उद्यमी उत्प्रेरणा एवं उत्साह पर और एक ऐसी संस्कृति पर निर्भर करती हैं जहां दोनों बांह पसार कर अतिथि का स्वागत 'अतिथि देवो भव' की भावना के साथ किया जाता है! उत्पाद संकल्पना, सुदृढ़ अभिगम्यता, आवास व अन्य पर्यटन अनुकूल सुविधाओं को भी बेहतर/सुनियोजित किए जाने की आवश्यकता है। प्रत्येक स्थान का अपना एक सौंदर्य एवं आकर्षण होता है, जिसे बेचा जाना चाहिए। उसके विशिष्ट विक्रय अनुपात (USP) को पहचानना एक कला है और उद्यमिता विदग्धता का कार्य है। इस प्रकार यही उचित समय है जब इस गैर-परंपरागत पर्यटन उत्पादों पर जोर दिया जाए और उन्हें प्रचार और विकास के लिए राष्ट्रीय/राज्य पर्यटन नीतियों में सम्मिलित किया जाए।

संदर्भ

1. **एलिसन मोरिसन (1999):** इंटरप्रिनरशिप इन द होस्पिटेलिटी, टूरिज्म - लेजर इंडस्ट्री, एल्सवियर, ऑक्सफोर्ड, यूके
2. **अमाता म्वालो मैथिस (2013):** इंटरप्रिनरशिप इन टूरिज्म, लैम्बर्ट एकेडमिक पब्लिशिंग, यूके
3. **एंड्रू टर्नबुल (2002):** ड्रीम्स, स्कीम्स एंड कैसल्स: कैन इंटरप्रिन्युरियल इनपुट बेनिफिट हेरिटेज टूरिज्म रिसोर्सेस? एमसीबी यूपी लिमिटेड, यूके
4. **अनजान भुइयां (2010):** टूरिज्म इंटरप्रिनरशिप इन असम, वीडीएम वर्लग, जर्मनी
5. **बेजबरुआ (1999):** टूरिज्म करेंट सिनेरियो एंड फ्यूचर प्रोस्पेक्ट्स
6. **ब्रैंडन कोनी (2012):** वेरेन पीटर टॉमलिंसन, एमेजन डिजिटल साउथ एशिया सर्विसेस
7. **जोर्ज ग्लाईडर (1984):** द स्पिरिट ऑफ इंटरप्राइस, साइमन एंड शुस्टर, न्युयोर्क
8. **हीदी डाह्लास एंड केरिन ब्रास (1999):** टूरिज्म एंड स्माल इंटरप्रिनरर, कोग्जिनेट कम्युनिकेशन, न्यूयॉर्क

(शेषांश पृष्ठ 44 पर)

CIVIL SERVICES INTERVIEW
CHANAKYA'S MOCK INTERVIEW

under the direction and personal care of

Success Guru AK Mishra

- Each mock interview conducted in simulated conditions in a **Five Star Hotel.**
- Interview board consists of members having real experience of Civil Services Interview including top retired **IAS, IFS, IPS, IRS** Officers, Senior Psychoanalyst and **Success Guru AK Mishra.**
- Digital video recording of each mock interview and analysis by experts.
- Individual interaction and discussion with experts.

In the past, most of the serious candidates trained by us have scored more than 70% marks in their interviews.

Venue: Jaypee Siddharth, Rajendra Place, New Delhi

Fee for each mock interview ₹ 500.

Commences one week after mains results

For Registration.
Call: 09650299662/3/4

CHANAKYA™
IAS ACADEMY
Nurturing Leaders of Tomorrow

A Unit of CHANAKYA ACADEMY FOR EDUCATION AND TRAINING PVT. LTD.

Central Enquiry: +91 11 65428647, +91 9971989980/81, +91 9811671844/45

HO/South Delhi Centre: 124, Satya Niketan, Opp. Venkateshwara College, Near Dhaula Kuan, New Delhi-21, Ph.: 011-64504615, Mob.: +91 997198 9980/81
North Delhi Centre: 1596, Outram Line, Kingsway Camp, Delhi-9, Ph.: 011-27607721, +91 981167 1844/45, 0971149 4830
Website: chanakyaiasacademy.org | E-mail: enquiry@chanakyaiasacademy.org

Branches:- Chandigarh : SCO No. 47-48, 2nd Floor, Sector-8C, Madhya Marg, Chandigarh, Ph.: 0172-4640005, 8288005466/7/8
Gurgaon: M-24, GF/LGF, Old DLF Colony Sector-14, Ph.: 0124-4111571/2, Mob.: +91-8527509992/3
Hazaribagh: IIIrd Floor, Koushalya Plaza, Near Old Bus Stand, Ph. : 09771869233, 9771463546, 06546-263793
Ranchi: Ist Floor, Sunrise Forum, Near Debuka Nursing Home, Burdhwan Compound, Lalpur, Ranchi Ph.: 0651-6572979, 9204950999, 9771463546
Patna: 304, IIIrd Floor, above Reliance Trends, Navyug Kamla Business Park, East Boring Canal Road, Patna-13, Mob.: 9905190260, 08800394501
Jaipur: Flora Mansion, Mansinghpura, Tonk Road, Ph. : 0141-2709960, 09680423137
Ahmedabad: 301, Sachet 3, Mirambika School Road, Naranpura, Ph. : 079-27437067, 09662027245
Pune: Sunder Plaza, Ist Floor, 19 MG Road, Pune, Ph. : 020-26050271, 09011063577, 09011003040
Guwahati: Bld. No. 12, H.R. Path 6th Bylane (W), Zoo Road, Near Decora Marriage Hall, Guwahati, Assam, Mob.: 08811092481, 09650299662

YH-26/2015

पर्यावरण, पारिस्थितिकी और पर्यटन

धीप्रज्ञ द्विवेदी

सामान्यत: मनुष्य की हर गतिविधि पर्यावरण पर कुछ-न-कुछ प्रभाव जरूर छोड़ता है और पर्यटन भी इससे अछूता नहीं है। इन दिनों इको-टूरिज्म के प्रयोग जोर-शोर से हो रहे हैं लेकिन उनमें भी जोर प्रकृति के बीच सान्निध्य पर ज्यादा है और उसके संरक्षण पर कम। फिलहाल, आवश्यकता है एक ऐसी संतुलित दृष्टि विकसित करने की जो सभी श्वेत-श्याम पक्षों पर समानता से विचार करे और पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी से साम्य बनाए रखकर पर्यटन की संभावनाओं का फायदा भी उठा सके

पर्यावरण, पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी तंत्र तीन ऐसे शब्द हैं जिनका इस आलेख में कई स्थानों पर उपयोग होगा। साथ ही इन शब्दे को हम अपने दैनिक जीवन में भी विभिन्न संदर्भों में सुनते रहते हैं। सर्वप्रथम इन तीनों शब्दों में विभेद आवश्यक है।

पर्यावरण (परि+आवरण) शब्द का शाब्दिक अर्थ है हमारे चारों ओर का घेरा अर्थात् हमारे चारों ओर का वातावरण जिसमें सभी जीवित प्राणी रहते हैं और अन्योन क्रिया करते हैं। पर्यावरण का अंग्रेजी शब्द एनवॉयरमेंट है जो फ्रेंच भाषा के शब्द एनवॉयरनर से बना है, जिसका अर्थ है 'घेरना'। अत: पर्यावरण के अंतर्गत किसी जीव के चारों ओर उपस्थित जैविक तथा अजैविक पदार्थों को सम्मिलित किया जाता है।

पारिस्थितिकी शब्द का अंग्रेजी शब्द इकॉलोजी है जो ग्रीक भाषा के शब्द ओइकस (Oikos) एवं लॉगस (Logos) के मिलने से बना है। ओइकस का अर्थ है आवास एवं लॉगस का अर्थ है अध्ययन। अर्थात् जीवों का मूल आवास में अध्ययन। वर्तमान में जीवों एवं वनस्पतियों के आपसी संबंध तथा उनपर पर्यावरण के प्रभाव को पारिस्थितिकी कहा जाता है।

पारिस्थितिकी तंत्र (अंग्रेजी शब्द ईकोसिस्टम) की संकल्पना सर्वप्रथम एजी टैन्सले ने 1935 में प्रस्तुत की थी। टैन्सले के अनुसार "वातावरण के जैविक एवं अजैविक कारकों के अंतर्संबंधों से बना तंत्र ही इकोसिस्टम है।"

वर्तमान समय में पर्यावरण, पारिस्थितिकी, पारिस्थितिकी तंत्र एवं पर्यटन आपस में जुड़े हुए हैं। भारत के प्राचीनकाल के शैक्षिक एवं धार्मिक पर्यटन से वर्तमान के पारिस्थितिकीय पर्यटन का विकास कई कालखंडों में हुआ है। प्राचीन से लेकर वर्तमान भारत में लगभग हर काल में पर्यटकों की सुविधा का ख्याल रखा गया है। अशोक सम्राट ने भी पथिकों के आश्रय की व्यवस्था की थी। बाद में समुद्रगुप्त के काल में और उसके बाद शेरशाह के काल में भी इन यात्री सुविधाओं का ध्यान रखा गया था। आधुनिक काल में पर्यटन को लेकर पहला वास्तविक प्रयास 1945 में हुआ जब तत्कालीन शिक्षा सलाहकार सर जॉन सर्रेन्ट के अध्यक्षता में पर्यटन विकास के लिए समिति बनाई गई। स्वतंत्रता के बाद इस क्षेत्र में पहला कदम 1956 में दूसरी पंचवर्षीय योजना के समय उठाया गया। जब एकाकी योजना के रूप में एक इकाई सुविधाओं के विकास की बात की गई। छठी पंचवर्षीय योजना ने भारत में पर्यटन के क्षेत्र में एक नये युग का प्रारंभ किया जब पर्यटन को सामाजिक समरसता, सामाजिक एकता एवं आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण साधन माना गया।

आधुनिक भारत में पर्यटन का वास्तविक विकास 1980 के दशक से प्रारंभ हुआ। 1980 के दशक और उसके बाद के सरकारों ने पर्यटन के विकास के लिए कई कदम उठाए। पर्यटन

लेखिका पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर हैं। अक्षय ऊर्जा तथा पर्यावरणीय संबंधी विषयों पर नियमित रूप से लिखते रहते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं के विद्यार्थियों के बीच यह विषय पढ़ाते भी हैं। ईमेल: dhimesh.dubey@outlook.com

को लेकर राष्ट्रीय पर्यटन नीति की घोषणा 1982 में हुई। पर्यटन के क्षेत्र में 1988 में सतत विकास के लिए व्यापक योजना बनाने के लिए एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया गया। राष्ट्रीय कार्य योजना 1992 में तैयार की गई। पर्यटन के संवर्धन के लिए एक राष्ट्रीय कार्यनीति 1996 में तैयार की गई थी। नयी पर्यटन नीति 1997 में आई जिसमें केंद्र एवं राज्य सरकारों सार्वजनिक उपक्रमों एवं निजी उपक्रमों की भूमिका तय की गई, साथ ही पंचायती राज संस्थाओं, स्थानीय संस्थाओं, गैर सरकारी संस्थाओं एवं स्थानीय युवाओं की सहभागिता को आधिकारिक रूप से स्वीकृत किया गया। इसके अतिरिक्त 1966 में भारतीय पर्यटन विकास निगम की स्थापना की गई जिसका लक्ष्य है भारत को एक पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित करना एवं उसका संवर्धन तथा प्रचार प्रसार करना। 1989 में पर्यटन निगम की स्थापना की गई ताकि पर्यटन संबंधी कार्यों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जा सके। इनके सरकारी दक्षता संस्थानों की स्थापना की गई ताकि पर्यटन के क्षेत्र में उपयुक्त कार्मिक उपलब्ध हो सकें।

पर्यटन, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी पर्यटन

पिछले कुछ वर्षों में पर्यटन का लगातार विकास हुआ है और आधुनिक युग में मानव कार्यकलापों में पर्यटन महत्वपूर्ण होता जा रहा है। आज पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन उद्योग बहुत तीव्रता से विकसित हो रहा है और एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। पर्यटन में इतनी शक्ति है कि यह देशों के भविष्य को परिवर्तित कर सकता है। आधुनिक पर्यटन काफी हद तक पर्यावरण आधारित है। हम कह सकते हैं कि पर्यटन में दो अन्योन्य क्रियाशील घटक सम्मिलित हैं– पर्यटक और पर्यावरण। पर्यटन एक ऐसा शब्द है जो कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को लेकर लोकजन यात्रा और देश-विदेश के विभिन्न भागों के भ्रमण से जुड़े सभी प्रक्रमों एवं संबंधों को निरुपित करता है।

पर्यटन का उद्देश्य कितना भी सौम्य क्यों न हो फिर भी स्थानीय पर्यावरण पर उसका कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है। पर्यटक यदि कहीं भी जाकर भू-दृश्यों एवं वन्यजीवों का अवलोकन कर आनंद प्राप्त करना चाहते हैं तो सामान्यत: वहां जाकर रुकते भी हैं। पर्यटकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुछ मूलभूत सुविधाओं जैसे आवास, परिवहन सुगमता एवं संपूर्ण आपूर्ति से संबंधित अवसंरचना की उचित व्यवस्था आवश्यक है। पर्यटकों के व्यवहार सहित ये सभी प्रक्रियाएं पर्यावरण पर किसी-न-किसी प्रकार का दबाव डालती हैं। अत: प्रयास यह होना चाहिए कि इस दबाव के स्तर को न्यूनतम रखा जा सके ताकि पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी में स्थाई परिवर्तन न होने पाए। अत: यह आवश्यक है कि हम पर्यटन एवं पर्यावरण के मध्य अन्योन्य क्रियाओं को ठीक से समझें और उसके अनुसार अपने क्रियाकलापों में परिवर्तन करें। इस पहलू पर काफी समय से विचार किया जा रहा है। प्रारंभिक अध्ययन में पर्यटकों द्वारा किए गए कार्यों का पर्यावरण के विशेष अंगों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया।

आवश्यक है कि हम पर्यटन एवं पर्यावरण के मध्य अन्योन्य क्रियाओं को ठीक से समझें और उसके अनुसार अपने क्रियाकलापों में परिवर्तन करें। इस पहलू पर काफी समय से विचार किया जा रहा है। प्रारंभिक अध्ययन में पर्यटकों द्वारा किए गए कार्यों का पर्यावरण के विशेष अंगों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया। इससे पर्यटन की क्रियाओं द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों को उजागर किया गया

इससे पर्यटन की क्रियाओं द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों को उजागर किया गया और क्षति के स्तर को रिकॉर्ड किया गया, किंतु क्षति पहुंचाने वाले प्रक्रमों का विस्तृत अध्ययन नहीं हुआ। इस प्रकार के अध्ययन की एक कमी और रही कि पर्यटन स्थल के केवल एक ही घटक का अकेले, अध्ययन किया जाता है और संपूर्ण पर्यावरण के विभिन्न घटकों के आपसी संबंधों एवं अन्योन्याश्रय की उपेक्षा की जाती रही। इनमें से अधिकांश अध्ययन प्रतिक्रियात्मक हैं अर्थात् किसी घटना के होने के बाद उसका विश्लेषण इसको समझने के लिए हम अग्रलिखित उदाहरणों का सहारा ले सकते हैं–

- कई विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों द्वारा शिक्षा के उद्देश्य से यात्राएं आयोजित की जाती हैं। कई बार इन यात्राओं के कुछ प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ते हैं। जैसे– अध्ययन की दृष्टि से ही कुछ पौधों को जमीन से बाहर निकालना एवं अनजाने में ही कुछ छोटे महत्वपूर्ण पौधों को कुचला जाना। इस प्रकार की गतिविधियां जैव-विविधता को नुकसान पहुंचाती हैं।
- नदी अथवा समुद्र के किनारे अवस्थित पर्यटक सुविधाओं से निकलने वाला संसाधित विषाक्त मल-जल इन जल स्रोतों को प्रदूषित करता है जिसका सीधा प्रभाव जलीय जीवों, तटीय क्षेत्रों तथा उस जलस्रोत के आसपास निवास करने वालों पर पड़ता है।
- पर्यटक स्थलों पर कचरे एवं अपशिष्ट का निपटान भी बहुत बड़ी समस्या है। कई स्थानों पर यह समस्या इतनी गंभीर है कि उन स्थानों का स्वरूप ही बिगड़ गया है।
- पर्यटकों द्वारा वन्य जीवन का अवलोकन उनके दैनिक कार्यकलापों में बाधा पहुंचाता है, विशेषकर उनके चारण एवं प्रजनन में।
- इस प्रकार के अनेकानेक उदाहरण हमारे आसपास उपलब्ध हैं। भविष्य में पर्यटन के और विस्तार के साथ ऐसे और उदाहरण बढ़ते जाएंगे, इसलिए पर्यटन एवं पर्यावरण के अंतर्संबंधों का अवलोकन आवश्यक है। पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी तंत्रों के लिए एक विशिष्ट योजना तथा प्रबंधन की आवश्यकता है जो इन समस्याओं को नियंत्रित कर सके।

पारिस्थितिकी पर्यटन (ईको टूरिज्म)

यह विशुद्ध रूप से जैव-विविधता से जुड़ा हुआ है। यह जैव-विविधता के अपार सौंदर्य पर आधारित है। साथ ही प्रकृति के अजैविक घटकों की सुंदरता पर भी। सामान्य तौर पर पर्यटक जीवों एवं प्रकृति के सौंदर्य प्रेम के कारण ही मीलों दूर पर्यटन के लिए जाते हैं अर्थात् जैव-विविधता उन्हें आकर्षित करती है। पर्यटन का सतत एवं स्थाई विकास सीधे तौर पर जैव-विविधता के सतत उपलब्धता से जुड़ा हुआ है। जैव-विविधता की सतत उपलब्धता जैव-विविधता के संरक्षण से संबंधित है। पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी तंत्र के बिना जैव-विविधता की सतत उपलब्धता संभव नहीं है। अत: इनका या सीधे शब्दों में कहें तो प्रकृति का संरक्षण पर्यटन के विकास के

वर्तमान के पारिस्थितिकी पर्यटन के सतत विकास के लिए हमें पश्चिम एवं पूर्व दोनों के संरक्षण संबंधी विचारों का सम्मान करना होगा एवं दोनों को एक साथ एक नये स्वरूप में अपनाना होगा।

लिए आवश्यक है। विशेष रूप से पर्यटन एवं पर्यावरण के मध्य उपस्थित विशिष्ट अंतर्संबंधों के दृष्टिकोण से संरक्षण का तात्पर्य जैव-विविधता का इस सीमा तक संरक्षण है जो पारिस्थितिकी और मानवजाति के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। जैव-विविधता संरक्षण की तुलना संपूर्ण विश्व की संपूर्ण जातियों की सुरक्षा से नहीं की जा सकती और न ही यह पर्यावरण को पूर्व स्थिति में बनाए रखने का एक प्रयास ही है। वर्तमान में चिंता का मुख्य विषय तीवग्रति से हो रहा संसाधन दोहन और प्राकृतिक वास में होने वाला परिवर्तन है जो जैव-विविधता के तेजी से लोप का कारण बन सकता है। पर्यावरणवादी पर्यावरणीय व्यवस्थाओं और जातियों की विविधता को सुरक्षित रखना चाहते हैं। उन्हें विकास की प्रक्रिया से मोहभंग पाए लोगों का समर्थन भी हासिल है। संरक्षण को लेकर विकसित एवं विकासशील देशों के बीच विभेद है। इस विभेद के मूल में संरक्षण को लेकर दोनों के दृष्टिकोण हैं।

संरक्षण का पश्चिमी दृष्टिकोण प्रकृति को लेकर यहूदी ईसाई दर्शन के अनुसार है। यह दो विचारों पर आधारित है अर्थात्

- दोहन का अधिकार तथा
- प्रबंध का दायित्व

यह दो विचार संरक्षण के वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी एवं भौगोलिक तत्वों के लिए रास्ता तैयार करते हैं जबकि संरक्षण का दार्शनिक एवं प्रायोगिक पक्ष भारतीय संस्कृति में है। प्राचीनतम वेद ऋग्वेद में ऋषियों ने वृक्षों को परमात्मा के विभिन्न गुणों का प्रतीक माना है जैसे– निम्नलिखित मंत्र से हम ऋग्वेद में वृक्षों को दिए गए महत्व को समझ सकते हैं–

आप औषधिरूप नोड्वस्तु, दयोर्वना गिरयो वृक्षकेश। श्रणेत न उर्जा परिगिरं, स नमस्तरीयां उषिरः परिज्मा। शून्वन्त्वायः पुरान शुभ्राः, परि स्रुचो बवृहाण स्योद्रः।

अर्थात् ''वनस्पतियां, जलधाराएं, आकाश, वन और वृक्षादित पर्वत हमारी रक्षा करें। ताजगी भर देने वाला पवन जो आकाश के बादलों में तेजी से दौड़ता है, हमारे गान सुनें और छिन्न-भिन्न पर्वतों में आगे बढ़ती स्फटिक-सी स्वच्छ जलधाराएं हमारी प्रार्थना सुनें।''

उपनिषद् का कथन ''रक्षय प्रकृतिवातुं लोकाः अर्थात् मानव की रक्षा के लिए प्रकृति की रक्षा की जाए। प्राचीन भारतीय समाज इस सत्य से पूर्णतः अवगत था कि पौधों एवं वनों का विनाश मानव जाति के विनाश के दरवाजे खोल देगा। भारतीय संस्कृति में प्रकृति एवं पशुओं से मानव का संबंध प्रभुत्व एवं दमन का नहीं बल्कि परस्पर आदर एवं जीवों के सहभागिता का संबंध है। प्राचीनकाल में जिन पर्यावरणीय नियमों का प्रतिपादन किया गया था, उनका पालन न केवल साधारण व्यक्ति बल्कि शासक वर्ग भी करता था। भारतीय जीवनशैली के मूल में यही नियम एवं सिद्धांत हैं।

वर्तमान के पारिस्थितिकी पर्यटन के सतत विकास के लिए हमें पश्चिम एवं पूर्व दोनों के संरक्षण संबंधी विचारों का सम्मान करना होगा एवं दोनों को एक साथ एक नये स्वरूप में अपनाना होगा।

पारिस्थितिकी पर्यटन में **उत्तरदायी पर्यटन** बहुत महत्वपूर्ण है। पर्यटन के उत्तरदायी होने के लिए, पर्यटन के परिमाण एवं पर्यटन गतिविधियों तथा उपभोग में लाए जा रहे और विकसित किए जा रहे संसाधनों की संवेदनशीलता और वहन क्षमता के बीच संतुलन अवश्य स्थापित होना चाहिए। इसमें भौतिक एवं जैविक पर्यावरण दोनों के संसाधन सम्मिलित होते हैं। इस विषय में वहन क्षमता सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवधारणा है। संसाधनों पर हानिरहित प्रभाव, पर्यटक संतुष्टि को कम किए बिना या उस क्षेत्र के समाज, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना किसी स्थान का अधिकतम उपयोग में लाया जाना उस स्थान की वहन क्षमता कहलाती है। उत्तरदायी पर्यटन एक ऐसा पर्यटन है जो यात्रा के अनुभवों की रक्षा करने के अतिरिक्त लोगों के मध्य आपसी समझ को भी बढ़ाता है, पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक ह्रास और इनसे भी अधिक स्थानीय जनसंख्या के शोषण और मानवीय मूल्यों के ह्रास को रोकता है। इसे हम वैकल्पिक पर्यटन भी कहते हैं। वैकल्पिक या उत्तरदायी पर्यटन के द्वारा पर्यटन से पैदा हुई समस्याओं को नियंत्रित किया जा सकता है।

विश्वस्त पर्यटन विकसित करते समय पर्यावरण की उत्कर्षता बनाए रखना न केवल वांछनीय है अपितु पर्यटक का संतोष कायम रखने के लिए भी आवश्यक है। यदि पर्यटन उत्पाद के स्तर में गिरावट आती है तो वह अन्ततोगत्वा पर्यटन अर्थव्यवस्था में ही गिरावट लाएगा।

पर्यावरणीय पर्यटन या पारिस्थितिकी पर्यटन प्रकृति पर आधारित पर्यटन है जो प्रकृति से सीधे लिए जा सकने वाले आनंद अर्थात् प्रकृति के अवलोकन से मिलने वाले आनंद से संबंधित है। इसके पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के लिए स्थान विशेष की उपयुक्तता आवश्यक है। साथ ही इसे प्राकृतिक पर्यावरण में स्थाई ह्रास का साधन नहीं बनना चाहिए।

परिस्थितिकीय पर्यटन का अर्थशास्त्र

पारिस्थितिकीय पर्यटन पूरे संसार में बहुत बड़े उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। कई राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में इसका बेहद महत्वपूर्ण स्थान है। इससे विदेशी मुद्रा का अर्जन होता है जिसका उपयोग प्रकृति तथा वन्य प्राणियों की सुरक्षा के साथ-साथ राष्ट्र के विकास में भी उपयोग किया जा सकता है। पर्यावरण, पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी तंत्र किसी भी स्थान की जैव-विविधता को सुनिश्चित करते हैं और जैव-विविधता का सौंदर्य पर्यटकों को आकर्षित करती है। पारिस्थितिकी पर्यटन की भारत में संभावनाओं की बात करें तो यह असीम है। इस प्रकार के पर्यटन के आर्थिक महत्व को अगले कुछ उदाहरणों से समझा जा सकता है। साथ ही इन्हीं उदाहरणों के आधार पर हम भारत में इसके विकास के संभावनाओं की चर्चा भी करेंगे।

- एक शेर अपने जीवनकाल में अपने सौंदर्य के आधार पर लगभग एक जीवनकाल अर्थात्

उत्तरदायी पर्यटन एक ऐसा पर्यटन है जो यात्रा के अनुभवों की रक्षा करने के अतिरिक्त लोगों के मध्य आपसी समझ को भी बढ़ाता है, पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक ह्रास और इनसे भी अधिक स्थानीय जनसंख्या के शोषण और मानवीय मूल्यों के ह्रास को रोकता है। इसे हम वैकल्पिक पर्यटन भी कहते हैं।

7 वर्षों में पर्यटन से 5,15,000 डॉलर की विदेशी मुद्रा अर्जित करता है (अफ्रीका)।

- केन्या का एक हाथी अपने जीवनकाल में लगभग 10 लाख डॉलर की विदेशी मुद्रा अर्जित करता है।
- रवांडा में पाए जाने वाले पहाड़ी गोरिल्ले प्रतिवर्ष 40 मिलियन डॉलर की विदेशी मुद्रा अर्जित करते हैं।
- हर्वी तट एवं क्वींसलैंड तट पर ह्वेल मछलियां प्रतिवर्ष एक करोड़ बीस लाख डॉलर अर्जित करने का साधन है।
- आस्ट्रेलिया के 'ग्रेट बैरियर रीफ' (कोरल रीफ) से प्रतिवर्ष 20 लाख डॉलर की आमदनी होती है।

भारत की जैव विविधता

इन सबकी तुलना हम भारत की जैव-विवधता से कर सकते हैं। भारत दुनिया के 12 समृद्ध जैव-विविधता वाले देशों में से एक है। दुनिया के 34 में से दो हॉट-स्पॉट, पूर्वी हिमालय, भारत-बर्मा तथा पश्चिमी घाट श्रीलंका-भारत में है। विश्व की लगभग 60 प्रतिशत जैव-विविधता भारत में पाई जाती है। विश्व में वनस्पति विविधता के आधार पर भारत दसवें, क्षेत्र सीमित (इण्डेमिक) प्रजातियों के आधार पर ग्यारहवें एवं फसलों के उद्भव तथा विकास के आधार पर एवं विविधता केंद्र के आधार पर छठवें स्थान पर है। छिपकलियों की लगभग 50 प्रतिशत प्रजातियां केवल भारत में पाई जाती हैं, जबकि 5000 फूल वाले पौधों की उत्पत्ति भारत में हुई है।

भारत एकमात्र ऐसा देश है जहां दो सबसे बड़ी बिल्लियां शेर तथा बाघ जंगलों में मिलते हैं। सबसे बड़े स्थलीय स्तनपायी जीव हाथी की लगभग 55 प्रतिशत वैश्विक आबादी भारत में है। एक सींग वाले गैंडे का मुख्य आवास भारत में है। इसी प्रकार और भी बहुत-से जीवों की प्रजातियां जैसे– घड़ियाल केवल भारत में पाए जाते हैं। दुनिया का सबसे बड़ा उड़ने वाला पक्षी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड भारत में पाया जाता है। भारत कस्तूरी मृग, काले मृग, रेड पांडा जैसी प्रजातियों का भी घर है। भारत में बंदरों एवं लंगूरों की भी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। जैसे हूलॉक शिबॉन, शेर पूंछ बंदर, नीलगिरी लंगूर, टोपीवाला लंगूर, सुनहरा बंदर इत्यादि। भारत स्नोलेपर्ड और थामिन मृगों का भी निवास स्थल है।

मीठे पानी की डॉल्फिनों में से एक सोंस या गंगेटिक डॉल्फिन भारत में पाई जाती है। सर्पों की अनेक प्रजातियां भी भारत में है। दुनिया के विशालतम जहरीले सर्प किंग कोबरा का निवास स्थल भी भारत है। सालामंडर की कई प्रजातियां भारत में पाई जाती हैं। पौधों की लगभग 47000 प्रजातियां भारत में पाई जाती हैं, जिनमें 7000 केवल भारत में सीमित हैं। भारत में लगभग 62 प्रतिशत वनस्पति सीमित हैं जो हिमालय, खासी की पहाड़ियों एवं पश्चिमी घाट में पाई जाती हैं। भारत की लगभग 7500 किमी लंबी तटरेखा, नदी मुहानों और डेल्टा में जैव-विविधता के अपार भंडार हैं। विश्व की लगभग 340 कोरल प्रजातियां भारत में मिलती हैं। भारत में मैंग्रोव वन की भी बहुतायत है। नीतरबनिका (ओड़िशा) एशिया का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव वन है। भारत में लगभग 93 झीलें, रीफ एवं मैंग्रोव हैं जिनका अभी तक पर्याप्त अन्वेषण नहीं हुआ है। भारत में लगभग 60.4 मिलियन हेक्टेयर भूभाग पर वन पाए जाते हैं जो जैव-विविधता के महत्वपूर्ण केंद्र हैं।

भारत प्रवासी पशु-पक्षियों का भी महत्वपूर्ण आवास है। यहां साइबेरियन क्रेन, चित्तीदार पेलिकन जैसे पक्षी प्रवास पर आते हैं तो समुद्री कछुवे भी दक्षिण अमरीका जैसे सुदूर स्थान से यहां प्रवास करने आते हैं।

भारत प्रवासी पशु-पक्षियों का भी महत्वपूर्ण आवास है। यहां साइबेरियन क्रेन, चित्तीदार पेलिकन जैसे पक्षी प्रवास पर आते हैं तो समुद्री कछुवे भी दक्षिण अमरीका जैसे सुदूर स्थान से यहां प्रवास करने आते हैं।

उपरोक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि भारत में पर्यावरण, पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी तंत्र आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन की अपार, संभावनाएं उपलब्ध हैं। आवश्यकता है केवल उनके समुचित विकास की।

संतुलित परिस्थितिकीय पर्यटन के प्रयास

इसके लिए केंद्र सरकार ने कई कदम भी उठाए हैं, जिसमें शामिल हैं–

- पर्यावरणीय समेकन का अनुरक्षण
- स्थानीय समुदाय को शामिल करना ताकि क्षेत्र का समग्र आर्थिक विकास हो सके
- इको पर्यटन के लिए संसाधनों का उपयोग और स्थानीय निवासियों की आजीविका के मध्य संभावित संघर्ष की पहचान करना एवं ऐसे संघर्षों को न्यून करना
- पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास के प्रकार एवं पैमाने पर्यावरण तथा स्थानीय समुदाय की सांस्कृतिक-सामाजिक विशेषताओं के अनुरूप करना
- इसका नियोजन समग्र क्षेत्र विकास नीति के रूप में करना

पारिस्थितिकी पर्यटन से लाभ

आर्थिक लाभः ऊपर दिए गए उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि पारिस्थितिकी पर्यटन से सीधा आर्थिक लाभ हो सकता है, जिसका उपयोग जैव-विविधता एवं पारिस्थितिकी तंत्र के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए किया जा सकता है। प्रत्यक्ष लाभ में सरकार को विदेशी मुद्रा की आमदनी तो होती ही है साथ ही अप्रत्यक्ष लाभ में विभिन्न प्रकार के करों एवं शुल्कों के द्वारा भी आमदनी होती है। अर्थात् इको पर्यटन न केवल पर्यावरण के संवर्धन एवं संरक्षण में योगदान देता है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में भी सीधा योगदान देता है।

बेहतर पर्यावरण प्रबंधन एवं योजनाः इसके द्वारा समय से प्रबंधन योजना बनाकर भविष्य में आने वाली समस्याओं को रोका जा सकता है जैसे हाल ही में माननीय न्यायालय द्वारा गिर वन के पास ताज होटल को बंद करने का आदेश जारी किया गया। अगर पहले से इको पर्यटन को ध्यान में रखते हुए योजना बनाई गई होती तो यह समस्या नहीं आती।

पर्यावरणीय चेतना का विकासः इको पर्यटन के द्वारा लोगों में पर्यावरणीय चेतना का विकास किया जा सकता है क्योंकि इसके द्वारा जन एवं पर्यावरण को पास लाने का प्रयास हो सकता है, जिससे लोगों में पर्यावरण से होने वाले लाभों की जानकारी होगी और वे ज्यादा बेहतर ढंग से संरक्षण कार्यों में सहयोग कर पाएंगे।

पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षणः अपने आकर्षण के कारण प्रकृति एवं पर्यावरण का संरक्षण महत्वपूर्ण होगा क्योंकि इससे इनके अमूल्य होने की वास्तविकता सामने आएगी और संरक्षण के प्रयास ज्यादा तेज होंगे। साथ ही इसमें जन भागीदारी भी सुनिश्चित की जा सकेगी।

तालिका 1: पर्यटन गतिविधियों का प्रभाव

जल	कूड़े-कचरे और मलजल की निकासी झीलों, नदियों और समुद्री तटों में, पर्यटन पोत या नौकाओं से तेल की निकासी आदि	संदूषण, स्वास्थ्य के लिए संकट, समुद्री पौधे और जीव-जंतु का विनाश जलाशयों में विशाक्तता की वृद्धि, समुद्री खाद्य में संदूषण आदि
वायुमंडल	पर्यटन स्थल की ओर यात्रा में वृद्धि 1 मोटर, कार, जहाज, ट्रेन (वायुयान)	वायु और ध्वनि प्रदूषण, पौधों के जीवन पर हानिकारक प्रभाव, मनोरंजन के मूल्यों की क्षति।
वनस्पति	मनोरंजन स्थल के निर्माण हेतु वृक्षों की कटाई, उद्यानों और वनों में आग का विचारहीन इस्तेमाल, उद्यानों और वनों में बढ़ता यातायात, फूलों और पौधों और कवक का संग्रहण।	वन्य संपदा की क्षति, पौधों का निरंतर विनाश, वन्य क्षेत्रों में अग्निकांड, पौधों के जीवन पर प्रभाव।
मानव बस्तियां	होटलों, दुकानों आदि का निर्माण और विस्तार	जनविस्थापन, यातायात का संकुलन, बढ़ा हुआ प्रदूषण आदि
स्मारक	मनोरंजन के उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल, पर्यटकों को देखने महत्वपूर्ण स्थानों का अत्यधिक उपयोग	अतिसंकुलता, विरूपण सुरक्षा के लिए बाधा आदि।

पर्यटन से पर्यावरण को होने वाले नुकसान

इसको समझने के लिए हम तालिका 1 का सहारा ले सकते हैं–

पर्यटन के पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभावों को उपरोक्त सारणी से समझा जा सकता है। इस सरणी की व्याख्या करने के लिए हम अग्रलिखित बिंदुओं का सहारा ले सकते हैं–

प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास: पर्यटन का विकास प्राकृतिक संसाधन के ऊपर दबाव डालता है। यह उन क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग दर को बढ़ा देता है जहां इन संसाधनों की कमी है।

जलस्रोत: पेयजल एक बेहद महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। सामान्यतौर पर पर्यटन व्यवसाय पेजल का आवश्यकता से अधिक उपभोग करता है, जिसके कारण पानी की कमी हो सकती है और पानी की गुणवत्ताओं में भी कमी आती है। साथ ही बहुत बड़ी मात्रा में अपशिष्ट जल निर्गत होता है।

स्थानीय संसाधन: पर्यटन स्थानीय संसाधनों जैसे भोजन, ऊर्जा एवं अन्य अनिर्मित सामग्रियों पर भी बहुत दबाव डालता है। विशेषकर उन संसाधनों पर जिनकी पूर्ति में पहले से ही कमी होती है। पर्यटन एक प्रकार से मौसमी उद्योग है। अत: पर्यटन के समय पर्यटन केंद्रों में सामान्य से 10 गुने से भी ज्यादा व्यक्ति हो सकते हैं। इस स्थिति में वहां के प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ने वाला दबाव भी बढ़ जाता है।

भूमि अपकर्षण: पर्यटन उद्योग का सीधा प्रभाव भूमि संसाधनों पर भी पड़ता है। महत्वपूर्ण भूमि संसाधन जैसे खनिज, जीवाश्म ईंधन, जंगल, आर्द्र भूमि एवं वन्य जीव सभी इससे प्रभावित होते हैं। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एवं पर्यटक सुविधाओं का विस्तार करने के लिए भूमि संसाधनों का दोहन होता है।

प्रदूषण: पर्यटन कई प्रकार के प्रदूषणों से भी बढ़ता है– उदाहरणस्वरूप, वायु, ध्वनि, ठोस अपशिष्ट, तेल एवं रसायन इत्यादि।

वायु प्रदूषण: पर्यटकों की सुविधा के लिए यातायात सुविधाओं का उपयोग होता है जिसके द्वारा वायु प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण दोनों होता है। इसका प्रभाव पर्यटक केंद्रों एवं वन्य जीवों दोनों पर देखा जा सकता है।

ठोस अपशिष्ट एवं कचरा: ठोस अपशिष्ट एवं कचरे का निबटान पर्यटन स्थलों की महत्वपूर्ण समस्या है। कचरे के कारण जल एवं स्थल दोनों प्रदूषित होते हैं।

मलजल की समस्या: होटलों के निर्माण, मनोरंजन एवं अन्य सुविधाओं के कारण मलजल (सीवेज) प्रदूषण की समस्या भी बढ़ जाती है। समुद्र में मलजल का प्रवाह समुद्री जंतुओं एवं कोरल सभी पर असर डालता है।

परिस्थितिकी तंत्र में बदलाव एवं उसका विनाश: पर्यटन गतिविधियों के कारण पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव के बहुत से उदाहरण उपलब्ध हैं। जैसे–रामेश्वरम के पास का क्रूरोइई द्वीप, जो किसी समय समुद्री जीव वैज्ञानिकों के लिए स्वर्ग माना जाता था। आज वह द्वीप किसी भी प्रकार के शैक्षिक एवं शोध गतिविधि के लायक नहीं बचा, क्योंकि अत्यधिक पर्यटक आगमन के कारण वहां के कोरल एवं अन्य समुद्री जीवन समाप्त हो गया।

इन सबके अतिरिक्त पर्यटन गतिविधियों के कारण जंतु के जीवन एवं आदतों पर भी असर पड़ता है।

समाधान

प्राकृतिक पर्यावरण को क्षति पहुंचाए बिना उत्तरदायित्वपूर्ण पर्यटन के विकास हेतु निम्नांकित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

- वहन क्षमता के आधार पर पर्यटन को प्रोत्साहन देना।
- पर्यावरणीय परिस्थितियों अर्थात् पारिस्थितिकी के अनुसार एवं स्थानीय लोगों की जीवनशैली को प्रभावित किए बिना पर्यटन को बढ़ावा देना।
- पर्यटन के अविवेकपूर्ण विकास पर प्रतिबंध और संवेदनाशील क्षेत्रों जैसे संरक्षित अभ्यारण्यों, पहाड़ी ढालों इत्यादि में पर्यटन के नियमों को सही प्रकार लागू करना।
- पर्यटकों में जागरूकता बढ़ाना।
- पर्यावरणीय समाधानों के लिए समर्थन जुटाना।
- व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन। ❑

संदर्भ

1. इग्नू के पर्यटन शिक्षा की पुस्तकें
2. पर्यावरण अध्ययन: कौशिक एवं कौशिक (न्यू एज इंटरनेशनल)
3. Ecology, Environment Science and Conservation, Singh T.S., Singh S.P. and Gupta S.R. (S. Chand Publication)
4. UNWTO Tourism Highlight 2014 Edition
5. वार्षिक रिपोर्ट-2014-2015, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
6. www.gdrc.org/uem/eco_tow/envi/index.html
7. www.ibef.org
8. www.incredibleindia.org
9. www.pib.ni.in/feature.html

वीजा तरह-तरह के

वीजा का मतलब आगंतुक अंतर्राष्ट्रीय ठहराव स्वीकृति है। वीजा शब्द लैटिन भाषा के शब्द चार्टा वीजा से निकला हुआ है, जिसका मतलब उस पत्र से है, जिसे देखा गया है। यह किसी भी देश में एक सीमित समय तक ठहरने के लिए कुछ शर्तों के साथ उस देश के सक्षम प्राधिकरण द्वारा व्यक्ति विशेष को दी गई एक वैध अनुमति है। यह आधिकारिक दस्तावेज आम तौर पर मुहर लगे हुए या पासपोर्ट के अंदर चिपके हुए होते हैं। सिर्फ वीजा किसी भी देश में प्रवेश की गारंटी नहीं देते हैं। जो व्यक्ति यात्रा कर रहा होता है, उसे अपना वीजा जारी कराने से पहले उस देश के आव्रजन अधिकारियों को पासपोर्ट दिखाना पड़ता है। अगर आगंतुक अपने कायदे कानून को पूरा नहीं करता है, तो आव्रजन अधिकारी को यह अधिकार है कि वह किसी भी समय आपके वीजा को निरस्त कर सकता है।

प्रत्येक देश अपने वीजा को लेकर कुछ अलग शर्तें रखता है, इन शर्तों में वीजा द्वारा आच्छादित क्षेत्र, ठहरने का समयांतराल, ठहरने का उद्देश्य, तिथि की वैधता या एक से ज्यादा यात्रा के लिए वीजा की वैधता है या नहीं आदि शर्तें हो सकती हैं। कुछ देश इस बात की शर्तें पर रख सकते हैं कि आगंतुक अपनी वापसी का टिकट दिखाएं तथा ठहरने में जो पैसे खर्च होंगे, उसके स्रोत बताएं।

वीजा पर्यटक के यात्रा उद्देश्य के आधार पर कई प्रकार के होते हैं। इनमें से प्रमुख के बारे में नीचे बताया जा रहा है।

प्रवासी वीजा

प्रवासी वीजा उन लोगों को दिए जाते हैं, जिनका भारत मैं अपना आवास या कारोबार वीजा छः महीनों से ज्यादा के लिए दिए जा सकते हैं, यह आवेदक की राष्ट्रीयता पर निर्भर करता है। हालांकि एक प्रवासी वीजा पर एक समय में छः महीने से ज्यादा समय तक के लिए भारत में रह पाना संभव नहीं है।

रोजगार वीजा

भारत में काम करने वाले विदेशियों के लिए रोजगार वीजा जारी किया जाता है, मगर इसके लिए जरूरी है कि वो जिस संस्था में काम करते हैं, वह भारत में रजिस्टर्ड हो। जो लोग भारत में स्वयंसेवा से जुड़े हैं या प्रशिक्षु हैं, उन्हें रोजगार वीजा दिया जाता है। आम तौर पर रोजगार वीजा एक साल या कॉन्ट्रैक्ट की अवधि तक के लिए दिए जाते हैं लेकिन उनकी समय सीमा भारत में बढ़ाई जा सकती है।

रोजगार वीजा हासिल करने के लिए आपको भारत में किसी कंपनी/संस्था के साथ रोजगार से जुड़े होने की समय सीमा तथा शर्तों को उद्धृत करने वाले कॉन्ट्रैक्ट आदि प्रमाण देने की आवश्यकता होती है।

छात्र वीजा

छात्र वीजा उन लोगों को दिए जाते हैं, जो आधिकारिक तौर पर मान्य भारतीय शैक्षणिक संस्थाओं समेत विभिन्न विषयों के अध्ययन के लिए आते हैं।

व्यापार वीजा

व्यापार वीजा उन विदेशी नागरिकों को जारी किया जाता है, जो भारत में अपना कारोबार करना चाहते हैं लेकिन यह रोजगार वीजा से इस मायने में अलग है कि व्यापार वीजा के आवेदक न तो भारत में काम कर रहा हो और न ही भारत स्थित किसी भी संस्था में नौकरी कर कर रहा हो। व्यापार वीजा चाहने वालों को उस संस्था से एक पत्र हासिल करना होता है, जिसके साथ वो कारोबार करना चाहते हैं। इसके लिए उन्हें व्यापार की सही प्रकृति, कारोबार के दौरान अपने प्रवास, जिन स्थानों का उन्हें दौरा करना है तथा इस दौरान वो अपने खर्च के लिए कोष कहां से लाएंगे आदि का विवरण भी देना होता है। इस प्रकार के वीजा के लिए कई प्रविष्टियों के साथ छह महीने या उससे अधिक की वैधता होती है लेकिन जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि एक समय में वो छः महीने से ज्यादा नहीं रुक सकते हैं।

कॉन्फ्रेंस वीजा

ये उन विदेशी प्रतिनिधियों को दिए जाते हैं, जिन्हें भारत में भारतीय सरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित कॉन्फ्रेंस में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है लेकिन उस हालत में उन्हें व्यापार वीजा के लिए आवेदन देना होता है, जब वो भारत स्थित किसी निजी संस्था द्वारा आयोजित किसी कॉन्फ्रेंस में शामिल होना चाहते हैं।

पत्रकार वीजा

पत्रकार वीजा पेशेवर पत्रकारों या छायाकारों या फिर भारत में डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का फिल्मांकन करने वालों को दिया जाता है। पत्रकार वीजा हासिल करने का सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि कोई किसी खास क्षेत्र में आ-जा सकता है या किसी व्यक्ति से मिल सकता है। ये वीजा आम तौर पर तीन महीनों के लिए दिए जाते हैं लेकिन इस वीजा को देते समय भारत सरकार इस बात के लिए बेहद संवेदनशील होती है कि इस वीजा पर यात्रा करने वाले विदेशी नागरिक अपने काम में भारत की छवि किस तरह रखते हैं। इसलिए, अगर कोई वीजा आवेदन पर इस बात की चर्चा करता है कि वह पत्रकार या फोटोग्राफर है, तो उसे इस बात की भी चर्चा करनी होती है कि आखिर वह भारत में करना क्या चाहता/चाहती है।

रिसर्च वीजा

रिसर्च वीजा आम तौर पर उन प्रोफेसरों या विद्वानों को दिया जाता है, जो भारत में कुछ शोध करने या अध्ययन संबंधी उद्देश्यों के लिए आते हैं। रिसर्च वीजा हासिल करना एक लंबी प्रक्रिया है, क्योंकि इसके लिए कई प्रतिबंध तथा सशर्त आवश्यकताएं होती हैं। सबसे पहले, स्वीकृति के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग को आवेदन भेजे जाते हैं, स्वीकृति हासिल करने में मंत्रालय तीन महीने का समय ले सकता है।

मेडिकल वीजा

मेडिकल वीजा उन लोगों को दिए जाते हैं, जिन्हें भारत स्थित मान्य तथा विशेष अस्पतालों एवं चिकित्सा केंद्रों में चिकित्सा के सिलसिले में आना होता है लेकिन यह चिकित्सा अंग प्रत्यारोपण, न्यूरोसर्जरी, हर्ट सर्जरी, ज्वायंट रिप्लेसमेंट, जीन थिरेपी तथा प्लास्टिक सर्जरी जैसे कुछ प्रमुख प्रकृति वाली चिकित्सा होनी चाहिए। मरीज के साथ आने वाले दो तीमारदारों तक को इस वीजा पर आने की इजाजत मिल सकती है।

ट्रांजिट वीजा

ट्रांजिट वीजा की आवश्यकता तब होती है, जब आगंतुक को भारत में 72 घंटे से भी कम ठहरना होता है। उससे ज्यादा समय तक ठहरने के लिए, उसे यात्रा वीजा के लिए आवेदन देना होगा। इस वीजा के लिए आवेदन करते समय टिकट के लिए एक पुष्ट (कंफर्म) एयरलाइन बुकिंग तथा आगे की यात्राओं के लिए संबद्ध चीजों को दिखाना पड़ता है।

एंट्री (X) वीजा

वो लोग अन्य किसी वीजा के अंतर्गत नहीं आते हैं, उन्हें यह वीजा दिया जाता है। हालांकि, यह वीजा सिर्फ उन विदेशियों के लिए ही उपलब्ध हैं,जो भारतीय मूल के हैं, यह वीजा भारतीय मूल के विदेशियों के पतियों/पत्नियों तथा उनके बच्चों के लिए है, उन विदेशियों के पतियों/पत्नियों तथा उनके बच्चों के लिए भी ये वीजा जारी किए जाते हैं, जो भारत में लंबे प्रवास के लिए रोजगार वीजा या व्यापार वीजा पर आते हैं। ❑

प्रस्तुतिः वाटिका चंद्रा, उपसंपादक (योजना, अंग्रेजी) ईमेलः vchandra.iis2014@gmail.com

बौद्ध सर्किट बदल सकता है यूपी-बिहार की तस्वीर

उमेश चतुर्वेदी

महात्मा बुद्ध का जीवन अपने आप में महान यात्रा है। उनके समकालीन और पश्चातवर्ती शिष्यों ने इस यात्रा को अनंत विस्तार दे दिया। अब स्थिति यह बनी है कि दुनियाभर में फैले बौद्ध मतावलंबी बुद्ध के जीवन से जुड़े स्थानों तक आकर उनकी अप्रितमजीवन यात्रा को खुद से महसूस करना चाहते हैं। बड़ी संख्या में पर्यटक इस धुन में भारत पहुंच भी रहे हैं। इसी स्थिति से संभावनाओं की शुरू होती है जिसे भांपकर केंद्र सरकार ने 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान बुद्ध सर्किट के विकास को स्वीकृति दी थी और वर्तमान सरकार ने हाल ही में इस सर्किट लिए अलग-अलग खेप में राशि जारी करनी शुरू कर दी है। मूर्त रूप ले लेने पर यह सर्किट न केवल देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करेगा बल्कि अपने आसपास के क्षेत्रों के निवासियों में उद्यमिता, स्वरोजगार व स्वाभिमान भरने के नये आयाम भी खोलेगा

मौजूदा पर्यटन की अवधारणा में सबसे ज्यादा जोर सैर-सपाटे और मस्ती पर है। इसकी बड़ी वजह यह है कि पर्यटन के पारंपरिक ढांचे में पहले आध्यात्मिकता का जो पुट रहता था, वह कम हुआ है। हालांकि अब भी प्रयाग, उज्जैन, हरिद्वार और नासिक में हर बारह साल पर लगने वाले कुंभ और हर छह साल पर लगने वाले अर्ध कुंभ के अलावा मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या और शिवरात्रि के साथ ही अजमेर शरीफ की दरगाह पर चादर चढ़ाना, स्वर्ण मंदिर में गुरुनानक देव का प्रकाश उत्सव जैसे धार्मिक पर्यटन अब भी देश में जारी हैं। इसके अलावा देशभर में सदियों से जारी मेले-नहान आदि भी एक तरह से स्थानीय पर्यटन की वाजिब वजहें रहे हैं। इनमें अब भी आध्यात्मिकता का पुट बचा हुआ है। जिन राज्यों ने अपने यहां के स्थानीय मेले-ठेले, नहान-चादर चढ़ाने जैसे कार्यक्रमों की रंगारंग मार्केटिंग की, वहां स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय सैलानियों के जरिए कमाई भी खूब होती है। उस इलाके विशेष की आर्थिक गतिविधियों को तेजी मिलती है। फिर भी कहीं न कहीं, मौजूदा अवधारणा इन्हें पर्यटन नहीं मानती। पर्यटन को लेकर पिछले कुछ दशकों में जो नीतियां बनाई गईं, उनमें सैर-सपाटा को ही पर्यटन का प्रमुख आधार माना जाता रहा है। लिहाजा बाद में जितनी भी सरकारी नीतियां बनीं, उन पर इसी अवधारणा का असर ज्यादा रहा लेकिन चाहे जितनी भी सैर-सपाटा आधारित नीतियां तैयार कर ली जाए, लेकिन भारतीय नागरिकों के जीन में समाहित हजारों-हजार साल की परंपरा का खत्म होना संभव ही नहीं है। हजारों साल से चली आ रही आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन की परंपरा का खत्म नहीं होना संभव भी नहीं है।

केरल पर्यटन की मार्केटिंग

भारत में बेशक हिंदू तीर्थ ज्यादा हैं। लेकिन बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म के जुड़े बड़े और अहम तीर्थ स्थल हैं। आजादी के बाद से लेकर अब तक इन तीर्थों को आपस में जोड़ने और उनके जरिए आध्यात्मिक पर्यटन को कुछ उस आक्रामक अंदाज में बढ़ावा

आकृति 1: बौद्ध गंतव्यों पर पर्यटकों का आगमन

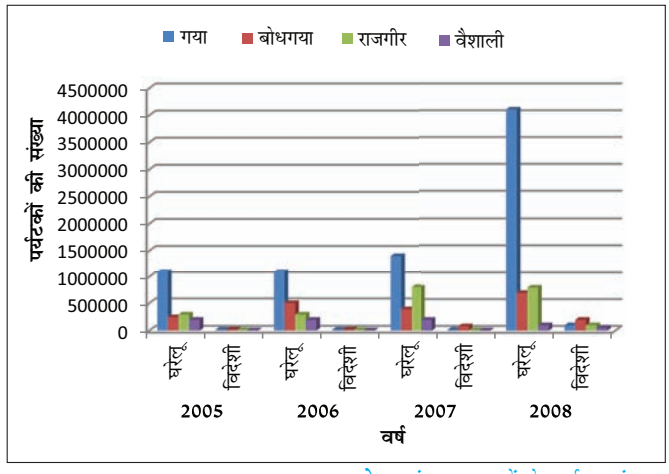

स्रोत: संबद्ध सरकारों के पर्यटन मंत्रालय

लेखक टेलीविजन पत्रकार और स्तंभकार हैं। राजनीतिक, सामाजिक और विकास से जुड़े मुद्दों के अध्ययन और मनन में उनकी खास दिलचस्पी है। संप्रति 'लाइव इंडिया' समाचार चैनल से संबद्ध हैं। पूर्व में जी न्यूज, इंडिया न्यूज, सकाल टाईम्स, दैनिक भास्कर, अमर उजाला आदि संस्थानों में काम कर चुके हैं। 'बाजारवाद के दौर में मीडिया' नाम से पुस्तक प्रकाशित। ईमेल: uchaturvedi@gmail.com

देने की कोशिश नहीं की गई, जैसे केरल ने अपनी प्राकृतिक छटा को पर्यटकों में बेचने के लिए सन 1999-2000 में गॉड्स ओन कंट्री यानी भगवान का अपना देश के तौर पर स्थापित करने का अभियान चलाया और देखते ही देखते केरल भारतीय और विदेशी सैलानियों का पसंदीदा पर्यटन केंद्र बन गया। केरल में पर्यटकों को लुभाने के लिए वहां के मनोरम समुद्री तटों, समुद्री किनारे से कुछ अंदर स्थित झीलों, नदियों, उनमें ओणम के दौरान होने वाली नौका प्रतियोगिता, ओणम के सौंदर्यपूर्ण त्यौहार के साथ ही वहां की समृद्ध आयुर्वेदिक इलाज और मालिश परंपरा को भी पैकेज के तौर पर पेश किया गया। श्रीनगर की डल झील स्थित हाउसबोट की तर्ज पर वहां भी झीलों और नदियों के प्राकृतिक वातावरण में हाउसबोट को भी पेश किया गया। हालात यह है कि अब केरल जाने वाले पर्यटकों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। पर्यटन मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक सन 2013 में भारत आने वाले कुल विदेशी सैलानियों का 4.3 फीसद केरल आया। आंकड़ों में बात करें तो यह संख्या 8 लाख 58 हजार 143 थी। जबकि बिहार में महज 3.8 फीसद यानी 7 लाख 65 हजार 835 सैलानी ही आए। यह हालत तब है, जबकि यहां पर्यटन की काफी गुंजाइश है।

उपलब्ध संसाधन

विकास की मौजूदा अवधारणा के मापदंड में भले ही औद्योगीकरण और सेवा क्षेत्र की मौजूदगी ज्यादा अहम हो गई हो, लेकिन अब भी इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि विकास को निर्धारित करने वाले मानकों में खास बदलाव नहीं हुआ है। मानव श्रम शक्ति, शिक्षा और उपजाऊ जमीन आज भी विकास के लिए अहम पैमाना बने हुए हैं। उपजाऊ मिट्टी के साथ प्राकृतिक संसाधन भरपूर हो तो उस इलाका विशेष के विकास में चार चांद लगना आसान हो जाता है। इन मापदंडों की बात की जाए तो पूर्वी उत्तर प्रदेश और उससे सटे बिहार के इलाके में क्या नहीं है। यहां की मिट्टी इतनी उपजाऊ है कि पूरे साल-बारहों महीने लगातार उपज हासिल की जा सकती है। टिहरी बांध बनने के बाद बेशक गंगा की धारा पतली हो गई हो, लेकिन पूर्वी उत्तर प्रदेश से गुजरती घाघरा नदी पर अब तक कोई बांध नहीं है और वह सदानीरा बनी हुई है। उसकी सहायक राप्ती और गंगा की दूसरी सहायक गोमती, गंडक, कोशी जैसी तमाम नदियां इस इलाके से गुजरती हैं। इस इलाके में बेशक इन दिनों शैक्षिक स्तर गिरा है। लेकिन शस्य श्यामला-हरीतिमा ओढ़ने वाली धरती यहां अब भी है। इसके बावजूद ये इलाके अब भी पिछड़े ही हैं। यहां भी श्रम शक्ति का लोहा दुनिया मानती रही है। अब इस पर चर्चा बेमानी है कि आखिर अपने प्राकृतिक संसाधन, मानव श्रम और सांस्कृतिक धरोहरों का रोजगार बढ़ाने और विकास का चौसर बिछाने की कोशिश क्यों नहीं की गई?

तालिका 1: विदेशी पर्यटकों की संख्या के अनुसार शीर्ष 10 राज्य

रैंक	राज्य/यूटी	विदेशी पर्यटक (2013)	
		नंबर	प्रतिशत
1.	महाराष्ट्र	4156343	20.8
2.	तमिलनाडु	3990490	20.0
3.	दिल्ली	2301395	11.5
4.	उत्तर प्रदेश	2054420	10.3
5.	राजस्थान	1437162	7.2
6.	प. बंगाल	1245230	6.2
7.	केरल	858143	4.3
8.	बिहार	765835	3.8
9.	कर्नाटक	636378	3.2
10.	गोवा	492322	2.5
कुल 10 राज्य		**17937718**	**89.9**
अन्य		**2013308**	**10.1**
कुल		**19951026**	**100.0**

स्रोत: संबद्ध सरकारों के पर्यटन मंत्रालय

तालिका 2: घरेलू पर्यटकों की संख्या के अनुसार शीर्ष 10 राज्य

रैंक	राज्य/यूटी	घरेलू पर्यटक (2013)	
		नंबर	प्रतिशत
1.	तमिलनाडु	244232487	21.3
2.	उत्तर प्रदेश	226531091	19.8
3.	आंध्र प्रदेश	152102150	13.3
4.	कर्नाटक	98010140	8.6
5.	महाराष्ट्र	82700556	7.2
6.	मध्य प्रदेश	63110709	5.5
7.	राजस्थान	30298150	2.6
8.	गुजरात	27412517	2.4
9.	प. बंगाल	25547300	2.2
10.	छत्तीसगढ़	22801031	2.0
कुल 10 राज्य		**972746131**	**84.9**
अन्य		**172534312**	**15.1**
कुल		**1145280443**	**100.0**

स्रोत: संबद्ध सरकारों के पर्यटन मंत्रालय

संभावनाओं का सर्किट

यह सच है कि अगर बौद्ध धर्म से जुड़े तीर्थ स्थलों को लेकर ही बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश को फोकस किया गया होता और जरूरी सहूलियतें मुहैया कराई गई होतीं तो यहां की तसवीर कुछ और ही होती। भगवान बुद्ध का जन्म लुंबिनी में हुआ था। जो नेपाल में है और वह बिहार की सीमा से सटा हुआ ही है। बुद्ध को वैराग्य हुआ तो उन्होंने बिहार के मौजूदा गया के जंगलों में जाकर तपस्या की। उन्हें यहीं बुद्धत्व यानी ज्ञान प्राप्त हुआ। लुंबिनी से गया की दूरी 501.9 किलोमीटर है। भगवान बुद्ध की वजह से गया को बोधगया के नाम से जाना जाता है लेकिन बुद्ध ने ज्ञान हासिल करने के बाद अपना पहला उपदेश उत्तर प्रदेश में वाराणसी के नजदीक सारनाथ में दिया था। बोधगया से वाराणसी की दूरी 255.1 किलोमीटर है।

भगवान बुद्ध ने तकरीबन मौजूदा मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र की यात्रा की। लेकिन उन्होंने आखिरी सांस पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में ईसा पूर्व 543 शती में ली थी। जिसे भगवान बुद्ध की महानिर्वाण स्थली के तौर पर पूरी दुनिया जानती है। यहां बारहवीं सदी तक बड़ा और शानदार नगर था। वाराणसी से कुशीनगर की दूरी 233 किलोमीटर है। कुशीनगर पूर्वी उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण शहर गोरखपुर से सिर्फ 53 किलोमीटर दूर है।

बोधगया से नजदीक ही नालंदा है, जहां ईसा पूर्व पांचवीं सदी में शिक्षा का बड़ा केंद्र नालंदा विश्वविद्यालय था जहां करीब दस हजार छात्र पढ़ते थे। कहा जाता है कि इसका पुस्तकालय इतना समृद्ध था कि जब उसमें आक्रांताओं ने आग लगाई तो महीनों तक आग बुझी ही नहीं। उस विश्वविद्यालय के खंडहर आज भी ना सिर्फ मौजूद हैं, बल्कि दर्शनीय भी हैं। कुशीनगर से नजदीक बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में केसरिया नामक जगह है जो मोतीहारी से करीब 40 किलोमीटर दूर है।

और भी हो सकते हैं सर्किट

पर्यटन के लिहाज से बुद्ध सर्किट के अलावा हिंदू सर्किट, सूफी सर्किट, जैन सर्किट, सिख सर्किट और क्रिश्चियनिटी सर्किट के तौर पर भी कई संभावनाएं हैं। वर्ष 2001 की जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक भारत की करीब 81 फीसद जनसंख्या हिंदू है जबकि यहां दूसरे नंबर पर 13.4 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ मुस्लिम हैं। तीसरे नंबर पर 2.3 फीसद की संख्या के साथ ईसाई हैं। जबकि चौथे नंबर पर 1.9 फीसद की संख्या के साथ सिख धर्मावलंबियों की संख्या है। पांचवें नंबर पर बौद्ध समुदाय हैं, जिसकी जनसंख्या में महज 0.8 प्रतिशत की ही हिस्सेदारी है। जबकि 0.4 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ जैन समुदाय छठवें नंबर पर है। महज 0.18 फीसदी हिस्सेदारी के साथ सबसे कम संख्या वाला समुदाय बहाई है।

जाहिर है कि इतनी बड़ी जनसंख्या और करीब पांच हजार साल पुरानी संस्कृति वाले समुदाय की बहुलता वाले तीर्थ और सांस्कृतिक स्थल भी देश में ज्यादा हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो कश्मीर से कन्या कुमारी तक और पूरब में अरूणाचल से लेकर पश्चिम में द्वारका तक-देश का शायद ही कोई कोना बाकी होगा, जहां तीर्थ या सांस्कृतिक केंद्र नहीं होंगे।

हिंदू संस्कृति में राम और कृष्ण की लोकप्रियता बाकी देवताओं की तुलना में कहीं ज्यादा है। इसलिए हिंदू सर्किट में दो उपसर्किटों के जरिए भी पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है और ये राम और कृष्ण के जीवन पर आधारित हो सकते हैं। राम ने 14 साल का वनवास काटा था। उस दौरान उन्होंने अयोध्या से लेकर श्रीलंका तक की यात्रा में कम से कम दो सौ पड़ाव पर अपना ठीया बनाया था या विश्राम किया था। उनका अपना सांस्कृतिक महत्व है। डॉक्टर राम अवतार ने इन दो सौ स्थलों का पता लगाया है। इस पर भी सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसके जरिए उत्तर से दक्षिण को भी जोड़ने की कोशिश की जा सकती है और जनसांख्यिकीय आवागमन को भी बढ़ाया जा सकता है। इसी तरह कृष्ण मथुरा में पैदा हुए, गोकुल में पले-बढ़े, मणिपुर तक से रुक्मिणी को ब्याह कर लाए। इसके साथ ही उनका प्रभाव क्षेत्र मौजूदा दिल्ली के आसपास रहा लेकिन उन्होंने अपना राजपाट गुजरात के द्वारका में बनाया। तो इस लिहाज से मथुरा-दिल्ली-द्वारका और मणिपुर को भी जोड़ा जा सकता है और कृष्ण सर्किट का विकास किया जा सकता है।

सूफी सर्किट के तहत भी कमोबेश पूरे देश में इस्लामिक आस्था के केंद्र हैं। सूफी सर्किट में अहम स्थान अजमेर में मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह, दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, मुंबई में अरब सागर के किनारे हाजी अली के साथ ही उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिला स्थित देवबंद दारूल उलूम प्रमुख है। इसके अलावा आगरा के नजदीक फतेहपुर सीकरी स्थित शेख चिश्ती की दरगाह आदि प्रमुख है। इसके अलावा खासकर उत्तर भारत में फैली मस्जिदें, दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरा का ताजमहल आदि सूफी सर्किट के ही प्रमुख पर्यटन स्थल हैं।

सिख पंथ का यूं तो ज्यादा प्रभाव पंजाब में रहा। लेकिन गुरू गोविंद सिंह का जन्म पटना में हुआ। इसके साथ ही महाराष्ट्र के नांदेड़ में स्थित सचखंड श्रीहजूर अबचलनगर साहिब भी सिख पंथ का प्रमुख तीर्थ स्थल है। गुजरात के कच्छ स्थित लखपत के किला इलाके में गुरूनानक देव के दांत और खंड़ाऊ रखे हुए हैं। कहा जाता है कि मक्का-मदीना की यात्रा उन्होंने यहीं से शुरू की थी। अमृतसर में तो सिख समुदाय का प्रमुख केंद्र है ही। तो इन केंद्रों को भी जोड़ा जा सकता है। इसी तरह जैन सर्किट को भी प्रमुख जैन तीर्थ स्थलों से जोड़कर उनकी आक्रामक मार्केटिंग करके जोड़ा जा सकता है और उनके जरिए पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस दिशा में भी नीति नियंताओं को सोचना चाहिए। इससे ना सिर्फ देश के एक समुदाय को दूसरे समुदाय को देखने-समझने का मौका मिलेगा, बल्कि उन्हें एक-दूसरे से जोड़ने का अवसर भी उपलब्ध होगा। ❑

जहां बौद्धकालीन दुनिया का सबसे लंबा और बड़ा स्तूप है। पूरी दुनिया वैशाली को लोकतंत्र की जननी के तौर पर जानती है। जहां ईसा पूर्व छठी शताब्दी में ही बहुस्तरीय लोकतंत्र कायम था। वैशाली बिहार की राजधानी पटना से कुछ ही किलोमीटर दूर है। एक तथ्य और ध्यान देने योग्य है कि यहां बौद्ध धर्मगुरूओं ने अपना आखिरी प्रवचन दिया था। यहां करीब 50 फीट लंबा स्तूप है। कहा जाता है कि यहीं भगवान बुद्ध का आखिरी संस्कार हुआ था।

कपिलवस्तु यानी लुंबिनी से लेकर वैशाली और नालंदा होते हुए बोधगया और उसके बाद वाराणसी-सारनाथ से लेकर कुशीनगर और मोतीहारी तक के बौद्ध तीर्थस्थलों को बौद्ध सर्किट के तौर पर जाना जाता है। इस पूरे सर्किट को सिर्फ अच्छी सड़कों से जोड़ दिया जाए और इन जगहों की आक्रामक मार्केटिंग की जाय तो कोई वजह नहीं कि इस इलाके में पर्यटन को बढ़ावा नहीं मिले। एक अनुमान के मुताबिक दुनिया में करीब 50 करोड़ लोग बौद्ध धर्मावलंबी हैं। हर साल अब भी भगवान बुद्ध की जिंदगी से जुड़े इन अहम तीर्थ स्थलों का दर्शन करने के लिए जापान, थाईलैंड, कोरिया, श्रीलंका, म्यांमार और चीन से लगातार लोग आते हैं। पर्यटन मंत्रालय द्वारा उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक साल 2013 में श्रीलंका से जहां 2 लाख 62 हजार 345 सैलानी भारत आए, वहीं जापान से 2 लाख 20 हजार 243 सैलानी आए। जापान, चीन और श्रीलंका के लोगों की आर्थिक हालत को देखते हुए यह संख्या बहुत कम है। इसे कई गुना तक बढ़ाया जा सकता है। मौजूदा केंद्र सरकार ने भी इस बुद्ध सर्किट के जरिए पर्यटन को बढ़ावा देने के महत्व को समझा है। यही वजह है कि मौजूदा सरकार ने पिछले साल यानी 2014 के अगस्त महीने में बिहार और उत्तर प्रदेश के पर्यटन मंत्रियों के साथ बैठक की थी और इस सर्किट को बढ़ावा देने के लिए पांच सौ करोड़ रूपए खर्च करने पर सहमति जताई गई थी।

बौद्ध सर्किट के विकास के लिए लगभग 5 अरब रुपये का अनुमानित बजट है जिसमें से केवल बिहार और उत्तर प्रदेश को अभी 45 करोड़ रूपये का शुरूआती पैकेज जारी कर दिया गया है जिसमें अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम 40 फीसद की भागीदारी करेगा, जबकि केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय आधी रकम मुहैया कराएगा। उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य को इसमें पांच-पांच प्रतिशत की भागीदारी निभानी है। केंद्र सरकार की योजना के मुताबिक बौद्ध सर्किट को फिलहाल उत्तर प्रदेश और बिहार में बढ़ावा दिया जाना है। इसके बाद इसे महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखंड और अरूणाचल प्रदेश समेत 17 राज्यों तक बढ़ाया जाना है। भारतीय पर्यटन विकास निगम (IIDC) के अनुसार दुनियाभर में एक अरब 40 करोड़ बौद्ध मतावलंबी हैं जिनमें से लगभग 50 करोड़ सक्रिय पर्यटक माने जाते हैं। इनके गंतव्य स्थल अपेक्षाकृत ज्यादा पिछड़े बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश राज्यों में हैं जहां इस तरह पर्यटन का आधार बनाकर रोजगार और व्यवसाय को बढ़ावा दिया जा सकेगा और इन इलाकों के स्थानीय तत्वों की अंतरराष्ट्रीय मार्केटिंग की जा सकेगी।

आकृति 2: उत्तर प्रदेश आने वाले बौद्ध पर्यटक

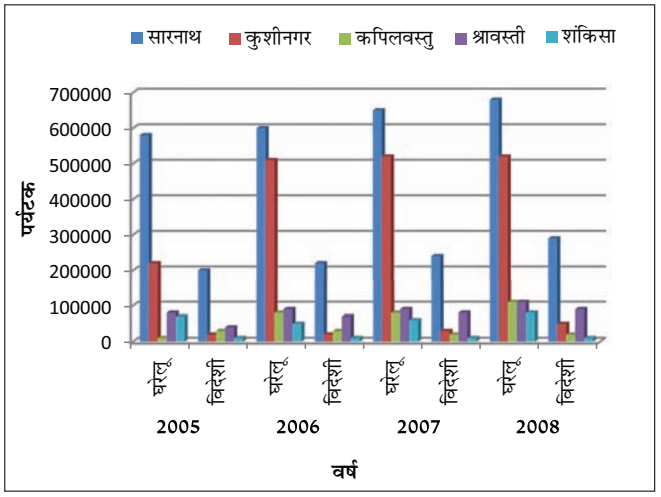

स्रोत: संबद्ध सरकारों के पर्यटन मंत्रालय

यहां याद करने योग्य तथ्य यह है कि हरियाणा में कुरूक्षेत्र के अलावा कोई बड़ा तीर्थ स्थल नहीं है। नदियां और पवित्र स्नान के स्थल भी नहीं हैं। इसके बावजूद हरियाणा में पर्यटन बढ़ा है। इसके पीछे वहां की अफसरशाही ने नब्बे के दशक में हाईवे टूरिज्म की अवधारणा पेश की। इसके तहत हाईवे के किनारे मोटल, रिजार्ट, रेस्टोरेंट और ढाबे खोले गए। अब हालत यह है कि दिल्ली, हरियाणा से सटे उत्तर प्रदेश और राजस्थान के साथ ही उत्तरांचल तक के लोग हाईवे के नजदीक स्थित रिजार्ट, ढाबे या रेस्टोरेंट में खाने आते हैं और हरियाणा की स्थानीय दस्तकारी मसलन पानीपत की दरी और पंचरंगा अचार को भी खरीद कर ले जाते हैं। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन और आर्थिक गतिविधि तेज करने में मदद मिली है।

ऐसे में सवाल यह उठता है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार स्थित बौद्ध सर्किट पर अच्छी सड़कें क्यों नहीं बनाई जा सकतीं। उनके किनारे हरियाणा की तर्ज पर रेस्टोरेंट, मोटल, रिजार्ट और ढाबे क्यों नहीं खोले जा सकते। बौद्ध सर्किट स्थित वाराणसी की बनारसी साड़ियां, भदोही की कालीन, गोरखपुर की बिंदी और अमरूद, बलिया की पालकी, गया का तिलकुट और गजक, वैशाली के नजदीक स्थित मुजफ्फरपुर की लीची और हल्दी जैसी स्थानीय चीजों की आक्रामक मार्केटिंग क्यों नहीं की जा सकती। स्थानीय स्तर पर इस इलाके में जो दस्तकारी की अनूठी परंपराएं रही हैं, वे उचित मार्केटिंग और प्रोत्साहन के अभाव में दम तोड़ रही हैं। कृषि उपज भी उचित रख-रखाव के अभाव में या तो बर्बाद होती है या सस्ते में किसान बेचने को मजबूर होते हैं।

बौद्ध सर्किट को विकसित करने के लिए सबसे पहले जरूरी होगा कि गोरखपुर, कुशीनगर, मोतीहारी, लुंबिनी, वैशाली, नालंदा, गया, वाराणसी-सारनाथ और गोरखपुर-कुशीनगर को विश्वस्तरीय सड़कों से जोड़ना होगा। अभी तक इस इलाके में आने वाले विदेशी सैलानी पटना या वाराणसी के हवाई अड्डे का इस्तेमाल करते हैं जबकि गया और गोरखपुर में भी हवाई अड्डे हैं। इस मार्ग को भी छोटे विमान सेवा से जोड़ा जाना होगा। उससे भी बड़ी बात इलाके में कानून व्यवस्था को सुधारा जाना होगा। अगर ऐसा किया जाता है और बौद्ध सर्किट की आक्रामक मार्केटिंग की जाती है, कोई वजह नहीं कि केरल और हरियाणा की तर्ज पर इस इलाके में भी विकास का नया इतिहास रचा जा सकेगा। ❑

ENGLISH
by
Muntosh Mishra "भारत"
Complete Grammar + Writing Skills
* 7 DAYS' CLASSES FREE
* Vocabulary के लिए आधे घंटे हर दिन
* Practice sets + Previous years' के Questions का solution
* मात्र 3-4 महीने में English की किसी भी Competition के लिए पूर्ण तैयारी
* Printed, updated study materials
* UPSC, PO और SSC के लिए Separate Batches
* English में लिखना सिखाने पर विशेष ध्यान
अगर आपको लगता है कि आपकी English बहुत कमजोर है तो Free trial classes जरूर लें।
Satisfaction नहीं होने पर Fees 45 दिनों में कभी भी वापस
THE WELL™
SANCTUM OF SUCCESS
308, Top Floor, Jyoti Bhawan
In Front of Post Office
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9
09811141396, 09899324319
YH-22/2015

पर्यटन क्षेत्र से जुड़े सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दे

विकास दिव्यकीर्ति

बेशक हर व्यक्ति एक भिन्न उद्देश्य के साथ भ्रमण पर निकलता है लेकिन भिन्न समाजों में घूमने-फिरने से एक परिणाम समान रूप से सामने आता है। वह है उन समाजों के बीच सांस्कृतिक विनिमय। यह परिणाम सकारात्मक भी हो सकता है आरूैर नकारात्मक भी। कई बार विवेचक का स्वकेंद्रित दृष्टिकोण विभिन्न समाजों के बीच गलतफहमियां भी पैदा करता है और कई बार आवश्यक विवादों को जन्म भी देता है। पर्यटन के जरिए कुछ लोग दूसरे समाजों को गहराई से समझ पाते हैं और इस तरह से समाजों में सकारात्मकता की नींव पड़ती है तो वहीं दूसरों के सिरों से खारिज करने की प्रकृति कई बार अन्य समाजों की मौलिकता के सामने ही अस्तित्व का संकट उत्पन्न करने लगती है

घूमने-फिरने की सबकी वजहें एक सी नहीं होतीं। कुछ लोग प्रकृति की सुंदरता निहारने के लिए घरों से निकलते हैं तो कुछ अपनी थकान भरी जिंदगी से फुरसत के कुछ पल चुराने के लिए। कुछ को रोज़मर्रा की ढर्रेदार जिंदगी की उकताहट दूर करने के लिए साहसिक या रोमांचकारी पर्यटन सुहाता है तो कुछ धार्मिक-आध्यात्मिक लाभ की प्रेरणा से तीर्थ स्थानों की ओर कूच करते हैं। इन सभी वर्गों से अलग, पर्यटकों का एक वर्ग ऐसा भी होता है जिसके लिए पर्यटन का मुख्य प्रयोजन अपने और अन्य समाजों को जानना और उनसे संवाद करना होता है। यह आलेख मुख्यत: उन पर केंद्रित है; हालांकि पर्यटकों के बाकी वर्गों से जुड़े सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ भी इसका हिस्सा बनेंगे।

सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यटन: अर्थ-विस्तार

पहला सवाल यह है कि सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यटन क्या होता है और इसमें रुचि रखने वाले अपनी यात्राओं में क्या तलाशते हैं? दरअसल 'सामाजिक पर्यटन' की संकल्पना एक बड़ी छतरी के जैसी है जिसमें कई तरह की धारणाएं शामिल हो जाती हैं। हम इसके अलग-अलग रूपों को क्रमश: समझेंगे।

सामाजिक पर्यटन का पहला रूप वह है जिसमें व्यक्ति को दूसरे समाजों से नहीं बल्कि अपने ही समाज के विभिन्न वर्गों से परिचित कराया जाता है। आप सोच रहे होंगे कि एक ही समाज के लोगों को आपस में परिचित कराने की क्या जरूरत है; और अगर है भी तो इसमें पर्यटन पर अनावश्यक खर्च क्यों किया जाए? आखिर एक समाज के लोग तो बिना किसी तामझाम के परस्पर संवाद कर ही सकते हैं।

अगर आप सचमुच ऐसा सोच रहे हैं तो गलती कर रहे हैं। दरअसल जब तक एक समाज के लोग अपनी प्रदत्त स्थितियों में रहते हैं, तब तक उन्हें आपस में चाहे-अनचाहे वैसा ही सामाजिक व्यवहार रखना पड़ता है जो उस समाज में मान्यता हासिल कर चुका होता है। पर अगर समाज के कुछ लोग एक साथ किसी दूसरी जगह जाते हैं तो व्यवहार के स्थापित पैटर्न टूटने लगते हैं। जो लोग अपनी जातीय या वर्गीय दूरियों के कारण कभी ठीक से संवाद ही नहीं कर पाते, ऐसी यात्रा में वे फुरसत में होने के कारण बातचीत का पर्याप्त मौका प्राप्त करते हैं। अनौपचारिक संवाद की गुंजाइश भी उन्हें निकट आने का मौका देती है।

कल्पना कीजिए कि एक मोहल्ले के कुछ परिवार एक साथ 8-10 दिनों की यात्रा पर निकलते हैं। इनमें से कुछ परिवार ऐसे होंगे जिनके आपसी संबंध शुरू से अच्छे रहे हैं पर कुछ परिवार ऐसे भी होंगे जिनमें अपरिचय या असहजता की स्थिति है। धर्म, जाति, मूल राज्य तथा नस्ल की दृष्टि से भी इन परिवारों में पर्याप्त वैविध्य है। अमरीका में हुए कुछ प्रयोगों में देखा गया कि जब कुछ श्वेत और अश्वेत परिवार एक साथ यात्रा पर गए तो शुरुआती एक दो दिनों की झिझक के बाद वे एक दूसरे के सामने खुलने लगे। लगातार साथ होने के कारण, तथा काम का बोझ न

लेखक पूर्व सिविल सेवक हैं। तीन विषयों हिंदी साहित्य, समाजशास्त्र व जनसंचार में स्नातकोत्तर डिग्रियां और 'उत्तर आधुनिकता' विषय पर पीएचडी करने के बाद कुछ समय के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन भी कर चुके हैं। पर्यटन में इनकी गहरी दिलचस्पी रही है। इनके यात्रा वृत्तांतों में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण प्रमुख होता है। संप्रति विभिन्न सामाजिक विषयों पर स्वतंत्र लेखन करते हैं। ईमेल: vikasdivyakirti@gmail.com

इतिहास में देखें तो फाहियान, ह्वेनसांग, अलबरूनी, इब्न बतूता और मार्को पोलो आदि जिन विदेशी यात्रियों ने भारत भ्रमण करके ऐतिहासिक महत्व के वर्णन प्रस्तुत किए, वे एक अर्थ में सामाजिक पर्यटन की ही शुरुआत कर रहे थे।

होने के कारण वे लंबी तथा अनौपचारिक बातचीत करने लगे और उन्हें पहली बार दूसरे समूह का नज़रिया समझने का मौका मिला। जिन बातों की वजह से वे एक-दूसरे को संदेह की नजर से देखते थे, वे अधिकांश बातें गलत साबित हुईं। ऐसे प्रयोग 1954 के प्रसिद्ध केस 'ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ एजुकेशन' के बाद धीरे-धीरे संभव हुए जिसमें अमरीकी सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय दिया था कि समानता के अधिकार में निहित है कि अश्वेत बच्चों को श्वेत बच्चों के साथ उन्हीं के विद्यालयों और कक्षाओं में पढ़ने का अधिकार है। उसके बाद कई राज्यों में दोनों नस्लों के बच्चे एक ही बस में आने-जाने लगे और कई उदाहरणों में पाया गया कि स्कूल बस का साहचर्य उनके बीच जमे सामाजिक अंतराल को कम करने में सहायक सिद्ध हुआ। इस संबंध में एमी स्टुअर्ट वेल्स तथा उनके सहयोगियों की पुस्तक 'इन सर्च ऑफ ब्राउन' काफी रोचक है जिसे हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने 2005 में प्रकाशित किया है। ऐसे ही उदाहरण इंग्लैंड में कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेंट परिवारों के स्तर पर भी देखे गए हैं। धीरे-धीरे विकसित देशों में पर्यटन का यह प्रारूप प्रसिद्ध होने लगा। भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल इंटेलिजेंस) के सिद्धांतकारों जैसे डेनियल गोलमैन ने भी विभिन्न समूहों के साहचर्य से होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों पर बल दिया है।

यह प्रयोग अगर स्कूली बच्चों के स्तर पर किया जाए तो ज्यादा सफल होता है। वे बचपन से ही विभिन्न सामाजिक समूहों के प्रति सहज हो जाते हैं और दुर्भावना पैदा करने वाली गलतफहमियों से बचते हैं। भारत सहित कई देशों में स्कूली स्तर पर यह कोशिश की जाने लगी है कि बच्चों की शैक्षिक यात्राओं के दौरान उन्हें अपने से भिन्न समुदायों के साथ संवाद का अधिक से अधिक अवसर मिले। इससे वह 'सामाजिक अंतराल' या 'सोशल डिस्टेंस' खत्म होता है जिसे बेणार्ड से जैसे विख्यात समाजशास्त्री गलतफहमियों के उपजने की सबसे बड़ी वजह बताते हैं। यह बात पूरे विश्वास के साथ कही जा सकती है कि अगर एक हिंदू और एक मुसलमान बच्चे को, जो कट्टर परिवारों से होने के कारण एक-दूसरे के समुदाय के प्रति सकारात्मक भावना नहीं रखते हैं, कुछ दिनों के लिए साथ घूमने-फिरने को भेज दिया जाए तो यात्रा खत्म होते-होते उनकी पारस्परिक दुर्भावनाएं भी खत्म हो चुकी होंगी। यह 'सामाजिक समावेशन' या 'सोशल इंक्लूजन' का कितना प्रभावशाली उपाय है।

सामाजिक पर्यटन का दूसरा रूप वह है जिसमें किसी नए समाज को जानने-समझने की जिज्ञासा केंद्र में होती है। ये लोग देखना चाहते हैं कि दूसरे समाजों ने अपनी सामुदायिक जरूरतें पूरी करने के लिए जो सामाजिक ढांचे खड़े किए हैं, वे हमारे ढांचों से कितने अलग हैं? साथ ही, इस प्रक्रिया में यह तुलना भी होती चलती है कि हमारी सामाजिक व्यवस्था उनकी व्यवस्था की तुलना में कहां खड़ी है? अगर हम किसी मामले में कमजोर नजर आ रहे हैं तो हम इस समाज से क्या सीख ले सकते हैं आदि।

यूरोप के देशों (व कुछ मात्रा में लगभग सभी देशों) में आजकल सामाजिक पर्यटन के अंतर्गत एक नई संकल्पना प्रचलन में आई है। वहां हर शहर में कई लोग खुद को मेजबान के तौर पर पंजीकृत कराते हैं जिसका अर्थ है कि वे विदेशी पर्यटकों को अपने साथ अपने घर पर ठहराने के इच्छुक हैं। यह नेटवर्क कुछ वेबसाइटों के मार्फत चलता है।

इस वर्ग में आने वाले कुछ पर्यटक तो पर्यटक कम, शोधक ज्यादा होते हैं। इतिहास में देखें तो फाहियान, ह्वेन सांग, अलबरूनी, इब्न बतूता और मार्को पोलो आदि जिन विदेशी यात्रियों ने भारत भ्रमण करके ऐतिहासिक महत्व के वर्णन प्रस्तुत किए, वे एक अर्थ में सामाजिक पर्यटन की ही शुरुआत कर रहे थे। आधुनिक युग में रॉबर्ट मैलिनॉस्की और रैडक्लिफ ब्राउन जैसे मानवशास्त्रियों ने जिस तरह से विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों की केस स्टडी करनी शुरू की, उसने लोगों में बड़े पैमाने पर सामाजिक पर्यटन के प्रति रुचि पैदा की। आजकल बहुत से समाजशास्त्री नए-नए समाजों का रोचक वर्णन पेश करते हैं और लोगों में इस तरह की जिज्ञासा रोप देते हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय समाज पर जिस मनोयोग से आंद्रे बेतई ने काम किया है, उसे सामाजिक पर्यटन का चरम रूप न माना जाए तो क्या माना जाए? निश्चय ही एक अर्थ में इन सब अनुसंधताओं को भी सामाजिक पर्यटन का हिस्सा माना जाना चाहिए।

आजकल बहुत से आम पर्यटक भी सामाजिक पर्यटन का शौक रखने लगे हैं। विशेष तौर पर आदिवासी क्षेत्रों में यह प्रवृत्ति ज्यादा दिखाई पड़ती है। उदाहरण के लिए अंडमान निकोबार और उत्तर-पूर्वी राज्यों की यात्रा पर जाने वाले लोगों में ऐसी जिज्ञासा प्रबल तौर पर दिखती है। अंडमान के जारवा समुदाय के लोगों को देखना और उनकी जीवन पद्धति को जानना वहां जाने वाले पर्यटकों के लिए सपना पूरा होने जैसा होता है। ऐसे क्षेत्रों में यह भी देखा जा रहा है कि पर्यटक कुछ दिनों तक वही वेशभूषा और खानपान अपना लेते हैं जो वहां की स्थानीय संस्कृति में प्रचलित होता है। कई कंपनियां, जो टूर और ट्रैवल से जुड़े काम करती हैं, आजकल देश या विदेश के यात्रा कार्यक्रम बनाते समय गंतव्य स्थान के सामाजिक उत्सवों का भी पूरा ध्यान रखती हैं। भारत में जिस तरह कुल्लू और मैसूर का दशहरा प्रसिद्ध है; वैसे ही अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन में ब्राजील का 'कार्निवल' और स्पेन का 'ला टोमैटिना' दुनिया भर के पर्यटकों की पसंद में शामिल हैं।

यूरोप के देशों (व कुछ मात्रा में लगभग सभी देशों) में आजकल सामाजिक पर्यटन के अंतर्गत एक नई संकल्पना प्रचलन में आई है। वहां हर शहर में कई लोग खुद को मेजबान के तौर पर पंजीकृत कराते हैं जिसका अर्थ है कि वे विदेशी पर्यटकों को अपने साथ अपने

कई पर्यटक दूसरे समाज से संवाद करते समय यह ध्यान नहीं रख पाते कि उस समाज की स्वायत्तता का उल्लंघन न हो। वे यह मानकर चलते हैं कि पैसा खर्च करने की हैसियत होने के कारण वे मालिक हैं, जबकि उनके सामने उपस्थित समाज उनके गुलामों का समुदाय है। इसका हालिया उदाहरण कुछ वर्ष पहले अंडमान के क्षेत्र में दिखा।

घर पर ठहराने के इच्छुक हैं। यह नेटवर्क कुछ वेबसाइटों के मार्फत चलता है। विदेशी पर्यटकों में से कई ऐसे होते हैं जिनकी रुचि परंपरागत होटलों में ठहरने में नहीं होती बल्कि वे वहां के स्थानीय समाज को नजदीक से देखना-समझना चाहते हैं। ऐसे पर्यटकों को किसी स्थानीय मेजबान के घर पर रखा जाता है। पर्यटक उस घर के साधारण सदस्यों की तरह ही रहते हैं और इस प्रक्रिया में स्थानीय संस्कृति का हर वह पक्ष देख पाते हैं जो सामान्यत: पर्यटकों को उपलब्ध नहीं होता। फेसबुक पर सक्रिय 'सोलो ट्रैवलर' अनुराधा बेनीवाल ने अपनी कई टिप्पणियों में ऐसे अनुभव साझा किए हैं जो पढ़े जाने योग्य हैं। भारत में भी यह प्रवृत्ति शून्य नहीं है। दिल्ली में आपको कई बार ऐसा दिखेगा कि यूरोप के पर्यटक किसी घर में मेहमान बनकर रह रहे हैं और वेशभूषा व खानपान में एकदम हमारे तौर-तरीकों का अनुकरण कर रहे हैं।

पोर्ट ब्लेयर से दिगलीपुर के रास्ते में, जहां दो जगह जारवा जनजाति का क्षेत्र (मुख्यत: बारटांग) पड़ता है, यह कठोर नियम लागू है कि पर्यटकों के वाहन दिन में तीन बार निश्चित समय पर एक साथ ही जाते हैं और इस कारवां के आगे-पीछे पुलिस के वाहन चलते हैं। पर्यटकों को सख्त हिदायत दी जाती है कि अगर जारवा लोग रास्ते में दिखें तो बात करना तो दूर, उनकी तस्वीर खींचना भी दंडनीय अपराध है।

चुनौतियां और सावधानियां

अब इस प्रश्न पर गौर किए जाने की जरूरत है कि सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यटन से जुड़ी क्या चुनौतियां हैं और ऐसे पर्यटकों को किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए?

पहली चुनौती यह है कि कई पर्यटक दूसरे समाज से संवाद करते समय यह ध्यान नहीं रख पाते कि उस समाज की स्वायत्तता का उल्लंघन न हो। वे यह मानकर चलते हैं कि पैसा खर्च करने की हैसियत होने के कारण वे मालिक हैं, जबकि उनके सामने उपस्थित समाज उनके गुलामों का समुदाय है। इसका हालिया उदाहरण कुछ वर्ष पहले अंडमान के क्षेत्र में दिखा। वहां कई लोग जारवा जनजाति के क्षेत्र से गुजरते हुए अजीबोगरीब हरकतें करते थे, जैसे उन्हें पैसे या किसी खाद्य पदार्थ का लालच देकर नाचने को मजबूर करना। गौरतलब है कि जारवा समुदाय दुनिया की सबसे आदिम जनजातियों में से एक है जिसके अधिकांश सदस्य अपने शरीर को ढंकते भी नहीं हैं। उनके युवा सदस्य अक्सर कारें तथा अन्य वाहन देखकर आकर्षित हो जाते थे। एक बार कुछ पर्यटकों ने उन्हें कुछ बिस्किट आदि दिए जिसके बाद उसी स्वाद के लालच में वे सड़क के नजदीक खड़े होकर पर्यटकों से खाने-पीने की वस्तुएं मांगने लगे। उनकी इसी कमजोरी का फायदा उठाकर कुछ पर्यटक उन्हें खाने-पीने की वस्तुओं की ऐवज में नाचने को मजबूर करने लगे। एक बार एक विदेशी पत्रकार ने ऐसी हरकत का वीडियो बना लिया जो इंटरनेट पर वायरल हो गया। उस वीडियो से दुनिया भर में भारत की किरकिरी हुई और केंद्र सरकार को कुछ कठोर निर्णय करने पड़े। अब स्थिति यह है कि पोर्ट ब्लेयर से दिगलीपुर के रास्ते में, जहां दो जगह जारवा जनजाति का क्षेत्र (मुख्यत: बारटांग) पड़ता है, यह कठोर नियम लागू है कि पर्यटकों के वाहन दिन में तीन बार निश्चित समय पर एक साथ ही जाते हैं और इस कारवां के आगे-पीछे पुलिस के वाहन चलते हैं। पर्यटकों को सख्त हिदायत दी जाती है कि अगर जारवा लोग रास्ते में दिखें तो बात करना तो दूर, उनकी तस्वीर खींचना भी दंडनीय अपराध है। अब सामाजिक पर्यटन के शौकीन जारवा लोगों को देखकर भी मन मसोस कर रह जाते हैं क्योंकि उनसे संवाद के अवसर खत्म हो गए हैं। कहना न होगा कि इस परिणति के जिम्मेदार वही लोग हैं जिन्होंने सामाजिक पर्यटन का शौक तो पाला पर उसके लिए अपेक्षित अनुशासन का निर्वाह नहीं किया।

दूसरी चुनौती पर्यटकों को यह समझाना है कि संस्कृतियों को देखने-समझने की सही निगाह क्या हो? इस संबंध में तीन नजरिये प्रसिद्ध हैं। पहला, 'ऐथनोसेंट्रिक' नज़रिया कहलाता है जिससे ग्रस्त लोग अपनी संस्कृति को पूर्णत: सही या मानक मानते हैं और दूसरी संस्कृति के हर पक्ष का मूल्यांकन इस कसौटी पर करते हैं कि वह हमारी संस्कृति के कितना निकट है? जैसे, कोई भारतीय यूरोप की महिलाओं की वेशभूषा देखकर अनावश्यक व अनुचित तो यह 'ऐथनोसेंट्रिक' नज़रिया कहलाएगा क्योंकि इस आलोचना के मूल में यही इच्छा है कि दुनिया के हर समाज को विवेचक समाज के तरीके से चलना चाहिए। सभी देशों की दक्षिणपंथी विचारधाराएं प्राय: इसी नजरिए का समर्थन करती हैं।

दूसरा नज़रिया 'जीनोसेंट्रिक' नज़रिया कहलाता है जिसमें व्यक्ति विदेशी संस्कृति को ऐसी अंधभक्ति से देखता है कि अपनी संस्कृति के हर तत्व का पुनर्मूल्यांकन उसकी तुलना में करने लगता है। जैसे कोई अमरीका की 'लेटनाइट लाइफ' देखकर कहे कि भारत कितना पिछड़ा देश है। तीसरा नज़रिया सामाजिक पर्यटकों के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है और इसे सांस्कृतिक सापेक्षवाद या 'कल्चरल रिलेटिविज्म' कहा जाता है। इसका अर्थ है कि दुनिया की सभी संस्कृतियां अपनी परिस्थितियों के अनुसार श्रेष्ठ हैं तथा हमें अपनी संस्कृति के साथ उनकी तुलना करने से बचना चाहिए। हमें दूसरी संस्कृतियों को जिज्ञासा और सम्मान के भाव से देखना चाहिए और उनकी विभिन्नताओं को सहजता से लेना चाहिए। हमें ध्यान रखना चाहिए कि जिस तरह वह संस्कृति हमारे लिए अजीब है, वैसे ही हमारी संस्कृति उनके लिए है।

जिस तरह से हमारी दुनिया 'ग्लोबल' हो रही है, हमें यह मानकर चलना चाहिए कि नई पीढ़ियां हमारी तुलना में कई गुणा अधिक व्यवहार विनिमय देश विदेश के नए-नए समुदायों से करने वाली हैं। हमारे लिए दिल्ली से चेन्नई जाना जितनी बड़ी बात है, उनके लिए दिल्ली से ब्राजील या अमरीका जाना वैसी ही बात होगी।

संभावनाएं

जिस तरह से हमारी दुनिया 'ग्लोबल' हो रही है, हमें यह मानकर चलना चाहिए कि नई पीढ़ियां हमारी तुलना में कई गुणा अधिक व्यवहार विनिमय देश विदेश के नए-नए समुदायों से करने वाली हैं। हमारे लिए दिल्ली से चेन्नई जाना जितनी बड़ी बात है, उनके लिए दिल्ली से ब्राजील या अमरीका जाना वैसी ही बात होगी। शिक्षा से लेकर चिकित्सा, नौकरी, व्यापार और पर्यटन वे कारक बनेंगे जो इन यात्राओं को प्रोत्साहन देंगे। ऐसे समय में जरूरी हो जाता है कि हम अपनी नई पीढ़ियों को समय रहते उन 'कोस्मोपोलिटन' मूल्यों से परिचित करा दें जो वैश्विक सामाजिक पर्यटन में अपेक्षित होते हैं। ❑

यात्राएं जिन्होंने भारत को बदला

संजय श्रीवास्तव

बुद्ध के उपदेश, अशोक के धम्म, आदि शंकराचार्य के धर्म-जागृति केंद्रित शास्त्रार्थ, स्वामी विवेकानंद के विश्वव्यापी क्रांतिकारी भाषण, ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध महात्मा गांधी का आंदोलन, बिनोवा भावे का भूदान आंदोलन और सत्तर के दशक में आपातकाल के विरुद्ध लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में संपूर्ण क्रांति, इन सभी कालजयी घटनाओं में एक चीज सर्वनिष्ठ है, वह यह कि इन सबका माध्यम थी यात्राएं। कुछ देशव्यापी तो कुछ देश की सीमाओं से भी आगे जाकर की गई यात्राएं। यहां तक कि समाज सुधार के लिए राजाराम मोहन राय और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रयास और देश के विकास के लिए पं. जवाहरलाल नेहरू की दृष्टि को भी उनकी विश्वव्यापी यात्राओं के आधार पर ही मूर्त रूप मिला

हजारों साल पहले जब ये दुनिया ऐसी नहीं थी, तब कुछ खानाबदोश कबीले थे। घुमक्कड़ कबीले। आज यहां, कल वहां। ठहरना उनकी प्रवृति नहीं थी। पैरों में थे उनके पंख। वो जमीं के परिंदे थे। कभी पहाड़ों का सीना चीरते हुए आगे बढ़ते हुए तो कभी नदियों की तेज धाराओं से होड़ लेते, समुद्र की विशालता भी उनकी हिम्मत को डिगा नहीं पाती। उनकी जिंदगी के मायने यात्राओं में बसे थे। न घर था और न कोई ठौर। रोज नया मुकाम, नये संघर्ष। साथ ही सीखना जीवन के सलीकों को। कबीले बड़े होते गए। अलग अलग टुकड़ों में बंटे। अलग-अलग दिशाओं में फैले। कहते हैं कि दुनिया इन्होंने ही बसाई। जिस कोने में गए, वहां की मिट्टी-पानी में रमकर नई संस्कृति, भाषा और परंपराओं को जन्म दिया। जब ठहरे तो सभ्यताओं का उदय होने लगा। हजारों साल पहले भारत की ये धरती न जाने कितने देशों और गणराज्यों में बंटी थी। कहते हैं ईसा से पहले भी हमारे यहां ज्ञान था, वैभव की छटा थी, सोने की चिड़ियों का बसेरा था। मंत्रों के आह्वान फिजाओं में घुलते थे।

जब यूरोप में पुनर्जागरण की शुरुआत हो रही थी तो भी भारत खास आकर्षण था। यूरोप के जहाजियों और यात्रियों के लिए स्वप्न बिंदु थी भारत यात्रा। वह देश जहां स्वर्ण आभूषण दमकते थे, मसाले थे, बहुमूल्य पत्थर के भंडार थे और थीं विशाल अट्टालिकाएं। साथ में पानी और उपजाऊ मिट्टी से लहलहाती अपार कृषि संपदा। यूरोप के जहाजी आहें भरते थे-काश! जिंदगी में एक बार इस देश जाने का मौका मिल सके। इसके फायदे नुकसान दोनों हुए। हमारी संपदा, यश और समृद्धि ने साम्राज्यवादियों और आक्रमणकारियों को भी आकर्षित किया। बार बार ये धरती हमलों से लहुलुहान हुई। पंद्रहवीं शताब्दी में मुगल जाति का आक्रमण इतना जबरदस्त था कि यहां उनका ही कब्जा हो गया। उनके साये में बीतीं दो लंबी शताब्दियां। फिर अंग्रेज आए, यहां के शासक बन बैठे। ये समय वो भी था जब देशभर में फैलीं 500 से ज्यादा देसी रियासतों और राजाओं ने एक होना शुरू किया।

ये समय का खासा महत्वपूर्ण संधिकाल था। कहते हैं कि यात्राएं सिखाती हैं, दिमाग की खिड़कियां खोलती हैं, ज्ञान के नये चंवर डुलाती हैं, बदलाव की वाहक होती हैं। यकीनन इस संधिकाल में कुछ चमत्कारिक यात्राओं ने इस देश में चमत्कार कर दिया। अंग्रेजों की दासता के साथ हम जकड़े हुए थे कुरीतियों, अंधविश्वास, छूआछूत, जातिवाद और अशिक्षा से भी। राष्ट्रीय चेतना भी कहां थी। ऐसे में कुछ यात्राओं ने देश को झकझोरा। सोते से जगाया। नई चेतना और सूत्र में बांधा।

यूं भी भारतीय सभ्यता के हजारों सालों के इतिहास में यात्राओं की एक लंबी परंपरा रही है। इसके एक छोर पर अगर महात्मा बुद्ध दिखते हैं तो दूसरे छोर पर महात्मा गांधी। बुद्ध की यात्रा राजमहल से निकलकर झोंपड़ी और गांवों तक गई। उन्होंने अपनी यात्राओं के जरिये धर्म और दर्शन को मानवीय दुखों और सामाजिक असमानताओं को दूर करने का माध्यम बनाया। वो खूब यात्राएं करते थे। गांव गांव घूमते थे। ज्ञान की गंगा जगाते थे। बुद्ध के दर्शन और यात्राओं से प्रभावित होकर मौर्य शासक अशोक ने भी लंबा समय

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। लगभग ढाई दशक से बहुविध विषयों पर लेखन कर रहे हैं। प्रकाशित पुस्तकें: *1857 से लेकर 1947 वे 90 साल, मर्लिन मुलरो-स्वप्न परी, क्रिकेट के चर्चित विवाद* आदि। संप्रति एक राष्ट्रीय दैनिक से जुड़े हैं। ईमेल: sanjayratan@gmail.com

राजा राममोहन राय जब वर्ष 1830 में इंग्लैंड और फ्रांस की यात्रा से लौटे तो उन्होंने सामाजिक परिवेश में बदलाव का आंदोलन ही छेड़ दिया। आने वाले बरसों में इसका खासा असर साफ-साफ दिखा। आज हम जिस खुले माहौल में सांस ले रहे हैं, उसका बहुत श्रेय उन्हें ही देना चाहिए।

यात्राओं में व्यतीत किया, जिससे वह आम जनता के संपर्क में आ सका और शासन को मानवीय स्वरूप देने में सफल हुआ। जब देश धार्मिक कर्मकांडों के चरम से घिर चुका था तो शंकराचार्य ने यात्रा का बीड़ा उठाया। केरल से कन्याकुमारी की हजारों मील की यात्रा पैरों से नापी। जगह जगह शास्त्रार्थ के माध्यम से धर्म के कर्मकांडीय स्वरूप पर गहरी चोट की। धार्मिक संप्रदायों के बीच की दूरी पाटने की कोशिश की।

असल मायनों में जिन यात्राओं ने देश को पराधीनता से निकालने और बदलने का काम किया, वो उन्नीसवीं शताब्दी में विवेकानंद से शुरू हुई थीं। इस तेजस्वी युवा ने वाराणसी से देश को जगाने की यात्रा शुरू की। लोग तो उन्हें देखते ही रह जाते। कितना तेज और कितनी सादगी। उनकी बातें गहरा असर करतीं। लंबा चौड़ा कद। उन्नत ललाट। भगवा रंग को चोला। गजब का आकर्षण था उनके व्यक्तित्व में। उत्तर भारत के तमाम शहरों, पहाड़ी इलाकों से होते हुए वह राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और फिर दक्षिण की ओर बढ़े। जहां जाते भीड़ उन्हें देखने और सुनने के लिए उमड़ी चली आती। वह देश को समझ भी रहे थे और जगा भी रहे थे।

जब ये यात्रा पूरी हुई तो वह 1893 में उस सफर पर निकले जिसने पहली बार विदेशों में भारत की एक अलग छवि बनाई। आध्यात्मिक और शैक्षिक तौर पर ज्ञानवान देश की। इस यात्रा में वह जापान से होते हुए शिकागो गए। शिकागो में विश्व धार्मिक सभा के जादुई संबोधन की गूंज तो आज तक सुनाई देती है। वापसी में वह इंग्लैंड के साथ यूरोप में होते हुए लौटे। उन्होंने देखा कि दुनिया किस तरह बदल रही है। किस तरह व्यापक सामाजिक और आर्थिक बदलावों से गुजर रहा है समूचा यूरोप। ये वहां औद्योगिकीकरण, नारी मुक्ति की बेला थी। वह 1896 में स्वदेश आ पहुंचे। अब उनके पास कुछ ऐसी बातें थीं जिनका आत्मसात वो भारतीय संस्कृति और परंपराओं के साथ करना चाहते थे। उन्होंने घूम घूमकर भारतीय महिलाओं को शिक्षा, औद्योगीकरण और आजादी की बात की। जातिवाद खत्म करने की अपील की। देश में विज्ञान की पहली बार वकालत करने वाले वही थे। वह पहले शख्स थे जिन्होंने अपनी पाश्चात्य यात्रा के जरिये देशभर में राष्ट्रीय, सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना फैलाई। देश के बहुत से राजे रजवाड़ों और नेताओं पर उनकी बातों का इतना सकारात्मक असर पड़ा कि उन्होंने उस दिशा में काम भी शुरू कर दिया। महात्मा गांधी, बिपिन चंद्र पाल और बाल गंगाधर पर भी उनका खूब असर था। यूरोप का जागरण वह देख आए थे, लिहाजा उनकी बातों ने देश में औद्योगीकरण के लिए भी नया माहौल

राहुल सांकृत्यायन तो ज्ञान और दुर्लभ ग्रंथों की खोज में हजारों मील दूर पहाड़ों और नदियों के बीच भटके, उन ग्रंथों को खच्चरों में बांधकर देश लाए। सामाजिक क्रांति की दिशा में उनका योगदान भी कोई कम नहीं। उनके जीवन का मूलमंत्र ही घुमक्कड़ी था, वो कहते थे कि यात्राएं जीवन को गतिशीलता के साथ जोड़ती हैं। उन्होंने घुमक्कड़ी पर काफी कुछ लिखा। उनके शब्दों में घुमक्कड़ी के बढ़कर व्यक्ति और समाज के लिए कोई हितकारी नहीं हो सकता।

बनाया। कहा जाता है कि जमशेद जी टाटा को उनसे खासी प्रेरणा मिली थी।

19वीं शताब्दी की ही कुछ और यात्राएं भी थीं, जिन्होंने देश सांस्कृतिक फलक को विस्तृत किया। सामाजिक उन्नति, वैचारिक बदलाव की राह दिखाई। यकीनन हमारे साहित्य पर भी इन यात्राओं का कुछ कम असर नहीं पड़ा। आधुनिक भारत के पिता कहे जाने वाले वाले बंगाल के समाज सुधारक राजा राममोहन राय जब वर्ष 1830 में इंग्लैंड और फ्रांस की यात्रा से लौटे तो उन्होंने सामाजिक परिवेश में बदलाव का आंदोलन ही छेड़ दिया। आने वाले बरसों में इसका खासा असर साफ-साफ दिखा। आज हम जिस खुले माहौल में सांस ले रहे हैं, उसका बहुत श्रेय उन्हें ही देना चाहिए।

19वीं सदी के आखिर से 20वीं सदी के शुरुआती दशकों में रवींद्रनाथ टैगोर ने चीन, जापान समेत करीब 13 देशों की यात्रा की। इसके प्रभाव से उन्होंने देश में नयी तरह की शिक्षा की शुरुआत की। शांति निकेतन की स्थापना इसी ओर पहला कदम था। साहित्य के फलक भी उनकी इन यूरोप की यात्राओं ने ही खोले, जिसके असर फिर भारतीय साहित्य पर भी देखा गया। यकीनन इन यात्राओं से ज्ञान-विज्ञान की खिड़कियां और खुलीं।

राहुल सांकृत्यायन तो ज्ञान और दुर्लभ ग्रंथों की खोज में हजारों मील दूर पहाड़ों और नदियों के बीच भटके, उन ग्रंथों को खच्चरों में बांधकर देश लाए। सामाजिक क्रांति की दिशा में उनका योगदान भी कोई कम नहीं। उनके जीवन का मूलमंत्र ही घुमक्कड़ी था, वो कहते थे कि यात्राएं जीवन को गतिशीलता के साथ जोड़ती हैं। उन्होंने घुमक्कड़ी पर काफी कुछ लिखा। उनके शब्दों में घुमक्कड़ी के बढ़कर व्यक्ति और समाज के लिए कोई हितकारी नहीं हो सकता।

महात्मा गांधी पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए। फिर वकालत करने दक्षिण अफ्रीका लेकिन इन दोनों देशों की यात्राओं ने उन्हें भारतीयों के साथ होने वाले भेदभावों के प्रति खासा आहत किया। दक्षिण अफ्रीका में रेलयात्रा के दौरान ही एक घटना ने उनके पूरे जीवन को बदल डाला। यहां से उन्हें संघर्ष करने का जो माद्दा मिला तो वह दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों के अधिकारों के सबसे बड़े पैरवीकार बनकर उभरे।

जब वह भारत लौटे तो वर्ष 1919 में पहला काम ये किया कि पूरे देश की यात्रा शुरू की। सुदूर के इलाकों में गए। गांवों में गए। ऐसी जगहों तक गए, जहां तक पहले देश का कोई नेता नहीं गया था। सही मायनों में देश की बदहाली, गरीबी, छूआछूत, जातिपात और विषमताओं को उन्होंने ही इन यात्राओं

गांधी जी ने अपनी लंबी यात्राओं के जरिये जनमानस की शक्ति और कमजोरियों की भी पड़ताल की। वह यात्राओं में लोगों से मिलते थे, बातें कहते थे। उसका असर इतना जबरदस्त हुआ कि पूरा देश उठ खड़ा हुआ। आम जनता, किसान, मजदूर और युवा राष्ट्रीय आजादी आंदोलन की मुख्य शक्ति बन गए। ब्रिटिश हुकूमत बुरी तरह से भयभीत हो उठी।

से ही गांवों की असली ताकत और हालत के बारे में जाना। यात्राओं को प्रचार का माध्यम बनाकर इसका उपयोग अगर उन्होंने देश की आजादी के लिए किया तो साथ ही सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ भी जागरुकता का बिगुल बजाया। उनकी यात्राओं से पूरे देश में प्रेरणा की लहर दौड़ पड़ी। दरअसल गांधीजी ने इन लंबी यात्राओं के जरिये जनमानस की शक्ति और कमजोरियों की भी पड़ताल की। वह यात्राओं में लोगों से मिलते थे, बातें कहते थे। उसका असर इतना जबरदस्त हुआ कि पूरा देश उठ खड़ा हुआ। आम जनता, किसान, मजदूर और युवा राष्ट्रीय आजादी आंदोलन की मुख्य शक्ति बन गए। ब्रिटिश हुकूमत बुरी तरह से भयभीत हो उठी।

इन्हीं यात्राओं के दौरान उन्होंने जब चंपारण में किसानों के बुरे हाल को देखा तो आंदोलन छेड़ दिया। खेड़ा (गुजरात) में भी इसी तरह की समस्या पर मोर्चा लिया। गांधीजी की कुछ यात्राएं बहुत प्रसिद्ध हुईं। अली भाइयों के साथ 1920-21 में की गई असहयोग आंदोलन यात्रा, 1930 में अहमदाबाद से दांडी तक का 240 मील का दांडी मार्च और 1932 में वर्धा आश्रम से शुरू हुई हरिजन यात्रा को कौन भुला सकता है। वाकई इन ऐतिहासिक यात्राओं ने देश के जनजीवन, आत्मविश्वास पर गहरी छाप छोड़ी। देखते ही देखते देश की मानसिक स्थिति का कायाकल्प हो गया। गांधी की एक आवाज देश की साज बन गई। जब देश स्वाधीन हो रहा था, इस मौके पर कई जगह जगह दंगे होने लगे, तब गांधीजी यात्राओं के जरिये ही शांति अपील में जुटे थे। महात्मा गांधीजी की इन तमाम यात्राओं ने देश को भावनात्मक तौर पर जितना एक किया, वैसा शायद ही किसी ने किया हो।

हमारा देश आज दुनियाभर की बड़ी आर्थिक ताकतों में शुमार किया जाने लगा है लेकिन जिस समय आजादी मिली, उस समय देश का आधारभूत ढांचा इतना कमजोर था कि सोचा भी नहीं सकता था कि देश को किस तरह मजबूती की राह पर आगे बढ़ाया जाए। ऐसे में नेहरू जी ने जिस खास विजन से देश की उन्नति का सपना देखा, उसकी प्रेरणा उन्हें कई वर्षों पहले यूरोप और रूस की यात्रा से मिली थी। उस यात्रा में ही उन्होंने समझ लिया था कि देश की तरक्की तभी हो सकेगी, जब बड़े पैमाने पर भारी उद्योग और कारखाने फलेंगे-फूलेंगे। हालांकि ये कहना चाहिए वर्ष 1923 और 1927 में कांग्रेस का महासचिव बनाए जाने के बाद भी उन्होंने देश की व्यापक यात्रा की थी, जिसने देश के बारे में उनकी समझबूझ को और बेहतर करने का काम किया। देश की आजादी के बाद बनाई गई पंचवर्षीय योजना का खाका भी उन्हें 1926-27 में सोवियत संघ की यात्रा से मिला था। मार्क्सवाद और समाजवादी विचारधारा में नेहरू की वास्तविक रुचि भी इसी यात्रा से पैदा हुई।

आजादी के बाद जिन दो यात्राओं ने देश के सामाजिक और आर्थिक परिवेश को और बदला, उनमें से एक आचार्य विनोबा भावे की यात्रा थी। उन्होंने गांव गांव घूमकर अमीरों को जमीन दान के लिए प्रेरित किया। इसका असर इतना जबरदस्त हुआ कि बड़े पैमाने पर बड़े जमींदारों और भूमिस्वामियों ने अपनी जमीन का बड़ा हिस्सा दान में दे दिया।

आजादी के बाद जिन दो यात्राओं ने देश के सामाजिक और आर्थिक परिवेश को और बदला, उनमें से एक आचार्य विनोबा भावे की यात्रा थी। उन्होंने गांव गांव घूमकर अमीरों को जमीन दान के लिए प्रेरित किया। इसका असर इतना जबरदस्त हुआ कि बड़े पैमाने पर बड़े जमींदारों और भूमिस्वामियों ने अपनी जमीन का बड़ा हिस्सा दान में दे दिया। ये जमीनें भूमिहीन गरीबों को दी गईं, इससे गांवों में एक नये किस्म का भाईचारा भी उत्पन्न हुआ। गांवों में बेहतरी और समृद्धि के द्वार भी खुल सके। उनकी इन यात्राओं को भूदान आंदोलन का नाम दिया गया। दूसरी यादगार यात्रा के नायक जयप्रकाश नारायण थे। उन्होंने 1973-74 में तूफानी यात्राएं कीं-गुजरात से बिहार तक। युवाओं के आक्रोश को इन यात्राओं से नई आवाज ही नहीं बल्कि नई पहचान भी मिली। इन्हीं यात्राओं की बदौलत देश में युवा शक्ति को पहचाना गया। फिर देश में युवाओं की भूमिका को भी सही तरीके से परिभाषित कर तरक्की की मुख्य धारा से जोड़ा जा सका।

मौजूदा दौर में जब हमारे युवाओं के लिए बाहर के देशों में जाने के मौके ज्यादा बढ़े हैं तो बाहरी देशों की ज्यादा यात्राएं कर रहे हैं तो ज्यादा सीख भी रहे हैं। जिसका असर साफतौर पर हमारी सोच और जीवनशैली पर दिखने लगा है। हम दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चल ही नहीं रहे बल्कि दुनिया को अपनी आगे बढ़ने की ताकत से चमत्कृत भी कर रहे हैं। यात्राएं विस्तार देती हैं, सिखाती भी हैं। सुखद और सकारात्मक बात ये भी है कि इस देश की यात्रा को इन तमाम यात्राओं ने ही गढ़ा है और ये प्रक्रिया जारी है। ❑

(पृष्ठ 27 का शेषांश)

9. **ह्यूजेस सेरापिन (2013):** इंटरप्रिनरशिप इन टूरिज्म एज ए ड्राइवर फॉर रिकवरी एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट ऑफ द कंट्री साइड इन हैती, इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च इन ईवेंन्ट्स, टूरिज एंड होस्पिटेलिटी (ISRETH), लीड्स यूके
10. **जोवो एटेलजेविक (2009):** टूरिज्म इंटरप्रिनरशिप एंड रीजनल डेवलपमेंट- एक्साम्पल फ्रॉम न्यूजीलेंड, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंटरप्रिनरियल बिहेवियर एंड रिसर्च संस्करण 15, अंक 3, पृष्ठ 282-308।
11. **क्लॉस वीरमीर एटएल (2010):** इनोवेशन एंड इंटरप्रिनरशिप: स्ट्रेटजी एंड प्रोसेस फॉर सक्सेस इन टूरिज्म, एरिच स्कीमिडट वर्लग, डैनुविया न्यूबर्ग, जर्मनी
12. **मैकक्लीनेंड, डेविड (1961):** मोटिवेटिंग इकोनोमिक एचीवमेंट, फी प्रेस, न्यूयॉर्क
13. **मेयर एंड बाल्डविन (1957):** इकोनोमिक डेवलेपमेंट, जॉन विली, यूके
14. **मेलोडी बोथा एटएल (2006):** टूरिज्म इंटरप्रिनररर्स, जुटा एंड कंपनी, दक्षिण अफ्रीका
15. **नाथन के ऑस्टिन (2007):** मैनेजिंग हेरिटेज अट्रेक्शन इन डेलेन जे तिमोथी (एड), मैनेजिंग हेरिटेज एंड कल्चरल रिसोर्सेसय क्रिटिकल एसे संस्करण 1, पृष्ठ 35-45, एश्गेट पब्लिशिंग इंग्लैंड
16. **पीटर ड्रकर (2009):** इनोवेशन एंड इंटरप्रिनरशिप, एल्सेवियर, यूके
17. **प्रहलाद सी.के. (2004):** द फोर्च्यून एट द बॉटम ऑफ द पिरामिड, व्हारटन स्कूल पब्लिशिंग, न्यू जर्सी
18. **राजेंद्र पाल (2010):** टूरिज्म एंड स्पिरिट ऑफ इंटरप्रिनरशिप, मोहित प्रकाशन, नई दिल्ली
19. **रोजलिन रसेल एंड बिल फौल्क्नर (2004):** इंटरप्रिनरशिप कोएस एंड द टूरिज्म एरिया लाइफ साइकिल, एनाल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च
20. **स्टीफेन बॉल (2005):** इम्पोर्टेंस ऑफ इंटरप्रिनरशिप टू होस्पिटेलिटी, लेघर, सपोर्ट एंड टूरिज्म: लेजर, स्पोर्ट्स एंड टूरिज्म नेटवर्क, यूके
21. **स्टीफेन जे पेज एंड जोवो एटेलजेविक (2009):** टूरिज्म एंड इंटरप्रिनरशिप: इंटरनेशनल प्रेसपेक्टिव, राउटलेज, यूके
22. **टेड सिलबरबर्ग (1995):** टूरिज्म मैनेंमेंट, संस्करण 16, अंक 5, पृष्ठ 361-365.

भारत में शैक्षिक पर्यटन: अतीत, वर्तमान और भविष्य

अर्चना कुमारी
दिव्यांशु कुमार

भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, पारिस्थितिक, जैविक आदि विविधताएं इतनी प्रचुर हैं कि किसी भी अध्येता के लिए यह आदर्श अध्ययन स्थल हो सकता है। साथ ही, तेजी से सुदृढ़ होती अर्थव्यवस्था, लगातार मजबूत होती अवसंरचनाएं, विश्वभर के देशों से मधुर रिश्ते बनाने के प्रयास आदि ऐसे कारक हैं जो किसी भी देश से छात्रों को यहां आने के लिए लुभा सकते हैं।

ऐसे में नीतिगत स्तर पर कुछ ठोस कदम वास्तव में भारत में शैक्षिक पर्यटन के लिए बेहतर माहौल तैयार कर सकते हैं और इसका इतिहास तो शैक्षिक पर्यटन के सफल गंतव्य के रूप में इसे स्थापित करता ही रहा है

प्राचीन काल से ही भारत अधिकतर दक्षिण-एशियाई देशों के लिए शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। तक्षशिला विश्वविद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय ज्ञान एवं साझा शिक्षण उद्देश्यों के लिए न केवल भारतीय विद्वानों बल्कि विदेशी यात्रियों के लिए भी सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र एवं ज्ञान के भंडार थे। शैक्षणिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र होने के इतने वैभवशाली इतिहास के बावजूद, आज भारत स्वयं को शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में देखने के लिए संघर्ष कर रहा है। हालांकि, भारत में शिक्षा एवं पर्यटन की शानदार प्रगति के साथ ही यह विश्व के लिए और खास तौर पर पड़ोसी देशों के लिए एक पसंदीदा शैक्षणिक स्थान बन रहा है।

इस विषय पर और अधिक विचार करने से पूर्व, हमें यह समझना होगा कि शैक्षणिक पर्यटन क्या है! शैक्षणिक पर्यटन या शिक्षा-पर्यटन से अर्थ 'ऐसे किसी भी कार्यक्रम से है जिसमें प्रतिभागी समूह के रूप में एक स्थान की यात्रा उस ज्ञान एवं शिक्षण उद्देश्य साझा करने के लिए करते हैं, जो उस स्थान विशेष से संबंधित होता है।' (बोजर, 1998, पृष्ठ 28) शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए यात्रा करने की अवधारणा नई नहीं है और कतिपय महान विचारकों के अनुसार, पर्यटन बाज़ार में इसकी लोकप्रियता में वृद्धि होने की ही संभावना है। (गिब्सन, 1998- होडनक- हॉलैंड 1996)। भारत ने भी शिक्षा के क्षेत्र में अपनी इस महत्वपूर्ण प्रतिभागिता को स्वीकार कर लिया है और वह स्वयं को पूरे विश्व के विद्यार्थियों के लिए एक आकर्षक स्थान/गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करने के लिए अवसरों की संभावना का विस्तार कर रहा है। इस उद्देश्य के लिए भारत के पास अनुकूल कारक हैं–

- भारत विश्व में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है।
- यह एक प्रमुख पर्यटन स्थान के रूप में उभर रहा है
- यहां पर कई विकसित देशों की तुलना में निवास करना सस्ता है
- भारत में हर प्रकार के संसाधन व सुविधाओं से परिपूर्ण कई अच्छे अकादमिक संस्थान हैं,
- यह विकसित देशों को दक्ष मानव श्रम का मुख्य आपूर्तिकर्ता है

भारत में शैक्षणिक पर्यटन के लिए सभी अनुकूल कारकों के विषय में विस्तृत चर्चा करने से पूर्व, हम देखते हैं कि वे कौन से कारक थे जिनके कारण भारत प्राचीन काल में शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था।

समृद्ध इतिहास

प्रतिष्ठित तक्षशिला विश्वविद्यालय एवं नालंदा विश्वविद्यालय के अतिरिक्त प्राचीन भारत में कई अन्य विश्वविद्यालय भी ज्ञानार्जन के केंद्र थे। इनमें से कुछ थे: बिहार में ओदांतपुरी (लगभग 550-1040), बांग्लादेश में सोमपुरा (गुप्तकाल से लेकर मुगलों की विजय तक), बंगाल में जगादाला (पाल काल से लेकर मुगलों की विजय तक), आंध्र प्रदेश में नागार्जुन कोंडा, बिहार में विक्रमशिला (लगभग 800-1040) आधुनिक कश्मीर में

अर्चना कुमारी जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू में जनसंचार तथा न्यू मीडिया विषय की सहायक प्रोफेसर हैं। वैकल्पिक मीडिया तथा शिक्षा उनकी शोध रुचि के विषय हैं। ईमेल: archanaiimc@gmail.com
दिव्यांशु कुमार नई दिल्ली स्थित भारतीय जनसंचार संस्थान में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। उनका पत्रकारिता में लगभग एक दशक का अनुभव रहा है। ईमेल: kumardivyanshu@gmail.com

शारदा पीठ, गुजरात में वालाबी (मैत्रिक अवधि से अरबों के आक्रमण तक), उत्तर प्रदेश में वाराणसी (आठवीं शताब्दी से आधुनिक काल तक), तमिलनाडु में कांचीपुरम, कर्नाटक में मंयकाखेता, ओडिशा में पुष्पगिरी और रत्नागिरी। श्रीलंका में सुनेत्रदेवी पिरीवेना बौद्ध शिक्षा केंद्र की स्थापना लगभग 1415 ईस्वी में की गई।[1]

इनमें से लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय थे: तक्षशिला विश्वविद्यालय (पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व से पांचवीं शताब्दी ईस्वी तक), एवं नालंदा विश्वविद्यालय (427 से 1197 तक)। तक्षशिला विश्वविद्यालय भारत की तीन महान विभूतियों के लिए विख्यात है, चाणक्य, चंद्रगुप्त एवं चरक। अर्थशास्त्र एवं राजनीति पर लिखी गई महान पुस्तक को चाणक्य द्वारा रचित माना जाता है। भारत के महान शासक चंद्रगुप्त मौर्य ने भी वहीं अध्ययन किया था व विख्यात चरक संहिता

एक ही स्थान पर इतने विविध विषयों को समाहित करने की इस विश्वविद्यालय की अनूठी विशेषता ही वह आकर्षण था, जो पूरे विश्व से ज्ञानार्जन के इच्छुक विद्यार्थियों को अपनी ओर आकर्षित करता था। उस काल में, भारत सभी पड़ोसी बौद्ध देशों के नागरिकों के लिए तीर्थयात्रा एवं शिक्षाटन हेतु पर्यटन का केंद्र बन गया था।

के रचयिता महान आयुर्वेद वैद्य चरक ने भी वहीं से ज्ञानार्जन किया था। सामान्य रूप से तक्षशिला में अठारह वर्ष की आयु में किसी भी विद्यार्थी को प्रवेश दिया जाता था। वेद व अट्ठारह ललित कलाओं का अध्ययन, जिनमें धनुर्विद्या, आखेट एवं हाथी की सवारी जैसे कौशल सम्मिलित थे, का अध्ययन विधि संभाग, चिकित्सा संभाग एवं सैन्य विज्ञान संभाग के साथ कराया जाता था। तक्षशिला न केवल वैदिक ज्ञान का मुख्य केंद्र था अपितु वह बौद्ध धर्म के लिए भी एक प्रतिष्ठित केंद्र था क्योंकि माना जाता है कि बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय ने अपना आकार यहीं से प्राप्त किया था।[2]

एक ही स्थान पर इतने विविध विषयों को समाहित करने की इस विश्वविद्यालय की अनूठी विशेषता ही वह आकर्षण था, जो पूरे विश्व से ज्ञानार्जन के इच्छुक विद्यार्थियों को अपनी ओर आकर्षित करता था। उस काल में, भारत सभी पड़ोसी बौद्ध देशों के नागरिकों के लिए तीर्थयात्रा एवं शिक्षाटन हेतु पर्यटन का केंद्र बन गया था। धार्मिक अध्ययन के अतिरिक्त अन्य लोकप्रिय कौशल का अध्ययन भी इस विश्वविद्यालय में कराया जाता था, जिसने इस संस्थान की प्रतिष्ठा में और वृद्धि की।

इन्हीं परिस्थितियों में नालंदा विश्विद्यालय का भी विकास हुआ। मगध एक समृद्ध एवं बौद्धिक साम्राज्य था जिसे बौद्धिकता को संरक्षण देने वाले मुख्य संरक्षक केंद्र के रूप में जाना जाता है। इस विश्वविद्यालय में भी बौद्ध एवं अन्य ज्ञान का भंडार था, जो पवित्र ज्ञान के लिए एक प्रेरणा प्रदान करता था। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, यह एक आवासीय विश्वविद्यालय था जिसमें लगभग 2,000 शिक्षक एवं 10,000 विद्यार्थी रहते थे।[3]

इस विश्वविद्यालय की ज्ञानार्जन पद्धति एवं इसके शिक्षकों का ज्ञान चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, मंगोलिया, तुर्की, श्रीलंका एवं दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ और देशों से विद्यार्थियों को आकर्षित करता था। इन विद्वानों ने वहां के परिवेश, विशिष्ट वास्तु एवं विश्वविद्यालय के अंदर की विशिष्ट जीवनशैली के बारे में वर्णन किया है। विशेष रूप से चीनी विद्वान ह्वेनस्वांग ने विश्वविद्यालय के बारे में बहुत ही विस्तार से वर्णन किया है।[4]

संवाद व परिवहन की जटिलता के युग में भी शैक्षणिक पर्यटकों को आकर्षित करने वाले भारत में स्थित विश्वविख्यात विश्विद्यालयों के विषय में उपरोक्त तथ्यों का विश्लेषण करने पर, आकर्षण के निम्न कारण उभर कर आते हैं–

- बहु-धर्मी एवं बहु-सांस्कृतिक समाज होने के नाते भारत सदैव ही धार्मिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन का केंद्र रहा था,
- धार्मिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन के अतिरिक्त, कई विदेशी विद्यार्थी अन्य महत्वपूर्ण कौशलों को भी सीखने के इच्छुक थे।
- इन विश्वविद्यालयों में पारंगत शिक्षकों द्वारा हासिल योग्यता एवं ज्ञान देश के कई हिस्सों एवं देश के बाहर के कई हिस्सों से विद्वानों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले मुख्य तत्वों में से एक था।
- न केवल अध्ययन, बल्कि परिवेश, विशिष्ट शिक्षण-अध्यापन पद्धति, प्रकृति के संग सह-अस्तित्व भी भारतीय व विदेशी शैक्षिक पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता था।
- चूंकि ये विश्वविद्यालय भारत में कई शासकों के अधीन काफी लंबे समय तक रहे, तो इनकी प्रतिष्ठा में कई गुना वृद्धि हुई।

वर्तमान परिदृश्य

भारत में पर्यटन एक बड़े उद्योग के रूप में उभरा है। भारतीय पर्यटन मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2012-13 में देश की जीडीपी में इसका योगदान 6.88 प्रतिशत रहा था जबकि देश इमं रोजगार प्रदान करने में वर्ष 2012-13 में उसका योगदान 12.36 प्रतिशत रहा था।[5]

पर्यटन क्षेत्र की जीडीपी का विस्तार 1990

पर्यटन क्षेत्र की जीडीपी का विस्तार 1990 और 2011 के बीच में 229 प्रतिशत हुआ है और इस क्षेत्र में इस दशक में 77 प्रतिशत की वार्षिक दर से वृद्धि का अनुमान है। 6,2011 के एक पूर्वानुमान में वर्ल्ड ट्रेवल एंड टूरिज्म कौंसिल ने 2011 से 2021 के बीच में 8.8 प्रतिशत की वार्षिक प्रगति का अनुमान लगाया है।

और 2011 के बीच में 229 प्रतिशत हुआ है और इस क्षेत्र में इस दशक में 77 प्रतिशत की वार्षिक दर से वृद्धि का अनुमान है। ख6, 2011 के एक पूर्वानुमान में वर्ल्ड ट्रेवल एंड टूरिज्म कौंसिल ने 2011 से 2021 के बीच में 8.8 प्रतिशत की वार्षिक प्रगति का अनुमान लगाया है।[7] इसने भारत को सबसे तेजी से बढ़ने वाले पर्यटन उद्योग के साथ देशों में पांचवां स्थान प्रदान किया है।

हालांकि प्रश्न अभी भी वही है, भारत में सबसे तेजी से बढ़ते पर्यटन क्षेत्र में शैक्षणिक पर्यटन का क्या स्थान होगा! इससे पहले हम इस सवाल पर और चर्चा करें, हम ओर्गेनाइजेशन फॉर इकोनोमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट (OECD), एजुकेशन 2014 की रिपोर्ट के कुछ तथ्यों पर एक नजर डालते हैं–

- पूरे विश्व में नामांकित होने वाले विद्यार्थियों में 53 प्रतिशत विद्यार्थी एशिया से होते

हैं। इस महाद्वीप से सबसे अधिक विदेशी विद्यार्थी चीन, भारत और कोरिया से आते हैं।

- अपने देश से बाहर के विद्यार्थियों के पंजीकरण के मामले में यूरोप प्रथम स्थान पर है, जहां ऐसे 48 प्रतिशत विद्यार्थी हैं, उसके बाद उत्तरी अमरीका है, जहां पर सभी अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों में से 21 प्रतिशत पंजीकृत विद्यार्थी हैं एवं उसके बाद 18 प्रतिशत के साथ एशिया है।
- पिछले तीन दशकों से देश के बाहर पंजीकरण कराने वाले विद्यार्थियों की संख्या में बहुत ही तेजी से वृद्धि हुई है, 1975 से पूरे विश्व में 8 लाख से बढ़कर 2012 में यह 45 लाख हो गई है, करीब पांच गुना वृद्धि हुई है।

उपरोक्त वर्णित तथ्यों से, यह तो स्पष्ट है कि एक क्षेत्र के रूप में एशिया और एक देश के रूप में भारत, एक गंतव्य के तौर पर शिक्षा-पर्यटन का उद्गम रहा है। विद्यार्थियों

जब यूरोपीय अर्थव्यवस्था अपना आकार ले रही थी, जिससे उस क्षेत्र विशेष की शिक्षा पूरे विश्व तक पहुंच रही थी और इसने परिवहन लागतों में भी कमी की। श्रम बाज़ार के अंतर्राष्ट्रीयकरण ने भी उच्च कौशल वाले लोगों को अपनी उच्च शिक्षा के एक भाग के रूप में अंतर्राष्ट्रीय अनुभव हासिल करने के लिए आकर्षण प्रदान किया।

के मध्य शिक्षा के लिए प्रमुख गंतव्य के रूप में यूरोप के लिए कारणों का विश्लेषण करते हुए, यह पाया है 'यह विस्तार देशों के बीच में सांस्कृतिक, अकादमिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संबंधों को प्रोत्साहित करने के लिए होता दिख रहा है, विशेष रूप से तब जब यूरोपीय अर्थव्यवस्था अपना आकार ले रही थी, जिससे उस क्षेत्र विशेष की शिक्षा पूरे विश्व तक पहुंच रही थी और इसने परिवहन लागतों में भी कमी की। श्रम बाज़ार के अंतर्राष्ट्रीयकरण ने भी उच्च कौशल वाले लोगों को अपनी उच्च शिक्षा के एक भाग के रूप में अंतर्राष्ट्रीय अनुभव हासिल करने के लिए आकर्षण प्रदान किया।'[8]

वैश्विक विद्यार्थियों के इस कदम के संबंध में एक और अवलोकन है 'यह अंतर क्षेत्रीय व परा क्षेत्रीय पलायन रुझानों को भी बताता है। OECD देशों में क्षेत्रीय पंजीकरण के अंतर्राष्ट्रीयकरण में प्रगति, और परा-क्षेत्रीय विद्यार्थी गतिशीलता उच्च अनुपात ने वैश्विक गतिशीलता पर क्षेत्रीय गतिशीलता की बढ़ती महत्ता को प्रदर्शित करती है।' यूरोपीय देशों और पूर्वी एशिया व ओशेनिया में विद्यार्थी प्रवाह भौगोलिक क्षेत्रों के विकास को भी प्रदर्शित करता है जैसे एशिया-प्रशांत देशों के बीच में नजदीकी संबंध और यूरोपीय संघ से परे अन्य यूरोपीय देशों के मध्य और सहयोग। (यूनेस्को, 2009)।

अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों में दूसरे स्थान पर पंजीकृत होने वाले विद्यार्थी भारत से हैं (5.8 प्रतिशत)। लगभग 45 प्रतिशत भारतीय विद्यार्थी संयुक्त राज्य अमरीका में पंजीकृत हैं, 17 प्रतिशत युनाईटेड किंगडम में, 6 प्रतिशत कनाडा में और 5 प्रतिशत ऑस्ट्रेलिया में पंजीकृत हैं।[9]

विश्व में शैक्षिक-पर्यटन के वर्तमान परिदृश्य के बारे में उपरोक्त तथ्यों का विश्लेषण करने के उपरांत, निम्न बिंदु उभर कर आते हैं–

- वर्तमान शैक्षिक-पर्यटन परिदृश्य में, 5.8 प्रतिशत भारतीय अपने देश में अध्ययन के स्थान पर दूसरे देशों में अध्ययन हेतु जाते हैं और इस प्रकार घरेलू पर्यटन को प्रभावित करते हैं।
- विद्यार्थियों के मध्य वैश्विक गतिशीलता से अधिक क्षेत्रीय गतिशीलता को प्राथमिकता दी जाती है।
- किसी भी देश में शैक्षिक-पर्यटन में वृद्धि के लिए सरल वीजा नीति एवं देशों के बीच अकादमिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संबंधों को बेहतर करना एवं परिवहन लागतों को कम करना सबसे अनुकूल कारक हैं।

यह भारत से बाहर जाने वाले शैक्षिक-पर्यटन की वृहद छवि प्रस्तुत करता है: हालांकि घरेलू शैक्षिक-पर्यटन भारत में प्रचलन में है। पर्यटन मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट 2015 के अनुसार, भारत में घरेलू पर्यटकों की संख्या वर्ष 2013 में 11450 लाख (अनुमानत:) थी, जो 2012 पर 9.59 प्रतिशत की प्रगति प्रदर्शित करती है। ग्रामीण क्षेत्रों एवं छोटे शहरों के नागरिक अपने बच्चों को बेहतर शैक्षणिक सुविधाओं के लिए बड़े शहरों में भेजते हैं। यह भी नागरिकों की आर्थिक क्षमताओं पर निर्भर करता है। हालांकि जब हम भारत में शैक्षिक पर्यटन की बात करते हैं तो, इसे शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित करने के रूप में देखा जाता है। इस पर्यटन को भारत के पर्यटन मंत्रालय ने 2015 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट में पर्यटन के एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में नहीं बताया गया है, जो यह इंगित करता है कि भारतीय सरकार ने पर्यटन के इस क्षेत्र की असीम संभावनाओं का मूल्यांकन नहीं किया है।

आश्वस्त भविष्य

हालांकि वर्तमान में भारत में शैक्षणिक पर्यटन परिदृश्य धुंधला दिखाई देता हो, पर उसमें चमकने की संभावनाएं हैं। कई ऐसे कारक हैं, जिन्हें शैक्षणिक पर्यटन का समर्थन करने के लिए वैश्विक रिपोर्ट द्वारा प्रदर्शित किया गया है। ये कारक भारत में भी मौजूद हैं और जो एक उभरते हुए शिक्षा-पर्यटन को

अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों में दूसरे स्थान पर पंजीकृत होने वाले विद्यार्थी भारत से हैं (5.8 प्रतिशत)। लगभग 45 प्रतिशत भारतीय विद्यार्थी संयुक्त राज्य अमरीका में पंजीकृत हैं, 17 प्रतिशत युनाईटेड किंगडम में, 6 प्रतिशत कनाडा में और 5 प्रतिशत ऑस्ट्रेलिया में पंजीकृत हैं।

आशा की किरण प्रदान करते हैं। यहां तक कि पर्यटन मंत्रालय की 2015 की वार्षिक रिपोर्ट भी कहती है 'अन्य सभ्यताओं के साथ भारत का संपर्क इसके नागरिकों की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता में उनकी भाषा, भोजन, परंपराओं, कला व हस्तशिल्प के माध्यम से प्रदर्शित होता है। हाल के कुछ वर्षों में विदेशी पर्यटक आगमन (FTAs) में आशातीत वृद्धि के बावजूद यह महसूस किया गया है कि भारत में पर्यटन की अनछुई संभावनाएं भी हैं।'

शैक्षणिक पर्यटन के लिए संसाधन आधार

भारत के पास प्रचुर मात्रा में पर्यटन संसाधन हैं, जिन्हें शैक्षणिक पर्यटन के लिए एक समर्थन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है: इनमें से कुछ हैं। सांस्कृतिक या ऐतिहासिक पर्यटन, जैविक या प्रकृति आधार पर पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन आदि। इसके

साथ ही कई विद्यार्थी विनिमय व शिक्षक विनिमय कार्यक्रम भी विश्वविद्यालयों के मध्य संचालित किए जा रहे हैं, जो विदेशी विद्यार्थियों और शिक्षकों को भारत में कुछ समय बिताना सुगम करते हैं। कुछ विषयों के उदाहरण निम्न हैं जिन्हें शैक्षिक पर्यटन के लिए प्रयोग किया जा सकता है। सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक विषयों में सम्मिलित हैं: कला एवं हस्तशिल्प, वास्तु, भाषा, प्रागैतिहासिक स्थल, संगीत, नृत्य आदि। जैव पर्यटन में सम्मिलित हैं: 65,000 से अधिक जीव-जंतुओं की प्रजातियों का अध्ययन, जैसे 350 स्तनपायी, 408 सरीसृप, 197 उभयचर, 1244 पक्षी, 2546 मछली एवं वनस्पतियों की 15,000 प्रजातियां।[10] भारत में लगभग 80 राष्ट्रीय उद्यान एवं 441 वन अभयारण्य हैं, जिनमें से कुछ तो एशिया के सबसे बड़े वन्यजीवन अभयारण्य है। भारत में मंदिरों का अध्ययन करने और उसके पीछे परंपराओं व विश्वास को सम्मिलित करके धार्मिक विषय भी हो सकते हैं।

भारत में शिक्षा पर्यटन के लिए बाज़ार

हालांकि वर्तमान में भारत में शिक्षा-पर्यटन के लिए कोई भी बड़ा बाज़ार नहीं है, पर इसके कुछ कारक यह इंगित करते हैं कि यह बाज़ार बनने की प्रक्रिया में है। चलिए हम, पर्यटन मंत्रालय की 2015 की वार्षिक रिपोर्ट एवं OECD शिक्षा की रिपोर्ट में वर्णित निम्न तथ्यों पर नजर डालते हैं:

- वर्ष 2014 में भारत में एफटीए में 10.6 प्रतिशत की प्रगति देखी गई है, जो वैश्विक रूप से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन आगमन में देखी गई 4.7 प्रतिशत की मध्यम स्तर की प्रगति से अधिक है।
- बोलचाल व निर्देशों की भाषा भी कभी-कभी उस देश के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसका चयन विद्यार्थी अध्ययन हेतु करता है। जिस देश की भाषा अधिकतर बोली और पढ़ी जाती है जैसे अंग्रेजी, तो वह विदेशी विद्यार्थियों के लिए पूर्ण व प्रासंगिक शर्तों में अग्रणी गंतव्य होते हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी अपने अध्ययन स्थान को प्रदान की जा रही शिक्षा की गुणवत्ता के आधार पर भी उसे चुनते हैं, जो सूचना व श्रेणी के आधार पर अनुमानित की जाती है, जो उच्च शिक्षा कार्यक्रमों के बारे में ऑनलाइन एवं प्रिंट में उपलब्ध होती हैं।
- ट्यूशन की लागत भी किसी भी शैक्षणिक गंतव्य का चयन करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं, हालांकि ट्यूशन लागतें किसी भी संभावित अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी को तब तक हतोत्साहित नहीं करती जब तक, शिक्षा की गुणवत्ता उच्च है और इसमें किए गए निवेश से बेहतर लाभ की उम्मीद है।
- हाल के वर्षों में कई देशों ने अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के स्थायी या अस्थायी प्रवास को प्रोत्साहित करने के लिए अपनी प्रवासीय नीतियों को सरल किया है, (OECD, 2008)। इसने इन देशों को विद्यार्थियों को आकर्षित किया है और अपने श्रम बल को मजबूत किया है। परिणाम स्वरूप प्रवासी छूट व ट्यूशन शुल्क भी कई विद्यार्थियों के इस निर्णय को प्रभावित कर सकता है कि विदेश में कहां अध्ययन करें (ओईसीडी, 2011)।
- विद्यार्थी बाहर अध्ययन करने के विषय में कई और कारकों के आधार पर भी निर्णय लेते हैं जैसे– संस्थान व कार्यक्रम विशेष की अकादमिक ख्याति, डिग्री आवश्यकताओं के प्रति बिताए गए समय में कार्यक्रम का लचीलापन उसके गृह देश में उस स्थान विशेष की शिक्षा की सीमाएं, गृह देश में प्रतिबंधात्मक विश्वविद्यालय प्रवेश नीतियां, देशों के बीच में व्यापारिक या ऐतिहासिक संबंध, भविष्य में नौकरी के अवसर, सांस्कृतिक अपेक्षाएं तथा घरेलू संस्थानों के बीच साख हस्तांतरण को सुगम बनाने के लिए सरकार की नीतियां।

भारत के पास प्रचुर मात्रा में पर्यटन संसाधन हैं, जिन्हें शैक्षणिक पर्यटन के लिए एक समर्थन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इनमें से कुछ हैं: सांस्कृतिक या ऐतिहासिक पर्यटन, जैविक या प्रकृति आधार पर पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन आदि। कई विद्यार्थी विनिमय व शिक्षक विनिमय कार्यक्रम भी विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित हो रहे हैं, जो विदेशी विद्यार्थियों और शिक्षकों को भारत में कुछ समय बिताना सुगम करते हैं।

उपरोक्त वर्णित कारकों का अध्ययन करने के बाद, हम पाते हैं कि भारत में अंग्रेजी निर्देशों का माध्यम है व यह कई शहरों में बड़े वर्ग के द्वारा बोली जाती है, भारत में गुणवत्तापरक शिक्षा की कोई कमी नहीं है और यहां पर टयूशन फीस भी बहुत कम है जो भारत से शिक्षित डॉक्टर व इंजीनियर की संख्याओं से परिलक्षित भी होती है, जो विदेशों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। साथ ही भारत में प्रवासी नीति भी बहुत कड़ी नहीं है जो भारत में संभावित अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों को रोके। पर यहां पर प्रदान की गई डिग्री अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुकूल नहीं है और न ही यहां पर घरेलू संस्थानों के बीच साख हस्तांतरण को लेकर उचित पद्धति है। अगर हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में इस कमियों को निकाल सकें और विदेशी विद्यार्थियों को आकर्षित करने के लिए प्रत्येक सुविधाएं प्रदान कर सकें तो यह निश्चित है कि भारत भारतीय व विदेशी शिक्षा पर्यटन के एक सबसे महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरेगा। ❑

संदर्भ

1. http://www.aicte-india.org/downloads/ancient.pdf retrieved on April 9, 2015.
2. वही
3. [3] http://www.nalandauniv.edu.in/abt-history.html retrieved on April 9, 2015.
4. वही
5. **अरुणमोझी, टी एंड पन्नीरसेल्वम, ए (2013):** टाइप्स ऑफ टूरिज्म इन इंडिया, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट रिसर्च एंड एकेडमिक रिव्यू, वर्ष: 1, अंक: 1
6. वही
7. वही
8. [8] http://www.oecd.org/edu/Education-at-a-Glance-2014.pdf retrieved on April 11, 2015.
9. वही
10. [10] http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/6703/6/06_chapter%201.pdf retrieved on April 12, 2015.

- भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय, वाषिक रिपोर्ट 2014-2015।
- **बोजर डी, (1998):** लीजर, लर्निंग एंड ट्रेवल, जर्नल ऑफ फिजिवल एजुकेशन, रिक्रिएशन एंड डांस, 69(4), 28-31
- **गिब्सन एच. (1998):** द एजुकेशनल टूरिस्ट, जर्नल ऑफ फिजिवल एजुकेशन, रिक्रिएशन एंड डांस, 69(4), 32-34
- **होल्डनक ए एंड हॉलैंड एस. (1996):** एड्टूरिज्म- बैकेशनिंग तो लर्न: पार्क्स एंड रिक्रिएशन 72-75
- **यूनेस्को, ग्लोबल एजुकेशन डाइजेस्ट 2009:** कंपेयरिंग एजुकेशन स्टेटिस्टिक एक्रोस द वर्ल्ड, यूनेस्को इंस्टीटयूट फॉर स्टेटिस्टिक, मॉंट्रियल

स्वास्थ पर्यटन-नया आयाम

शालिनी अवस्थी

भारतीय पर्यटन मंत्रालय के अलावा स्वास्थ मंत्रालय भी स्वास्थ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई कार्य कर रही है। जिसमें इंडियन हेल्थ केयर फेडरेशन, अशासकीय संस्थाओं जो कि भारतीय इंडस्ट्री से संबद्व है द्वारा मुख्य भारतीय अस्पतालों को स्वास्थ पर्यटन के लिए मार्गदर्शन देने के साथ ही विस्तृत रूप से इसका प्रचार प्रसार कर रही है। इसके साथ ही साथ भारत, स्वास्थ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विश्व के बेहतरीन मंच जिसमें वर्ल्ड ट्रैवल मार्ट लंदन व आईटीपी बर्लिन शामिल है में भी हिस्सा ले रहा है और मेडिकल वीजा जैसे विशिष्ट वीजा देकर भी पर्यटकों को आकर्षित किया जा रहा है।

पर्यटन से मतलब हम सैर सपाटा से लगाते है, लेकिन अब पर्यटन के क्षेत्र में मेडिकल टूरिज्म अर्थात स्वास्थ पर्यटन ने क्रांति ला दी है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है, जैसी कहावत वाले हमारे इस देश ने इस कहावत को अपने उत्तम डॉक्टरों, उच्च मेडिकल सुविधाओं के जरिए पूरे विश्व में चरितार्थ कर दिया है। स्वास्थ पर्यटन के क्षेत्र में भारत विदेशी निवेश के प्रमुख बाज़ार के रूप में उभरा है। प्रमुख व्यापारिक संगठन एसौचैम के अनुसार 2012 में डेढ लाख पर्यटक भारत स्वास्थ लाभ लेने हेतु आए थे। इस संख्या का 2015 में 32 लाख तक पहुंचने के कयास लगाए जा रहे है। वर्ष 2012 में स्वास्थ के क्षेत्र में 1.2 अरब अमरीकी डॉलर का निवेश हुआ है और उम्मीद की जा रही है 2015 में यह कारोबार 100 अरब डॉलर का हो जाएगा। 2020 के आते-आते स्वास्थ पर्यटन देश को लगभग 280 अरब डॉलर तक का फायदा पहुंचा सकता है। भारतीय पर्यटन मंत्रालय के अनुसार 55 देशों के नागरिक भारत में स्वास्थ लाभ हेतु आते है।

आधुनिक व परंपरागत दोनों तकनीक है लुभावने

भारत देश के आयुर्वेद व योग ने जहां पूरे विश्व के लोगों को स्वास्थ लाभ के लिए अपनी आकर्षित किया है वहीं एलोपैथी में बेहद कम लागत में ईलाज, आधुनिक चिकित्सा तकनीक व उपकरणों की आसानी से उपलब्धता के कारण विदेशी पर्यटक भारत में ईलाज के लिए खिंचे चले आते है। भारत में आयुर्वेद, योग, मेडिटेशन, यूनानी, एरोमापैथी, होम्योपैथी, नेचुरोपैथी, एक्यूपंचर, प्रेरक हिलिंग, चक्र थैरपी, बॉडी मसाज, मड थैरपी और विभिन्न ऑयल के मसाज से रोगों का ईलाज किया जाना, विदेशी पर्यटकों को एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति भी प्रदान करता है, जो कि भारत में मेडिकल टूरिज्म के बढ़ने के कई कारणों में से एक है। यदि ऐलोपैथी के संबंध में बात की जाए तो विदेशी मरीज यहां मुख्य तौर पर बाईपास सर्जरी, अंग प्रत्यारोपण, बोन मैरो ट्रांस्प्लांट व हिप रिप्लेसमेंट के लिए मुख्य तौर पर आते है।

क्या कहते हैं आंकड़े

भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। इन पर्यटकों में भारत ईलाज के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या पिछले चार वर्षों में काफी ईजाफा हुआ है। भारतीय पत्र एवं सूचना ब्यूरो के आंकड़ों पर गौर किया जाए तो 2009 मे 516769 पर्यटकों में 113689 पर्यटक स्वास्थ लाभ लेने आए थे। यह आंकड़ा 2010 में बढ़कर 155944 हो गया और वर्ष दर वर्ष बढ़ता जा रहा है।

यहां से आते है पर्यटक

भारतीय पर्यटन सांख्यिकी 2010 के अनुसार भारत में आने वाले स्वास्थ पर्यटकों को 5 अलग-अलग क्षेत्रों में बांटा गया है जिसमें पश्चिमी क्षेत्र, में यूएस और यूरोप को रखा गया है। मध्य पूर्वी क्षेत्रों में यूएई, ओमान, ईराक, ऑफ्रीकन क्षेत्रों में नाईजीरिया, तंजानिया, केन्या, मॉरिशस को रखा गया है। दक्षिण एशियाई देशों में बंगलादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल को शामिल किया गया है।

लेखक उत्तरी दिल्ली नगर निगम, दिल्ली में सहायक निदेशक, प्रेस एवं सूचना के पद पर कार्यरत है। ईमेल: shalooawasthi@gmail.com

भारत के लिए स्वास्थ पर्यटन में मुख्य बाज़ार अफ्रीका 51 प्रतिशत, मध्य पूर्व 35 प्रतिशत और दक्षिण एशिया 10 प्रतिशत है।

इन रोगों का होता है खास उपचार

भारतीय पर्यटन सांख्यिकी 2010 के अनुसार हृदय रोगों के उपचार के लिए सबसे अधिक 30 प्रतिशत विदेशी पर्यटक भारत की ओर रूख करते है जबकि हड्डियों से संबंधित रोगों का उपचार कराने के लिए 15 प्रतिशत, नैफरालॉजी से संबंधित 12 प्रतिशत, न्यूरो सर्जरी से संबंधित 11 प्रतिशत और कैंसर के उपचार के लिए 11 प्रतिशत विदेशी नागरिक भारत आ रहे है। इसके अलावा 22 प्रतिशत पर्यटक अन्य उपचार के लिए भारतीय चिकित्सा पर विश्वास करते है।

किफायती दर खींचती है अपनी ओर

अमरीका, कनाडा और ब्रिटेन में चिकित्सा का खर्च बहुत अधिक होना वहां के मरीजों को भारत की ओर खींचता है जबकि भारत में इन देशों के स्तर की ही मेडिकल सुविधाएं है, और उन देशों की तुलना में होने वाला खर्च भारत में केवल 15 प्रतिशत है।

भारत के किफायती दरों में स्वास्थ सुविधा मुहैया कराने का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक ओपन हार्ट सर्जरी में अमरीका में लगभग 18 हजार डॉलर खर्च करना होता है और साथ ही मरीजों को 9 से 11 महीने की लंबी अवधि तक इंतजार भी करना पड़ता है। भारत आते ही सभी स्वास्थ पर्यटकों का ईलाज कमोबेश जल्दी हो जाता है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, म्यानामार के अलावा यूरोप के कई देश के मरीज यहां आगमन के साथ वीजा होने के कारण भारत आना पसंद करते है।

पुरानी अवधारणा है स्वास्थ पर्यटन

यदि इतिहास के पन्नों को पलटा जाए तो मेडिकल टूरिज्म अर्थात स्वास्थ पर्यटन आपको नई अवधारणा नहीं लगेगी। 18वीं सदी में यूनानी तीर्थयात्री भूमध्य सागरीय इलाके से सेनोरिक खाड़ी के छोटे से क्षेत्र से एपीडाउरिया जाते थे क्योंकि इसे सेहत के ग्रीक देवता एस्क्लेपॉइस का नगर माना जाता था। यहां यूनान और मिस्र के लोग स्वास्थ सुधार के लिए वहां मौजूद गरम पानी के झरनों की सैर को जाया करते थे। इसी परंपरा ने आगे चलकर स्वास्थ पर्यटन का रूप लिया है।

चेन्नई है भारत की स्वास्थ राजधानी

भारत की स्वास्थ राजधानी अगर चेन्नई को बोला जाए तो अतिशयोक्ति नही होगी। चेन्नई में भारतीय अस्पताल 150 से भी अधिक विदेश पर्यटकों का ईलाज रोज करते है। देश में आने वाले विदेशी पर्यटकों में से 45 प्रतिशत पर्यटक जो भारत ईलाज के उद्देश्य से आते है चेन्नई जाना ही पसंद करते है। चेन्नई में 12,500 बिस्तर के अस्पताल है जिसमें से केवल आधे बिस्तरों पर ही भारतीयों का ईलाज होता है जबकि आधे बिस्तरों पर स्वास्थ लाभ विदेशी पर्यटक लेते है। इसके साथ ही वैकल्पिक चिकित्सा के लिए पर्यटक केरल, उत्तराखंड जैसे कई राज्यों में जाते है।

भारत सरकार के कदम

भारतीय पर्यटन मंत्रालय के अलावा स्वास्थ मंत्रालय भी स्वास्थ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई कार्य कर रही है। जिसमें इंडियन हेल्थ केयर फेडरेशन, अशासकीय संस्थाओं जो कि भारतीय इंडस्ट्री से संबद्व है द्वारा मुख्य भारतीय अस्पतालों को स्वास्थ पर्यटन के लिए मार्गदर्शन देने के साथ ही विस्तृत रूप से इसका प्रचार प्रसार कर रही है। जिसे www.incredibleindia.org पर देखा जा सकता है। इसके साथ ही साथ भारत, स्वास्थ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विश्व के बेहतरीन मंच जिसमें वर्ल्ड ट्रैवल मार्ट लंदन व आईटीपी बर्लिन शामिल है में भी हिस्सा ले रहा है। इसके साथ ही मेडकल वीजा जैसे विशिष्ट वीजा देकर भी पर्यटकों को आकर्षित किया जा रहा है। इसके साथ ही आयुर्वेद और पंचकर्म को प्रचारित करने के लिए सभी राज्यों को भारत सरकार की ओर से मान्यता दी गई है। जिसकी जानकारी पर्यटन मंत्रालय की वेबसाइट से या अतुल्य भारत की वेबसाइट से प्राप्त किया जा सकता है। स्वास्थ पर्यटन के विकास के लिए अतुल्य भारत परियोजना में भी दो वर्षों से अधिक समय तक इसका प्रचार प्रसार व्यापक रूप से किया जा रहा है।

चुनौतियां भी कम नहीं

भारत में बढ़ते स्वास्थ पर्यटन के साथ ही इसमें आने वाली चुनौतियों की भी कमी नहीं है। हर वर्ष हजारों मरीज अंग प्रत्यारोपण न होने के कारण काल की ग्रास में समा जाते है। 2.1 लाख भारतीय प्रतिवर्ष किडनी प्रत्यारोपण की आस लगाए रहते है लेकिन केवल 3000 से 4000 लोगों का ही प्रत्यारोपण संभव हो पाता है। इस लिहाज से स्वास्थ पर्यटन के लिए आए पर्यटकों को भी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार भारत में करीब 2000 लोग पैसों के लिए अपनी किडनी बेच देते है, इन खरीदारों में विदेश पर्यटक जो स्वास्थ लाभ के लिए भारत आ रहे है वह भी भ्रमित हो सकते हैं।

आयुर्वेद और स्वास्थ्य पर्यटन

आयुर्वेद विश्व की सबसे प्राचीन विधाओं में से एक है। जिसकी व्याख्या भारतीय चारों वेदों में से एक ऋग्वेद में की गई है। आयुर्वेद से स्वास्थ्य लाभ लेने के लिए भारत में आने वाले पर्यटकों को स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ भारत की हजारों साल पुरानी सभ्यता को भी देखने का सुख मिलता है। भारत में स्वास्थ्य लाभ का सिद्धांत हजारों वर्ष पूर्वी महर्षियों ने दिया था। प्रधानमंत्री ने भी संयुक्त राष्ट्र में अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने की बात की है। यह अपने आप में बड़ा प्रमाण है कि हमारे देश की योग चिकित्सा और आयुर्वेद चिकित्सा को पूरे विश्व में मान्यता प्राप्त है।

क्या है पंचकर्म

पंचकर्म अर्थात पांच कर्म। यह आयुर्वेद की विशिष्ट चिकित्सा पद्धति है। इस पद्धति में शरीर में होने वाले रोगों और उनके कारणों को दूर करने के लिए तीन देशों वात, पित्त, कफ उचित तारतम्य में बनाए रखने के लिए कई प्रक्रियाएं प्रयोग में लाई जाती हैं। इन कई प्रक्रियाओं में पांच कर्म प्रमुख हैं। इसलिए इसे पंचकर्म कहा जाता है। स्वास्थ्य रक्षा हेतु अष्टांग योग व पंचकर्म जैसे ईलाज लोगों को सफलतापूर्वक स्वास्थ्य लाभ दे रहे हैं। एक प्रतिष्ठित अखबार की खबर पर ध्यान दिया जाए तो माइग्रेन, एन्जायटी, डिप्रेशन, अनिद्रा और दिमाग से जुड़ी कई बीमारियों के ईलाज के लिए मलेशियाई डॉक्टर अपने मरीजों को भारतीय आयुर्वेद चिकित्सकों को सौंप देते हैं।

इसके अनुसार जुलाई 2014 से लेकर दिसंबर 2014 तक 969 रिकॉर्ड मरीजों ने केवल उसी स्थान से भारत आकर अपना

ईलाज कराया है जिसमें वीआईपी भी शामिल हैं। भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा के फीडबैक के लिए मलेशिया के एलोपैथी अस्पतालों में पंचकर्म विधा सेंटर खोलने की वकालत वहां की सरकार द्वारा की गई है। मलेशियन सरकार की मदद से कटिबस्ती कमर दर्द, जानुबस्ती घुटनों और ऑर्थराइटिस और ग्रीवा बस्ती अर्थात गर्दन व सर्वाइकल के ईलाज के लिए नई पद्धतियां शुरू की गई है। जिसके लिए भारत सारी दवाइयां और मेडिशनल ऑयल भी मलेशिया भेज रहा है।

केरल, उत्तराखंड और हिमालय के आसपास पंचकर्म, आयुर्वेद और योग व ध्यान के केंद्र मौजूद हैं। केरल के कोवलम, कोट्टयम, कन्नूर, मल्लासपुरम, त्रिसुर जैसे शहरों में कई ऐसे हॉलीडे पैकेज डिजाइन किए जाते हैं जो विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र होता है जैसे हर्बल ऑयल के उपयोग से होने वाला पिजिचिल मसाल, जो पैरालिसिस और नसों से संबंधित रोगों के लिए प्राणदायक है। जो मरीज मधुमेह व मोटापे से पीढ़ित हैं उन्हें अभ्यागम ट्रीटमेंट दिया जाता है। उसी तरह नाश्याम, स्नेहपनम और खिजहीं जैसे मसाज त्वचा संबंधी रोगों, लेकिमिया और स्पोर्टस इंजरी के लिए लाभदायक है। वहीं उत्तराखंड में हमें विशाल और साफ आकाश, उन्मुक्त हवाएं ही आधे से अधिक स्वास्थ्य लाभ दे देती हैं। उत्तराखंड योग, ध्यान के लिए जाना जाता है। यहां कई योग केंद्र, आश्रम सेंटर हैं जो स्वास्थ्य लाभ लेने आए विदेशी पर्यटकों को लुभाता है। कई विदेशी पर्यटक यहां योग सीखने भी आते हैं।

चुनौतियां और भी हैं

हमारे देश के स्वास्थ्य पर्यटन के फलने-फूलने ने पूरे विश्व के देशों को सोचने पर मजबूर कर दिया है कि उन्हें भी अपने देश में स्वास्थ्य संबंधी बेहतर व सस्ती सेवाएं दिया जाना चाहिए। विभिन्न अखबारों के अनुसार हाल ही में अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने वर्जीनिया में एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि अमरीका की प्राथमिकता सस्ता ईलाज होगी ताकि अमरीकी मरीज मैक्सिकों और भारत की ओर ईलाज के लिए कूच न करें। इन सब चुनौतियों ने निपटने के लिए हमें प्रतिस्पर्धा का समतल मैदान और मुक्त अर्थव्यवस्था पर ध्यान देना होगा। पूरे विश्व के ग्लोबल मरीजों को जहां उत्तम मेडिकल सुविधाएं प्राप्त होंगी वह उसी देश का रुख करेगा। इसके लिए भारत में और अधिक उन्नत स्वास्थ्य सेवाएं, टेलिमेडिसीन, विदेशी मरीजों के लिए उत्तम गेस्ट हाउस, सूचना व सुविधा केंद्र, दुभाषियों को अस्पतालों में जगह, अस्पताल सेवाओं का विस्तार, हर देश के नागरिकों के लिए उनकी रुचि के भोजन व स्वास्थ्य बीमा जैसे विभिन्न आयामों पर ध्यान देना होगा।

इसे भी नहीं कर सकते नजरअंदाज

स्वास्थ्य पर्यटन के क्षेत्र में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहे भारत में गरीबों के लिए निजी स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंच के बाहर होती जा रही हैं। यह भी भारत के लिए आने वाले समय में एक समस्या बन सकता है। एक अरब से भी अधिक आबादी वाले हमारे देश में वहीं के नागरिकों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं का महंगा होना और स्तरहीन होना चिंतनीय है। सरकार और निजी क्षेत्रों को आपस में सहयोग कर कोई ऐसा रास्ता निकालना होगा जिससे भारतीय नागरिकों को भी स्वास्थ्य लाभ के लिए परेशानी का सामना न करना पड़े व विदेशी पर्यटकों को भी स्वास्थ्य पर्यटन उचित दामों पर मिल सके। ❑

CHRONICLE IAS ACADEMY
A Civil Services Chronicle Initiative
Both Hindi & English Medium
आईएएस 2016
नवीन बैच
सिविल सेवा परीक्षा
फाउन्डेशन बैच – 2016
प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा
प्रारम्भ 26 मई
सिविल सेवा मुख्य परीक्षा कार्यक्रम 2016
■ सामान्य अध्ययन ■ निबन्ध
वैकल्पिक विषय
■ इतिहास ■ लोक प्रशासन
■ भूगोल ■ समाज शास्त्र
Civil Services CHRONICLE
25yrs of Guiding Success
NORTH CAMPUS (DELHI CENTRE)
2520, Hudson Lane, Vijay Nagar Chowk,
Delhi-9 (Near GTB Metro Station)
Call: 8800495544
SMS: "CAMPUS YE" to 56677
Visit : www.chronicleias.com
YH-20/2015

ग्राम्य पर्यटन के खुलते दरवाजे

गिरीन्द्र नाथ झा

पर्यटन शब्द सुनते ही जेहन में कौंधती हैं हसीन वादियां, ऊंचे पर्वत, अनंत तक फैला समुद्र या फिर आधुनिक संदर्भों में बहुमंजिली अट्टलिकाओं से अटे महानगर। हवाई यात्राएं, रेल की छुक-छुक और भी बहुत कुछ लेकिन पर्यटकों का एक वर्ग ऐसा भी उभरा है जो एकांत तो तलाश रहा है मगर गांवों की कालीन जीवंतता के बीच। कोई गांव को समझने के लिए, कोई शोध के लिए तो कोई जनजागरूकता के लिए और कोई अपनी जड़ें ढूंढ़ने के लिए। बहाने अलग-अलग लेकिन बरबस लोग खिंचे जा रहे हैं गांवों की ओर। इस दशा में ग्रामीण पर्यटन की एक नयी तस्वीर उभरी है जिसे सोशल मीडिया के मजबूत हथियार से खूब प्रचार भी मिल रहा है

हैदराबाद स्थित एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करने वाले राजीव ने जब अपने बच्चों से कहा कि वे उन्हें गर्मी की छुट्टी में बाहर घुमाने ले जाने की योजना बना रहे हैं तो उनके बच्चे काफी खुश हुए। राजीव के परिवार के सदस्यों को लगा कि इस बार सभी शिमला या गोवा घूमने जाएंगे लेकिन राजीव ने इस बार कुछ और ही सोच कर रखा है। राजीव ने ऑनलाइन सर्च करते हुए पाया कि ग्रामीण पर्यटन भी एक अलग तरह की यात्रा है, जिसके बाद ही उसने योजना बनाई कि इस बार वे अपने बच्चों को गांव की सैर कराएंगे। राजीव ने बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों को जब गांव घुमाने की बात कही तो सभी चहक उठे। उनके लिए गांव घूमना एक अलग अनुभव होगा। वहां बच्चे कभी आम तोड़ने के लिए पेड़ पर चढेंगे तो कभी बैलगाड़ी या ट्रैक्टर की सवारी का आनंद लेंगे। ग्राम्य गीतों से सभी रूबरू होंगे।

दरअसल बड़ी-बड़ी इमारतों और दौड़ .भाग भरी जिंदगी में लोग कभी कभी टूट जाते हैं ऐसे में वे कुछ दिनों के लिए महानगरीय भागमभाग से थोड़ा दूर आना चाहते हैं और चैन की सांस लेना चाहते हैं। ऐसे में कई लोगों का ध्यान ग्रामीण पर्यटन की ओर जाता है। ग्राम्य पर्यटन गांव की जिंदगी, कला, संस्कृति, विरासत को समझने का ही एक जरिया है, ऐसी पीढ़ी के लिए जिसका रिश्ता गांव से कभी नहीं रहा है। वैसे यह भी सच है कि छुट्टियों में हम-आप अक्सर ऐसी जगहों को अपना निशाना बनाते हैं जहां हर तरह की सुविधा उपलब्ध हो। जहां पहुंचने पर किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े लेकिन क्या आपने कभी ऐसे पर्यटन के बारे में सुना है जहां सुविधाओं को ताक पर रखकर पर्यटक केवल इसलिए जाना चाहते हैं क्योंकि पर्यटक के भीतर गांव को जानने की इच्छा होती है। दरअसल हम सुदूर देहातों को पर्यटन के लिहाज से विकसित करने की बात कर रहे हैं।

आप ज़रा सोचिए किसी गांव में जाने के लिए पक्की सड़क न हो और न ही सभी टोलों में बिजली की सुविधा हो, फिर भी ऐसे गांव में लोगबाग देश-विदेश से पहुंचने लगे हों तो कुछ तो जरुर होगा। अमरीका, आस्ट्रेलिया और देश के अलग अलग हिस्सों से लोग बिना किसी सुविधा की आशा रखे यदि गांव की ओर आ रहे हैं तो ग्राम्य पर्यटन को नए सिरे से समझने की जरूरत है। सोशल मीडिया एक उपयोगी औजार के रूप में सामने आ रहा है। इसके जरिए भी पर्यटन स्थल विकसित किए जा सकते हैं। इसका एक उदाहरण चनका नाम का एक गांव है। बिहार के पूर्णिया जिले के श्रीनगर प्रखंड में यह गांव आता है। पिछले एक वर्ष से फेसबुक पर इस गांव की तस्वीरों के साथ किसानों की बातें भी खूब हो रही हैं और लोग इन पोस्टों को पसंद भी कर रहे हैं। चनका गांव में अभी तक पक्की सड़क नहीं पहुंची है, बिजली भी हर टोले में नहीं है। इन तमाम विरोधाभासों के बीच यह गांव सोशल मीडिया पर अपना स्थान बना चुका है और इस गांव में अमरीका, आस्ट्रेलिया के अलावा देश के अलग-अलग हिस्सों से लोग आ चुके हैं।

इसी तरह यदि कोई पर्यटक दिल्ली से आगरा घूमने आता है और फिर वह आगरा

लेखक ने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद सीएसडीएस-सराय के फेलोशिप प्रोग्राम के तहत प्रवासी इलाकों में टेलीफोन बूथ संस्कृति पर शोध किया है। समाचार एजेंसी आईएएनएस और दैनिक जागरण समाचारपत्र में काम करने के बाद इन दिनों बिहार के पूर्णिया जिला स्थित चनका गांव में नए ढंग से खेती बाड़ी, लेखन और ब्लॉगिंग। लप्रेक श्रृंखला में राजकमल प्रकाशन से किताब शीघ्र आने वाली है। ईमेल: girindranath@gmail.com

झारखंड के 12 गांव बनेंगे ग्रामीण पर्यटन केंद्र

झारखंड की लोकसंस्कृति और यहां के ग्रामीण जीवन से देश-विदेश के पर्यटक रूबरू हो सकें इसके लिए राज्य के 12 गांवों को ग्रामीण पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा। राज्य सरकार ने इस बारे में प्रस्ताव तैयार कर केंद्र सरकार को भेजा है। ये गांव हजारीबाग, गुमला, सरायकेला खरसावां और पश्चिमी सिंहभूम जिलों में हैं।

राज्य में पूर्वी सिंहभूम जिले का आमाडूबी गांव पहले से ही ग्रामीण पर्यटन स्थल के रूप में चर्चित है। अन्य गांवों को भी अब उसी तर्ज पर विकसित किया जाएगा। इन गांवों में पर्यटकों के रहने के लिए टेंट या फिर खपड़ापोश मिप्ती के कॉटेजनुमा घर बनाए जाएंगे। ग्रामीण परिवेश में लकड़ी के ईंधन पर बने आदिवासी भोजन की विशेष व्यवस्था होगी।

यहां आने वाले पर्यटक रात्रि विश्राम के लिए भी रुक सकेंगे। रात में लोकसंगीत के जरिए पर्यटकों का मनोरंजन किया जाएगा। साथ ही स्थानीय हस्तकला पर आधारित सामग्रियों का निर्माण लघु उद्योग के रूप में ग्रामीणों से कराया जाएगा।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए इन गांवों में संग्रहालय, अस्पताल, सामुदायिक भवन, स्कूल और शुद्ध पेयजल का इंतजाम किया जाएगा। गांवों में भ्रमण के लिए बैलगाड़ी भी उपलब्ध कराई जाएगी। इन गांवों तक निकटवर्ती मुख्य शहरों से परिवहन की भी सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

के समीप स्थित गांव में रात गुजारने लगे तो स्थानीय लोगों की आय में तो इजाफा होगा ही साथ ही गांव भी पर्यटन मानचित्र पर उभर कर सामने आ जाएगा। विदेशी पर्यटक दिल्ली से आगरा आदि घूमते हुए समीप के गांवों में ठहरने लगे तो कितना कुछ नया हो सकता है गांवों में। यदि रात्रि विश्राम, आवागमन और शहरी यातायात की उचित व्यवस्था हो तो यही पर्यटक उत्तर प्रदेश के अन्य सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन केंद्रों की तरफ भी मुड़ेंगे। ऐसा देश के हर राज्य में हो सकता है।

ग्रामीण पर्यटन नीति को नए सिरे से समझने और उसकी व्याख्या करने की जरूरत है। हर राज्य में पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व के अनेक ऐसे गांव होते हैं जो उपेक्षित पड़े हैं। कला और संस्कृति की दृष्टि से महत्वपूर्ण केंद्र भी इसी तरह उपेक्षित हैं। इसके एक नहीं, अनेक उदाहरण हैं। इन्हें संवारकर पर्यटन के साथ स्थानीय आजीविका से भी जोड़ा जा सकता है।

पर्यावरण जागरूकता हेतु साईकिल यात्रा

अमरीकी नागरिक डेविड क्रूडस्मा और उनकी पत्नी लिंडसे फेनसन साइकिल से पूर्णिया पहुंचे थे। उनकी साइकिल यात्रा का उदेश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरुक करना था। ये दोनों पर्यावरण में हो रहे बदलावों को लेकर बेहद चिंतित नजर आए और उनकी इच्छा है कि लोगों को ग्लोबल वार्मिंग के प्रति जागरुक किया जाए। अमरीकी दंपति किसानों के साथ एक दिन गुजारा और उनसे जहां किसानी को लेकर बात की वहीं उनकी समस्यायों से भी रुबरु हुए। इसके अलावा उन्होंने किसानों को बताया कि कैसे वे जैविक विधि से खेती करके अधिक से अधिक मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं।

डेविड और लिंडसे दुनिया के अलग-अलग हिस्सों के किसानों के साथ वक्त गुजारते रहे हैं। यह अमरीकी दंपति किसानों और उनकी समस्याओं को लेकर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म भी बना रही है। अबतक साइकिल से 60 हजार किलोमीटर की यात्रा कर चुकी लिंडसे और डेविड की जोड़ी ने कहा कि वे भारत के किसानों की खूबियों से परिचित हैं लेकिन वे जमीनी स्तर पर उनकी समस्यायों को जानना चाहते हैं।

डेविड ने बताया कि उन्होंने अपनी साइकिल यात्रा का नाम-राइड फॉर क्लाइमेट रखा है। स्टेंडफोर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ाई कर चुके डेविड का मानना है कि लोगों को खुद के स्वास्थ्य के लिए भी साइकिल चलानी चाहिए। उन्होंने कहा कि जब वे चीन और नेपाल होते हुए बिहार की सीमा में प्रवेश कर रहे थे तब उन्हें यह उम्मीद नहीं थी कि यहां के लोग मेहमानों को भगवान मानते हैं।

चनका के बारे में उन्हें फेसबुक से पता चला। कुछ भारतीय मित्रों ने उन्हें बताया कि बिहार में नेपाल होते यदि आप प्रवेश करते हैं तो पूर्णिया में रुका जा सकता है। फिर वे पूर्णिया के रास्ते चनका पहुंचे। पर्यटन को हम इस नजर से भी देख सकते हैं।

रेणु की खोज में

ऑस्ट्रेलिया के ला ट्रोबे विश्वविद्यालय के शिक्षक इयान वुलफोर्ड भी यहां आ चुके हैं। अमर कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु की कृतियों पर शोध कर रहे इयान के लिए भी चनका एक ऐसा पर्यटन स्थल है, जहां उनके शोध कार्यक्रमों से संबंधित काम आसानी और शांति से पूरा हो सकता है। दरअसल कई लोग जिनका रुझान शोध की ओर होता है, वे ऐसी जगहों की तलाश में रहते हैं जहां बिना किसी व्यवधान के लिखा-पढ़ा जा सकता हो। ऐसे में सुदूर देहात या फिर पहाड़ों का रुख करते हैं। हम इसे पर्यटन के तौर पर देख सकते हैं।

दिल्ली से चनका वाया बुलेट

नौकरीपेशा जिंदगी में बहुत कम लोग समाज के लिए समय निकाल पाते हैं, लेकिन पत्रकार जे. सुशील और कलाकार मीनाक्षी की जोड़ी अपने हिस्से की छुट्टियां देश के अलग अलग हिस्सों की बुलेट से यात्रा कर गुजार रही है। वह भी ऐसी यात्रा जिसमें ये दोनों अनजान लोगों के घरों में मेहमान की तरह प्रवेश कर उन्हें रंग से इतना करीब कर देते हैं कि घर वाले भी रंगने बैठ जाते हैं। इन दोनों ने यहां गांव के संथालों के साथ पेंटिंग की। यहां उन्हें काफी कुछ नया सीखने को मिला। मीनाक्षी ने बताया कि दिल्ली से जब वे यात्रा के लिए निकले थे, तभी उन्होंने चनका गांव आने की योजना बना ली थी और आदिवासियों के संग समय गुजार उनकी ग्रामीण कला को देखने की ललक थी।

उन्होंने कहा कि उनकी पेंटिंग से काफी कुछ सीखा जा सकता है। उन्होंने बताया कि बिहार के बाद वे झारंखड में आदिवासियों के कला से रूबरू होंगे। संथाल टोले में मीनाक्षी ने फेवरिक रंग नहीं, बल्कि देसी रंगों का प्रयोग किया। यहां इनका ब्रश भी देसी था। पटसन और लकड़ी के पतले टुकड़े की मदद से ब्रश बनाया गया था। मिट्टी के घरों को रंगने के बाद मीनाक्षी ने कहा कि संथालों के साथ पेंटिंग करना पढ़ाई करने जैसा है, इन लोगों से काफी कुछ नया सीखने को मिला।

उम्मीद की किरण

भारत के ऐसे कई गांवों को आधुनिक गांव बनाने की जरूरत है ताकि प्रधानमंत्री के 'डिजिटल इंडिया' नारे को गांव तक पहुंचाया जा सके। गांव में विकास की किरणें पहुंचने में भले ही देर हो, लेकिन तब तक इस सोशल मीडिया के सहारे ऐसे गांवों को लोकप्रिय तो बनाया ही जा सकता है साथ ही उसे पर्यटन के मानचित्र पर भी सलीके से उकेरा जा सकता है। इसके लिए हम व्यक्तिगत स्तर पर पहल कर सकते हैं।

दरअसल ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकारों को आगे आना होगा। यदि इस पर गंभीरता से काम होता है तो निश्चिय ही भविष्य में उत्साहवर्धक परिणाम आएंगे। सांस्कृतिक विरासत को खुद में समेटे गांवों में ढांचागत सुविधाएं बढ़ाकर उन्हें स्थानीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। ऐसे गांवों में आधारभूत सुविधाओं के साथ सौंदर्यीकरण के लिए सरकार को पैसे खर्च करने होंगे। सड़कों, नालियों और रोड लाइट आदि की व्यवस्था पर खर्च करने की जरूरत है। उन गांवों पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है, जहां कारीगरी का काम होता है। मसलन दस्तकारी के लिए मशहूर गांवों में प्रदर्शनी कक्ष बनाने, कलाकारों के लिए मंच तैयार करने जैसे बुनियादी काम शुरू करने की जरूरत है ताकि ग्राम्य पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके।

विडंबना है कि जब भी पर्यटन की चर्चा चलती है तब अंतरराष्ट्रीय पर्यटन या फिर देश के प्रमुख स्थलों पर ही ज्यादा जोर दिया जाता है, जबकि ज्यादा संभावनाओं वाले देशी और स्थानीय पर्यटन की उपेक्षा होती रहती है। इसीलिए यह बदलते वक्त की जरूरत है कि अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के साथ ही देशी और स्थानीय पर्यटन का भी विकास किया जाए। इसके पीछे तर्क यह दिया जा सकता है कि यदि देशी और स्थानीय पर्यटन केंद्र विकसित होंगे तो पर्यटक ज्यादा समय गांवों में बिताएंगे और इससे जहां गांव का विकास होगा वहीं ग्रामीण लोगों की आय में भी वृद्धि होगी।

ग्रामीण पर्यटन योजना

कृषि पर्यटन को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति पीली सरसों के खेतों में घूम-फिर सकता है, ट्रैक्टर पर घूम सकता है, मवेशियों को चराने के लिए ले जा सकता है या उन्हें खाना खिला सकता है, हरे भरे खेतों में मक्के की रोटी और साग के साथ छांछ का लुत्फ उठा सकता है, लोकनृत्यों का आनंद ले सकता है। साथ स्थानीय शिल्प को बनते हुए देखने के अलावा ग्रामीण समुदाय और पंचायत से मिल सकता है। पर्यटक कुश्ती, गिल्ली-डंडा, पतंगबाजी जैसे स्थानीय खेलों में भाग ले सकते हैं या उन्हें देख सकते हैं। बच्चे घास पर उछलकूद करने के साथ-साथ ट्यूबवेल में नहा सकते हैं।

ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने की रणनीति एक गांव को विकसित करने की बजाय गांवों के समूहों को अलग-अलग चरणों में विकसित किया जा सकता है। शिल्प बाज़ार या हाट लगाकर स्थानीय उत्पादों की मार्केटिंग की जा सकती है। टूर ऑपरेटर ऐसे सस्ते और व्यावहारिक यात्रा पर बड़ी संख्या में पर्यटन के इलाकों में ले जा सकते हैं जहां उनके लिए जीवन शैली, स्थानीय कला और शिल्पियों/कलाकारों और ललित कला सहित विविधता से भरे शॉपिंग के अवसर उपलब्ध हों। ❑

लगातार बढ़ता धार्मिक पर्यटन

रत्ना श्रीवास्तव

धार्मिक पर्यटन की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार भी खासी गंभीर लगती है। सरकार ने हाल ही में संरचना, सुविधाओं, फंड आवश्यकता और बिजनेस मॉडल पर ध्यान देने के लिए सलाहकारों की सेवाएं ली हैं। बारहवीं पंचवर्षीय योजना में सरकार धार्मिक पर्यटन केंद्रों के विकास पर करीब 9450 करोड़ रुपये खर्च करेगी। उम्मीद जाहिर की जा रही है कि प्राइवेट प्रोजेक्ट्स भी इस विकास में शामिल होकर करीब 28 हजार करोड़ रुपये लगाएंगे। जैसे जैसे इन धार्मिक स्थलों की तस्वीर और सुविधाएं और बदलेंगी, देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों की संख्या भी बढ़ेगी

भारत धार्मिक स्थानों का देश है। प्राचीन समय से ही भारत में तीर्थाटन यानि धार्मिक पर्यटन की परंपरा रही है। प्राचीन भारत में लोग पैदल या अन्य साधनों से सैकड़ों किलोमीटर की यात्राएं करके तीर्थाटन करते थे। अब परिवहन के नए साधनों ने धार्मिक पर्यटन को ज्यादा व्यापक और लोकप्रिय बना दिया। देश में हर साल पर्यटन से होने वाली कुल आय का 50 फीसदी राजस्व धार्मिक पर्यटन से ही आता है। केवल भारत ही नहीं बल्कि दुनियाभर में धार्मिक पर्यटन सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। समय के साथ इसमें और बढ़ोतरी हो रही है।

भारत को दुनिया में सबसे ज्यादा धार्मिक स्थानों का देश कहा जाता है। एक अनुमान के अनुसार देशभर में पांच हजार से ज्यादा छोटे-बड़े महत्व के धार्मिक स्थान हैं। चूंकि भारत दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में एक है, इसलिए हजारों वर्षों में यहां धार्मिक सरोकारों के तत्वाधान में ही कला, संस्कृति, परंपरा, स्थापत्य और शिल्पकला का भी खूब विकास हुआ। यानि भारत के असली सांस्कृतिक और प्राचीन विकास और योजनाशीलता को देखना है तो देश के धार्मिक स्थलों की सैर जरूर करनी चाहिए, ये इतिहास, संस्कृत और परंपराओं के प्रति एक नई समझबूझ भी पैदा करते हैं। चूंकि उत्तर भारत और दक्षिण भारत की संस्कृतियों में अंतर रहा और दोनों क्षेत्रों का विकास अलग ढ़ंग से हुआ, लिहाजा ये पहलू भी इन इलाकों के धार्मिक स्थलों की यात्रा करते हुए देखा जा सकता है। दक्षिण भारत के धार्मिक स्थान, मंदिर विशाल परिसर और गजब का स्थापत्य लिए हुए हैं, तो उत्तर के तीर्थों का विकास आमतौर पर पवित्र नदियों के किनारे हुआ। भारत ने दुनियाभर के सभी धर्मों को आकर्षित किया, खुद कई बड़े धर्मों की जननी रहा। सर्वधर्म समभाव के तहत हजारों सालों में यहां हिंदू, बौद्ध, जैन, सिख जैसे देशज धर्मों के साथ इस्लाम, ईसाई, पारसी और यहूदी धर्म का भी प्रचार प्रसार हुआ। इसलिए तकरीबन सभी धर्मों के पवित्र स्थान इस देश में चारों ओर मिल जाते हैं।

धार्मिक पर्यटन अगर लोगों के विश्वास और आस्था से जुड़ता है तो आध्यात्मिकता से भी जोड़ता है। भारतीय संस्कृति और धर्म की विविधता देखने की चाहत में बड़े पैमाने पर विदेशी भी यहां खींचे चले आते हैं। आमतौर पर यहां के धार्मिक स्थलों पर आना उनके लिए नया अनुभव होता है। धार्मिक पर्यटन का एक पहलू अगर धार्मिक और आध्यात्मिक सरोकार हैं तो दूसरा पहलू धार्मिक स्थलों का आर्थिक और सामाजिक विकास भी। कई स्थानों की आर्थिक संरचना तो विशुद्ध तौर पर धार्मिक पर्यटन पर ही आधारित होती है। अगर धार्मिक स्थलों को सुनियोजित विकास और सुविधाओं से जोड़ा जाए तो देश का धार्मिक पर्यटन एक बड़ी इंडस्ट्री में भी तब्दील होने की अकूत संभावनाएं रखता है। भारत जैसे देश में धार्मिक पर्यटन संगठित और असंगठित दोनों रूपों में है, यही सबसे बड़ी चुनौती भी है।

अच्छी बात ये है कि देश और राज्यों की सरकारें अब गंभीरता से धार्मिक पर्यटन को व्यवस्थित रूप देने के बारे में सोचने लगी हैं। पर्यटन मंत्रालय ने इसके लिए चरणबद्ध विकास योजना तैयार की है। वरीयता के आधार पर 53 धार्मिक स्थानों को पहले फेज में विकसित किया जाएगा। फिर अगले फेस में 89 जगहों पर काम होगा। ये क्रम लगातार चलता रहेगा। इसी के मद्देनजर देश को सात नए टूरिज्म सर्किट में भी बांटकर प्रचार-प्रसार शुरू किया गया है।

एक जमाना था जब शंकराचार्य ने सनातन हिंदू धर्म को जागृत करने के लिए देशभर में यात्राएं कीं। देश के चार सुदूर कोनों बद्रीनाथ, कांचीपुरम, द्वारिकापुरी और जगन्नाथपुरी में मठ स्थापित करके देश को सांस्कृतिक और धार्मिक ताने-बाने में बांधने की कोशिश की। उनका मकसद ये भी था कि जब

रत्ना श्रीवास्तव स्वतंत्र लेखिका हैं। पर्यटन, करियर, पारिवारिक-सामाजिक व्यवहार आदि से संबंधित फीचर उनके पसंदीदा विषय हैं। प्रमुख दैनिकों में आलेख प्रकाशित। ईमेल: ratna.srivastava74@gmail.com

देशवासी सभी मठों के दर्शन करने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाएंगे तो वह अपने साथ देश के एक छोर की संस्कृति और सरोकारों का सेतु भी बनाएंगे। यही विश्वास 12 ज्योर्तिलिंगों के तीर्थाटन भी पीछे भी था। अगर व्यापक संदर्भों में देखें तो इन पवित्र स्थलों की यात्राओं में धार्मिक महत्व के साथ दूसरे अहम पहलू भी जुड़े हुए थे। चूंकि भारत की सभ्यता बहुत प्राचीन है, लिहाजा हम अपनी धार्मिक स्थल और पवित्र नदियों से उतने ही गहरे ढ़ंग से जुड़े भी हैं।

धार्मिक पर्यटन के विवरण वैदिक काल से ही मिलते हैं। हमारे वेदों, ग्रंथों और पुराणों में इनका वर्णन है। महाभारत (350 ईसापूर्व) में भी इसके उल्लेख मिलते हैं। उस समय भारतीय प्रायद्वीप में करीब 300 मुख्य धार्मिक स्थल का उल्लेख हुआ था लेकिन बाद में समय बढ़ने के साथ संख्या में भी बढ़ोतरी होती गई। ये धार्मिक स्थान प्राचीन समय में शिक्षा के प्रचार प्रसार का भी अहम केंद्र थे। इन जगहों पर जाकर लगता है कि हमारे पूर्वज कितने योजनाबद्ध जीवन और पद्धतियों से संबद्ध थे।

शंकराचार्य का मकसद ये भी था कि देशवासी सभी मठों के दर्शन के लिए दूसरी जगह जाएंगे तो अपनी संस्कृति और सरोकारों का सेतु भी बनाएंगे। यही विश्वास 12 ज्योर्तिलिंगों के तीर्थाटन भी पीछे भी था। अगर व्यापक संदर्भों में देखें तो इन पवित्र स्थलों की यात्राओं में धार्मिक महत्व के साथ दूसरे अहम पहलू भी जुड़े हुए थे।

नि:संदेह धार्मिक टूरिज्म के व्यापक पहलू और प्रभाव हैं। फ्रांस में एक छोटा सा कस्बा लोरडेस है-जो रोमन कैथोलिक ईसाइयों का बेहद पवित्र स्थान माना जाता है, ये वर्जिन मेरी से जुड़ा है। इस छोटे से कस्बे में दुनियाभर के कम से कम 140 देशों के 60 लाख से ज्यादा तीर्थयात्री हर साल आते हैं। यहां की पूरी अर्थव्यवस्था धार्मिक पर्यटन से चलती है। चप्पे-चप्पे पर धार्मिक पर्यटन और उससे होने वाली आय का असर है। इसके चलते यहां देश-विदेश और आसपास के शहरों से आकर लोग बस गए।

पोलैंड के एक बेहद छोटे से स्थान चेस्तोवाना की आबादी ढ़ाई लाख है। यहां 45 लाख तीर्थयात्री हर साल आते हैं, यहां की पूरी संरचना और अर्थतंत्र पर धार्मिक पर्यटन की छाप है। भारत भी इससे अलग नहीं है। देश में तमाम ऐसे पवित्र स्थान हैं, जहां की पूरी अर्थव्यवस्था और सामाजिक सरोकारों पर धार्मिक पर्यटन का असर है। तिरूपति की बात करते हैं-वेटिकन के बाद दुनिया का सबसे समृद्ध धार्मिक स्थल। इसे देश की बेहतरीन हैरिटेज सिटी कहा जाता है। यहां का प्रसिद्ध तिरूमाला वेंकटेश्वरा मंदिर पहाडियों पर बसा है। सालभर में 25-30 करोड़ लोग यहां आते हैं। धार्मिक पर्यटन से तिरूपति को अच्छी आमदनी होती है। इसी आय से यहां लोगों को रोजगार में मदद मिलती है। धार्मिक बाज़ार फलता-फूलता है। देशभर में सबसे ज्यादा धार्मिक चढ़ावा तिरूपति मंदिर ट्रस्ट के खाते में जाता है। इसी तरह अगर आप बालाजी जाइए तो महसूस होगा कि बेहतर पयर्टन सुविधाओं के मद्देनजर इसे विकसित किया गया है। ये सब संभव हुआ यहां हर महीने आने वाले करोड़ों के मोटे चढ़ावे और धार्मिक पर्यटन से होने वाली मोटी आय की मदद से। मंदिर को चलाने वाले ट्रस्ट ने पिछले कुछ वर्षों में इस तरह से व्यवस्थाओं का संजाल बिछाया है कि क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक तरक्की के साथ ढ़ेरों कल्याणकारी काम हुए हैं।

शिरडी को ही लीजिए, ये अब भी महाराष्ट्र का एक छोटा सा कस्बा है। धार्मिक पर्यटन ने इस शहर की तस्वीर बदल दी है। शिरडी ट्रस्ट के पास हर महीने करोड़ों का चढ़ावा आता है, जो यहां के विकास से लेकर रोजगार या अन्य कल्याणकारी कामों पर खर्च होता है। कुछ साल पहले इस शहर में मुश्किल तीन चार होटल भी नहीं थे न वैसी व्यवस्थाएं लेकिन दस सालों में सबकुछ बदल गया। पूरे शिरडी की अर्थव्यवस्था धार्मिक पर्यटन पर चलती है।

आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद से करीब 225 किलोमीटर दूर नाल्लामाला पहाडियों के बीच बसे छोटे से पहाड़ी स्थान श्रीशैलम की विशेषता यहां स्थापित सबसे प्राचीन मल्लिकार्जुन ज्योर्तिलिंग है। इस छोटे से कस्बे को मंदिर ट्रस्ट संचालित करता है, सारी व्यवस्थाओं पर ट्रस्ट का नियंत्रण है-होटल, अस्पताल, बिजलीघर, दुकानें, सडक, घर और मंदिर से जुड़े सारे पहलू। करीब तीन हजार लोग इस ट्रस्ट के कर्मचारी हैं। हर महीने इस शहर को करोड़ों की आय होती है। ये छोटा सा धार्मिक शहर काफी सुनियोजित लगता है।

उत्तराखंड में हिमाचल की एकदम तलहटी में बसे बद्रीनाथ तक जाना अब भी आसान नहीं। यहां सालभर में करीब तीन महीने बर्फ होती है। पूरा शहर इससे ढ़क जाता है लेकिन बाकी महीनों में ये शहर धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में गुलजार हो जाता है। देश-विदेश से लोग इस दुर्गम धार्मिक स्थान पर भगवान बद्रीविशाल के दर्शनों के लिए पहुंचते हैं। इसी तरह वाराणसी, इलाहाबाद, गोवा, हरिद्वार, अयोध्या, अमरनाथ, रामेश्वरम, मदुरई, उज्जैन, द्वारिका, पुरी जगन्नाथ में हर साल लाखों श्रृद्धालुओं का तांता लगा रहता है, जो कभी नहीं थमता।

जैन तीर्थस्थानों श्रावस्ती, कौशांबी, हस्तिनापुर, पारसनाथ हिल्स, राजगिरी, उदयगिरी, खजुराहो, माउंटआबू में देशभर के तीर्थयात्रियों का सालभर आना जाना लगा रहता है। वैसी ही भीड़ मुस्लिम धार्मिक स्थानों जैसे अजमेर, निजामुद्दीन, फरीदकोट, पानीपत, आगरा, बीजापुर, औरंगाबाद और कश्मीर में दिखती है। सिख धर्म की सबसे पवित्र स्थान अमृतसर, तनरतारन, करतारपुर और हेमकुंट साहिब श्रद्धालुओं से गुलजार रहते हैं। सारनाथ, बोधगया आदि जगहों पर विदेशों से बड़ी संख्या में पर्यटन आते हैं।

अगर मुस्लिम धार्मिक स्थलों के सर्किट की बात की जाए तो सरकार इन्हें भी विकसित करने पर खास ध्यान दे रही है। श्रीनगर में हजरत बल दरगाह करीब चार सौ साल पुरानी है। सफेद संगमरमर के पत्थरों से बनी बेहद दर्शनीय और इस पवित्र दरगाह पर पूरे देश से जायरीन आते हैं। ये डल झील के एक किनारे पर है। श्रीनगर की अर्थव्यवस्था में अगर पर्यटन खास भूमिका अदा करता है तो देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए ये दरगाह खास आकर्षण का केंद्र होती है। यहां से 40 किलोमीटर दूर एक और सूफी संत हजरत शेख नूर उद्दीन वाली की दरगाह है, जिसे चरार ए शरीफ के रूप में जानते हैं। ये बहुत प्राचीन दरगाह है, करीब छह सौ वर्षों से इसे संरक्षित करके रखा गया है।

राजस्थान के ऐतिहासिक और प्राचीन शहर

फ्रांस में एक छोटा सा कस्बा लोरडेस है-जो रोमन कैथोलिक ईसाइयों का बेहद पवित्र स्थान माना जाता है, ये वर्जिन मेरी से जुड़ा है। इस छोटे से कस्बे में दुनियाभर के कम से कम 140 देशों के 60 लाख से ज्यादा तीर्थयात्री हर साल आते हैं। यहां की पूरी अर्थव्यवस्था धार्मिक पर्यटन से चलती है।

अजमेर में सूफी संत गरीब नवाज ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है। ख्वाजा अफगानिस्तान में 12वीं सदी में पैदा हुए और पर्सिया से यहां आए फिर ताजिंदगी यहीं के होकर रह गए। इस दरगाह की मान्यता इतनी ज्यादा है कि यहां देश ही नहीं विदेशों से भी बड़े पैमाने पर लोग आते हैं। सालभर में यहां आने वालों की संख्या करोड़ों में है। यहां हर वर्ग और हर धर्म के लोग आते हैं। अजमेर की इस प्रसिद्ध दरगाह की देखरेख और संभालना का जिम्मा सरकार द्वारा बनाई गई एक कमेटी करती है, जो दरगाह से जुडी सुविधाओं और चढ़ावा के प्रति जिम्मेदार है। दरगाह में आने वाले करोड़ों श्रद्धालु अजमेर की अर्थव्यवस्था में भी प्रमुख योगदान देते हैं। होटल इंडस्ट्री के साथ ट्रैवल इंडस्ट्री के साथ धार्मिक सामानों का एक पूरा बाज़ार इसके साथ विकसित हुआ है। लोगों को इससे बड़े पैमाने पर रोजगार भी मिलता है। चूंकि अजमेर के पास ही पुष्कर भी है, लिहाजा बड़े पैमाने पर इन स्थानों पर विदेशी पर्यटक आते हैं।

नई दिल्ली की हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह को भी खासा पवित्र माना जाता है। हुमायूं

मकबरे के पास ही मुस्लिम सूफी संत निजामुद्दीन चिश्ती की दरगाह स्थित है। दूर-दूर से लोग यहां आते हैं। इसी दरगाह के पास कई और प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक मौजूद हैं। इस सर्किट का एक प्रसिद्ध स्थान फतेहपुर सीकरी में है। ये सूफी संत सलीम चिश्ती की दरगाह है। हजारों लोग रोज यहां अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए यहां धागा बांधते हैं। वैसे फतेहपुर सिकरी की ये दरगाह मुगल स्थापत्य कला का नायाब उदाहरण भी है।

मुंबई के हाजी अली को भी कैसे भूला जा सकता है। ये मस्जिद मुस्लिम संत हाजी अली की याद समुद्र के बीच में बनवाई गई थी। यहां भी बहुत बड़े पैमाने पर लोग रोज आते हैं।

भारत में ईसाई धर्म अंग्रेजों के साथ यहां फला-फूला लेकिन माना जाता है कि ईसा उपरांत 52वीं ईसवी में जब संत थामस मालाबार की खाडी में आए तभी से भारत में ईसाई धर्म की शुरुआत मानी जाती है। उन्हें मद्रास (अब चेन्नई) में दफनाया गया, जहां सेंट थोम कैथेड्रल है। इसे बहुत पवित्र माना जाता है। देश और विदेशों से भी ईसाई सैलानी यहां आते हैं।

16वीं शताब्दी में पुर्तगाल से सेंट जेवियर गोवा आए, जिनके पार्थिव शरीर के अवशेष अब भी गोवा के बैसलिका ऑफ बोम जीसस चर्च में रखे हैं। ये स्थान यूनेस्को के वर्ल्ड हैरिटेज सूची में भी है। 18वीं सदी में बने इस चर्च की भी बाह्य और आंतरिक स्थापत्य कला देखते ही बनती है। वैसे तो गोवा में कई चर्च हैं, जो पवित्र भी हैं और दर्शनीय भी। इसी तरह दक्षिण भारत में सेंट कैथेड्रल चर्चों का संजाल फैला हुआ है, जो अपने स्थापत्य, निर्माण और डिजाइन के कारण बेहद खास हैं, इनके आर्किटैक्ट पर यूरोपीय और ब्रिटिश स्थापत्य शैली का मिलाजुला असर है।

मुस्लिम धार्मिक स्थलों के सर्किट की बात की जाए तो सरकार इन्हें भी विकसित करने पर खास ध्यान दे रही है। श्रीनगर में हजरत बल दरगाह, अजमेर में ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह, नई दिल्ली में हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, फतेहपुर सीकरी में संत सलीम चिश्ती की दरगाह, मुंबई का हाजी अली दरगाह आदि इस सर्किट में प्रमुख केंद्र हो सकते हैं।

वर्ष 2009 के आंकड़ों के अनुसार धार्मिक पर्यटन सकल भारतीय पर्यटन में 44.5 फीसदी का योगदान देता है। उत्तर पूर्वी एशिया में धार्मिक पर्यटन ने हाल के बरसों में 21 फीसदी यानि करीब 90 लाख लोगों को रोजगार दिया है। भारत में कुल रोजगार का 6.1 फीसदी रोजगार धार्मिक पर्यटन क्षेत्र में सृजित होता है। चीन के आंकड़े बताते हैं कि वहां हर दस में एक शख्स धार्मिक पर्यटन से जुड़ा है। वर्ष 2009 के आंकड़ों के अनुसार भारत में कुल धार्मिक पर्यटन में करीब 24 फीसदी हिस्सा विदेशी सैलानियों का होता है। हाल के बरसों में ये संख्या निश्चित रूप से और बढ़ी होगी। धार्मिक पर्यटन ने वाकई पिछले कुछ बरसों में कुछ छोटे इलाकों की तस्वीर पूरी तरह बदल दी है। केरल के सबरी माला की यात्रा पूरे केरल को लाभांवित करती है। धार्मिक पर्यटन अगर एक ओर पर्यटन को बढ़ावा दे रहे हैं तो बाज़ार को भी फलने फूलने में पूरा योगदान देते हैं और इस सबका मतलब होता है पूरे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक असर। विश्वभर में धार्मिक यात्राएं सबसे ज्यादा और तेजी से बढ़ती हुई इंडस्ट्री है-अंदाज के अनुसार ये अब 18 बिलियन डालर से ज्यादा इंडस्ट्री का रूप ले चुकी है।

धार्मिक पर्यटन की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार भी खासी गंभीर लगती है। सरकार ने हाल ही में संरचना, सुविधाओं, फंड आवश्यकता और बिजनेस मॉडल पर ध्यान देने के लिए सलाहकारों की सेवाएं ली हैं। बारहवीं पंचवर्षीय योजना में सरकार धार्मिक पर्यटन केंद्रों के विकास पर करीब 9450 करोड़ रुपये खर्च करेगी। उम्मीद जाहिर की जा रही है कि प्राइवेट प्रोजेक्ट्स भी इस विकास में शामिल होकर करीब 28 हजार करोड़ रुपये लगाएंगे। जैसे जैसे इन धार्मिक स्थलों की तस्वीर और सुविधाएं और बदलेंगी, देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों की संख्या भी बढ़ेगी। हमारे जीवन में जितना महत्वपूर्ण धर्म है, शायद उतना ही अहम तीर्थाटन भी। ❑

IAS जागृति IAS PCS

in association with

SCHOOL OF GEOGRAPHY

भूगोल की सरल समझ हेतु

भूगोल (OPT.)

द्वारा

संजीव शर्मा एवं अनिल केशरी

First Time two stalwarts of Geography under one roof to justify the subject for your success.

बैच प्रारंभ

11th May

प्रथम बैच 9 am

द्वितीय बैच 5.30 pm

BPSC SPECIAL BATCH

12th May, 3 pm

630, IInd Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9

08447254030, 07739078943

YH-21/2015

विकास पथ

डिजिटल इंडिया पहल शुरू

डिजिटल इंडिया पहल वस्तुतः भारत में व्यावसायिक प्रशिक्षण के बाज़ार कार्य में बेहतरी लाने वाला एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है। इसकी शुरुआत हाल ही में की गई है। रोजगार एवं प्रशिक्षण मंत्रालय के महानिदेशालय (डीजीईटी) द्वारा विकसित पोर्टल https//ncvtmis.dget.in सरकारी योजनाओं के प्रदर्शन और क्रियान्वयन की निगरानी में सहायता करेगा।

अपने पहले चरण में, एनसीवीटी-एमआईएस पोर्टल शिल्पकार प्रशिक्षण योजना (सीटीएस) और प्रशिक्षु प्रोत्साहन योजना (एपीवाई) जैसी मुख्य योजनाओं के लिए ई-प्रशासन प्रणाली उपलब्ध कराएगा। शिल्पकार व्यापार योजना, प्रशिक्षु योजना और शिल्पकार प्रशिक्षक प्रशिक्षण योजना, उनकी संबद्धता का विवरण, उपलब्ध सीटों और उनके उपयोग के आंकड़े की संख्या के लिए देश में विभिन्न संस्थाओं के विवरण पर सर्वसाधारण को यह पोर्टल सूचनाएं उपलब्ध कराएगा। सार्वजनिक क्षेत्र में खोज के लिए 11000 से ज्यादा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) के साथ-साथ उनके संबद्ध विवरण उपलब्ध हैं। पोर्टल में करीब 10 लाख सीटीएस उम्मीदवारों के आंकड़े, जिन्होंने 14 अगस्त से शुरू होने वाले सत्र के दौरान देशभर में फैले इन आईटीआई में नामांकन लिया, उन सबके विवरण अब इस पोर्टल पर उपलब्ध हैं। प्रशिक्षु अब खुद ही पोर्टल से हॉल टिकट, अंक पत्र और ई-प्रमाण पत्र का प्रिंट ले सकते हैं। इससे इन दस्तावेजों के जारी करने में होने वाले परेशानी से मुक्ति मिलेगी तथा इन दस्तावेजों की उपलब्धता में लगने वाले समय को भी काफी हद तक कम किया जा सकेगा।

नियोक्ता भी पोर्टल का उपयोग करते हुए सीधे इन ई-प्रमाण पत्र को मान्य करने में सक्षम होंगे। कागज आधारित प्रमाण पत्र जमा करने वाले 20 लाख से अधिक प्रमाणित प्रशिक्षुओं को भी ऑनलाइन सत्यापित किया जा सकेगा। ठीक इसी तरह, पोर्टल एपीवाई के अंतर्गत, योजनाओं की संपूर्ण व्यापार प्रक्रियाओं का संकलन करता है तथा प्रतिष्ठानों, निवेदन तथा दावों की स्वीकृति तथा प्रतिष्ठानों के भुगतान के लिए निबंधन का अनुमोदन करता है तथा बाद में प्रशिक्षुओं को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप से संसाधित किया जा रहा है।

उपयोगकर्ता की नियमावली, लगातार पूछे जाने वाले सवाल एवं प्रशिक्षण सत्रों के साथ-साथ सभी संस्थानों में पोर्टल के चलने के दौरान आईटीआई की सहायता के लिए एक हेल्पडेस्क का भी प्रावधान किया गया है।

प्रशिक्षण, रोजगार तथा मंत्रालय के प्रशिक्षु सेवाओं की आपूर्ति में दृश्यता उपलब्ध कराने के लिए इस पोर्टल को डिजाइन किया गया है, बेहतर बाज़ार सूचना एवं उसकी वकालत के जरिए इन सेवाओं के लिए मांग उत्प्रेरण में मदद मिलती है एवं ऑनलाइन व्यापार कार्य करने वाले विभिन्न हितधारकों की सहायता के लिए एक स्वयंसेवा इंटरनेट पोर्टल भी उपलब्ध कराता है। विभिन्न सत्र एवं अलग-अलग आकार के 134 विभिन्न ट्रेड्स वाले देशभर में फैले 11000 से भी ज्यादा आईटीआई संस्थान एवं इन आईटीआई में प्रतिवर्ष नामांकन लेने वाले 10 लाख छात्र हैं। सही बात तो यह है कि एमआईएस (प्रबंधन सूचना प्रणाली) के बिना डीजीईटी के लिए नीति निर्धारण तथा संबद्धता का पालन करना और समय पर परिणाम की घोषणा करना असंभव हो गया था।

पोर्टल से यह भी अपेक्षा है कि वो उच्च मानकता वाली पारदर्शिता, निर्णयों के बेहतर विश्लेषण तथा नागरिक सेवाओं तक सुगमता उपलब्ध करा संस्थानों में व्यावसायिक प्रशिक्षण की प्रशासन प्रणाली को उन्नत बनाएगा।

अपने द्वितीय चरण में, यह प्लेटफॉर्म केंद्र द्वारा वित्त पोषित संस्थाओं के लिए मापदंड भी उपलब्ध कराएगा, जो प्रशिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों, प्रशिक्षु सेवाओं का संचालन करता है। विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण के ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में नामांकन प्रक्रिया में लाने के लिए राज्यों की मदद करता है तथा नियोजन और आधार के साथ प्रशिक्षण सेवाओं को एक साथ जोड़ने के लिए डीजीई एवं टी के राष्ट्रीय करियर सेवा (एनसीएस) पोर्टल के साथ समग्रता भी प्रदान करता हैं।

उद्घाटन के दौरान उन प्रत्याशियों के लिए पोर्टल से ई-प्रमाणपत्रों के पहले सेट से ई सर्टिफिकेट दिए गए, जो अतीत में विभिन्न औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) से सफलतापूर्वक अपना प्रशिक्षण पूरा कर चुके थे, लेकिन जिन्हें बड़ी संख्या में लंबित पड़े डेटा ट्रांसमिशन के कारण एनसीवीटी द्वारा प्रमाणन किए जाने का लंबे समय से इंतजार था। पहले ही पास हो चुके प्रशिक्षुओं के लिए पोर्टल के माध्यम से लगभग 1.6 लाख लंबित पड़े ई-सर्टिफिकेट्स जारी किए गए हैं।

प्रगतिः बहुप्रयोजी, नियमोन्मुख बहुविध प्लेटफॉर्म तथा समयबद्ध क्रियान्वयन

प्रधानमंत्री ने हाल ही में इस महत्वाकांक्षी बहुउद्देश्यीय और बहुविध प्लेटफॉर्म प्रगति (बहु प्रयोजन, नियमोन्मुखता के लिए बहुविध प्लेटफॉर्म तथा समयबद्ध कार्यान्वयन) का शुभारंभ किया। **प्रगति** एक अद्भुत समग्र तथा अंतःक्रियात्मक प्लेटफॉर्म है। इस प्लेटफॉर्म का उद्देश्य सर्वसाधारण की परेशानियों का समाधान करना है तथा इसका लक्ष्य राज्य सरकारों द्वारा आयोजित परियोजनाओं के साथ-साथ भारत सरकार के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं की निगरानी एवं उसकी समीक्षा करना भी है।

प्रगति मंच तीन नवीनतम तकनीकों का अद्वितीय पुलिंदा है और ये हैं: डिजिटल डेटा प्रबंधन, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी। यह भारत सरकार के सचिवों एवं राज्यों के मुख्य सचिवों को एक मंच पर लाकर सहकारी संघवाद की दिशा में एक अद्भुत संयोजन बना है। इससे प्रधानमंत्री को केंद्र एवं राज्यों के अधिकारियों से जुड़े मुद्दों पर बातचीत करने के लिए पूरी सूचनाएं और जमीनी सच्चाई पता चलती रहेगी। इससे पहले इस तरह के प्रयास भारत में कभी नहीं हुए हैं। ई-नियमन तथा सुशासन की दिशा में यह एक नई शुरुआत है।

प्रगति के अनुप्रयोग की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित है :

- यह त्रिस्तरीय प्रणाली है। (पीएमओ, केंद्रीय सचिव एवं राज्यों के मुख्य सचिव)
- प्रधानमंत्री एक मासिक कार्यक्रम का आयोजन करेंगे, जिसमें वो आंकड़ों तथा भू-सूचनात्मक दृश्यों द्वारा सक्षम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भारत सरकार के सचिवों एवं मुख्य सचिवों के साथ बातचीत करेंगे।
- इसके तहत पहला कार्यक्रम 25 मार्च 2015 को शाम साढ़े तीन बजे हुआ।
- इस तरह का आयोजन हर महीने के तीसरे बुधवार को शाम 3 बजकर 30 मिनट पर होगा, जिसे **प्रगति दिवस** के रूप में जाना जाएगा।
- प्रधानमंत्री, लोक शिकायत, सक्रिय कार्यक्रमों और लंबित परियोजनाओं के बारे में उपलब्ध डेटाबेस से मुद्दे को उठाएंगे।
- शिकायतों, परियोजना निगरानी समूह (पीएमजी) और सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के लिए सीपीजीआरएएमएस के डेटाबेस को यह प्रणाली आगे बढ़ाएगी, मजबूत करेगी तथा इन सभी पहलुओं के लिए मंच का पुनर्निर्माण करेगी। इन तीनों पहलुओं के लिए **प्रगति** एक मंच उपलब्ध कराता है।
- यह जनपरियोजनाओं को आगे बढ़ाने वालों या/और राज्यों के बेहद सम्मानीय लोगों में से या सर्वसाधारण लोगों द्वारा संवाद प्रधानमंत्री कार्यालय तक पहुंचाएगा
- ध्वजांकित मुद्दे **प्रगति दिवस** (यानी प्रत्येक महीने के तीसरे बुधवार) के सात दिन पहले अपलोड किए जाते हैं।
- अप्लीकेशन में आने के बाद इन मुद्दों को केंद्र सरकार के सचिवों तथा मुख्य सचिवों द्वारा देखा जा सकता है।
- केंद्र सरकार के सचिवों तथा मुख्य सचिवों के लिए यूजर आईडी तथा पासवर्ड बनाए जाते हैं तथा उन्हें उपलब्ध कराए जाते हैं।
- केंद्र सरकार के सचिव तथा मुख्य सचिव अपने संबंधित विभाग/राज्य से जुड़े हुए मुद्दे को देखने में सक्षम होंगे।
- तीन दिनों के भीतर (यानी अगले सोमवार तक) केंद्र सरकार के सचिवों तथा मुख्य सचिवों को ध्वजांकित मुद्दों के बारे में अपनी टिप्पणियों को अपलोड करना होता है।
- केंद्र के सचिवों तथा मुख्य सचिवों के आंकड़ों की समीक्षा प्रधानमंत्री कार्यालय के दल द्वारा की जाती है और इसके लिए एक दिन-मंगलवार उपलब्ध रहता है।
- इसकी रूपरेखा कुछ इस तरह की होती है कि जब प्रधानमंत्री इसकी समीक्षा करते हैं, तो उनकी सुविधा के लिए स्क्रीन पर संबद्ध मुद्दे के नवीनतम आंकड़े, सूचनाएं तथा वीडियो होते हैं।

राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) की सहायता से यह प्रणाली प्रधानमंत्री कार्यालय की टीम द्वारा ही डिजाइन की गई है। जैसा कि नाम से ही पता चलता है, इसका उद्देश्य नियमोन्मुख तथा समय पर क्रियान्वयन की संस्कृति की शुरुआत करना है। प्रमुख हितधारकों के बीच वास्तविक समय की उपस्थिति तथा विनिमय के साथ यह प्रणाली ई-पारदर्शिता तथा ई-जवाबदेही को लाने वाली एक मजबूत प्रणाली है। ❑

पर्यटन विकास: भावी योजनाएं

मुख्य लक्ष्य

- 12वीं पंचवर्षीय योजना (2016-17) के अंत तक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन (FTA) में एक प्रतिशत की हिस्सेदारी प्राप्त करना।
- 12वीं पंचवर्षीय योजना (2016-17) के अंत तक 145 करोड़ घरेलू पर्यटक आगमन का लक्ष्य प्राप्त करना।
- 2012-13 के मुकाबले 12वीं पंचवर्षीय योजना (2016-17) तक 1.05 करोड़ अतिरिक्त रोजगार सृजन।
- नई पर्यटन नीति, 2015 तैयार करना।
- स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजनाओं में क्रमश: थीम आधारित परिपथों (जैसे कि गंगा परिपथ, जनजातीय परिपथ, वन्यजीव परिपथ, मरुस्थल परिपथ इत्यादि) और तीर्थ शहरों को प्रस्तावित किया गया।
- महत्वाकांक्षी 'सागरमाला परियोजना' के भाग के रूप में धार्मिक रुचि के विभिन्न स्थानों को जोड़ने के लिए जगन्नाथ पुरी से द्वारका तक समुद्र के रास्ते 'चार धाम यात्रा' की योजना बनाई जा रही है। इस मार्ग में धार्मिक महत्व के अन्य शहर भी शामिल किए जाएंगे।
- गंगा और ब्रह्मपुत्र में 'रिवर क्रूज' भी शुरू किए जाएंगे।

भावी ई-पहल:

- मुख्य पर्यटक गंतव्यों पर वाई-फाई ई-उपलब्धता।
- सुरक्षा और संरक्षा पर जोर के साथ विदेशी और घरेलू पर्यटकों के लिए बहु भाषी मोबाइल ऐप-1 वर्ष के अंदर।
- तीन वर्षों में अतुल्य भारत वेब पोर्टल की सामग्री को 1700 पृष्ठों से 100,000 तक बढ़ाना।
- 4 अरब लोगों को लक्षित 25 भाषाओं (भारतीय सहित) में वेबसाइट-2 वर्षों के अंदर।
- अतुल्य भारत वेबसाइट पर वर्तमान ट्रैफिक में सुधार लाकर अगले 3 वर्षों में इसे 2 मिलियन से 36 मिलियन करना।

सोशल मीडिया पर उपस्थिति

- जनवरी 2017 तक पीपीपी के द्वारा 10,000 वीडियो क्लिप्स के माध्यम से यूट्यूब पर भारत का प्रचार
- ट्विटर, फेसबुक, ब्लॉग्स, इंस्टाग्राम और पिन्ट्रेस्ट के माध्यम से सोशल मीडिया उपरोक्त समुदाय पर प्रभाव बढ़ाना।

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रकाशक व मुद्रक : डॉ. साधना राउत, अपर महानिदेशक द्वारा प्रकाशन विभाग के लिए ब्रजबासी आर्ट प्रेस लिमिटेड, ई-46/11, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेस-2, नयी दिल्ली-110020 से मुद्रित एवं प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सी.जी.ओ. परिसर, लोधी रोड, नयी दिल्ली-110003 से प्रकाशित। संपादक : जय सिंह

रजि.सं.डीएल (एस)-05/3231/2015-17
Reg.No. D.L.-05/3231/2015-17 at RMS, Delhi
23 अप्रैल, 2015 को प्रकाशित • 29-30 अप्रैल, 2015 को डाक द्वारा जारी

Licenced under U (DN)-55/2015-17
आर.एन.आई. 951/57
R.N.I. 951/57

2016 संस्करण

UPKAR'S

GK BOOKS

Crafted just according to your needs

उपकार की पुस्तकें न केवल तेजी से बदल रहे घटनाक्रम से आपको समयानुसार अवगत कराती हैं, बल्कि आपको सम्बन्धित विषय का समग्र ज्ञान भी उपलब्ध कराती हैं.

खन्ना एवं वर्मा मूल्य : ₹ 65.00

डॉ. आर. सी. जैन एवं डॉ. सूर्यनारायण पाण्डेय मूल्य : ₹ 480.00

सम्पादक मण्डल सामान्य ज्ञान दर्पण मूल्य : ₹ 50.00

खन्ना एवं वर्मा मूल्य : ₹ 40.00

खन्ना एवं वर्मा मूल्य : ₹ 190.00

कुमार सुन्दरम् मूल्य : ₹ 90.00

अन्य उपयोगी पुस्तकें

उपकार कम्पेंडियम जनरल नॉलेज	कोड : 598	मूल्य : ₹ 215.00
उपकार वन वीक जीके	कोड : 2083	मूल्य : ₹ 170.00
उपकार सामान्य ज्ञान डाइजेस्ट	कोड : 193	मूल्य : ₹ 220.00
उपकार भारतीय रेल सामान्य ज्ञान	कोड : 2071	मूल्य : ₹ 60.00

उपकार प्रकाशन (An ISO 9001:2000 Company)
2/11 ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-282 002 फोन : (0562) 4053333, 2530966; फैक्स : (0562) 4053330
• E-mail : care@upkar.in • Website : www.upkar.in
• नई दिल्ली 23251844/66 • हैदराबाद 66753330 • पटना 2673340 • कोलकाता 25551510 • लखनऊ 4109080